6522.

Price Rs. 4/=

16/8/23

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vamsha prakash
PRATAP SINGH MUSEUM
२१५४
NAGAR

श्रीगणेशायनमः

श्रीपरमेश्वरायनमः

प्रकट होकि प्रथम सेंही बहादुरी और प्रजा पालन में राजपूत लोग सब सें बढ़ कर मशहूर हैं उन में भी हाडा जाति के राजपूत बहादुरी वग़ैरह नेक बातों में सब सें ज़ियादा हैं उन में बूंदी के मालिक सब हाडों सें बड़े दर्जे के हैं और हाल में जो बूंदी के महाराव राजा साहब श्रीरामसिंहजी हैं उनके बिराजने सें इस गद्दी ने ऐसी शोभा पाई है कि जिसका बयान नहीं हो सक्ता जो सत्य बोलना दातारी प्रजापालन कदरदानी बहादुरी वग़ैरह उत्तम गुणों के मानों मूर्ति हैं इन्हों नें बहुतसा रुपया खर्च

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किया और अपने बड़ों का हाल दर्याफ़्त करके मिश्रण जाति के चारण कवि सूर्यमल्लजी सें बंशभास्कर नाम ग्रंथ बनवाया उस में सब बातें जो दर्याफ़्त की गईं सो सत्य सत्य लिखी हैं तर्फ़दारी कुछभी नहीं की परन्तु वह ग्रंथ संस्कृत प्राकृत मागधी पैशाची वग़ैरह कई ज़बानों सें बना है और बहुत बड़ा है उस का समझना मुश्किल है इस सें सब के समझने वास्ते बंशभास्कर का ख़ुलासा तैयार करना ज़रूर हुवा इस ख़िदमत के लिये गंगासहाय नाम ब्राह्मण को हुक्म हुवा ।। इस तुच्छ बुद्धि मनुष्य नें हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो के पर्वरिश पाई और कुछ आदमीपना हासिल किया है सो सूर्य्यमल्लजी के पुत्र कवि मुरारिदानजी और कविया जाति के चारन कवि देवीदानजी की सहायता सें बंशभास्कर का संक्षेप सें खुलासा तयार किया इस में भूल चूक होय सो बुद्धिमान् मनुष्य दुरुस्त करदेवें सरकार की तर्फ सें फिरभी बंश

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वली की बातों की तलाश है सो फिर भी पक्का
पता मिलता रहेगा तो उस के अनुसार इस
मेंदुरुस्ती होती जायगी कलियुग के १०००
हज़ार वर्ष के अनुमान बीते उस वक्त बौद्धों
का मत बहुत फैल गया और वेद के मानने
वाले कम रह गये और दैत्य भी बढ़ गये इस
वास्ते वशिष्ठजी ऋषि ने बौद्धों के मत के खं-
डन और दैत्यों के मारने और वेद का मत च-
लाने वास्ते आबूपहाड पर यज्ञ किया उस
यज्ञ के अग्निकुंड में सें चार क्षत्रिय पैदा हुये
पहले प्रतिहारजी १ जिन को पडिहारजी दूसरे
चालुक्यजी २ जिन को सोलंखीजी तीसरे प्रा-
मारजी ३ जिन को पँवारजी चौथे ४ चाहुवा
णजी४ जिन को चौहाणजी भी कहते हैं इस्में
चाहुवाण नाम इस वास्ते हुवा कि ये पैदा हो
तेही चार बाँहें वाले थे इस्सें चतुर्बाहु मान
यह संस्कृत नाम हुवा उसी का संक्षेप सें चाहु
वाण होगया चौहाणजी को चह्वाणजी १
चहुवाणजी २ चुहाणजी ३ चतुर्भुजजी ४

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चंडासिजी ५ और चाहुबाणजी भी कहते हैं
इन में पहले तीन नाम उसी चाहुबाण नाम
सें वर्णे हैं इन चाहुवाणजी १ का वत्सगोत्र
साम वेद कौथुमीशाखा आप्नवान १ यामद-
ग्न्य २ च्यावन ३ भार्गव ४ और्व ५ ये पाँ-
च प्रवर और गोभिल सूत्र है इन नें आशा-
पूरा नाम देवीजी की भक्ति करनें सें जोर पा-
कर धूम्रध्वज १ यंत्रकेतन २ तालहस्त ३
करालास्य ४ कीलजिव्ह ५ हृदोदर ६ रक्त
नेत्र ७ शूलिक ८ और शैलनासिक ९ ये
असुर मारे और वशिष्ठजी वग़ैरह ऋषिलोगों
की सहायता सें दिल्ली में राजपाकर बहुत से
बौद्धों को मार कर वेद के मत को बढ़ाया और
जब इन नें दिल्ली सें मथुरा में आकर यादवों
को जीत के पुष्कर के राजाविजयाश्वजी को जा
घेरा तब उन नें हार कर इन को अपणी बेटी
व्याहदी और भी इन नें कश्मीर वग़ैरह कई
देश जीते और अश्वमेध यज्ञ किया इन के म-
हाराज कुमार सामंतदेवजी २ हुवे उन को

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रचंडजी २ भी कहते हैं चाहुवाणजी १ के
पीछे सामंतदेवजी २ नेराजकिया इन के
महादेवजी ३ हुवे इन को परभंजनजी भी
कहते हैं इन नें मारवाड के राजा देवराजजी
को जीता सामंतदेवजी २ पीछे महादेवजी
३ राजा हुवे ये एकदिन शिकार को गयेथे
वहां विना जाने इन के हाथ सें प्रमतिनाम
ऋषि की गाय मरगई तब ऋषिनें उन को
यह शापदिया कि तुमारा बंश नाश हो जब
महादेवजी ३ नें यह जाना तब उनों नें पै-
रों में गिरकर ऋषि को राज़ी करलिया तब
ऋषिनें यह कहा कि कितनीक पीढीतक
तो १।१ बेटाही होता रहेगा फेर बंश फैले
गा इन के कुवेरजी ४ हुवे इन को देवमहा
जी ४ और महोंत देवजी ४ भी कहते हैं
महादेवजी ३ सें पीछे कुवेरजी ४ राजा हुवे
उन के बिंदुसारजी ५ हुवे उन्हीं को मंत्र स-
हायजी ५ और मंत्रजयजी ५ भी कहते हैं
उन के सुधन्वाजी ६ हुवे उन को उदारहार

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी ६ भी कहते हैं जिस वक्त सोरों नाम
शहर के राजा सोलंखी पृथुजी नें दिल्ली को
बहुत फौज सें घेर लिया तब उस लड़ाई
में बिंदुसारजी ५ मारेगये और सद्योधार-
ण नाम बिंदुसारजी ५ के कामदार नें सुध
न्वाजी ६ को बालक समझकर पृथुजी के
साथ मेल कर लिया जब सुधन्वाजी ६ ज-
वान हुवे तो उन नें अपनें पिता का बदला
लेने वास्ते फौज लेकर पृथुजी के शहर को
जाघेरा उस वक्त पृथुजी यज्ञ में बैठेथे इहां
सें सुधन्वाजी ६ नें लड़ाई करनें वास्ते कह
लाभेजा उस वक्त पृथुजीनें अपनी बेटी
उन को ब्याह के मेल कर लिया सुधन्वाजी
६ के बीरधन्वाजी ७ हुवे इन को अशोक
जी ७ भी कहते हैं। उन के जयधन्वाजी ८
हुवे इन को शंकाविदारजी ८ भी कहते हैं
उन के वीरसिंहजी ९ हुवे इन को विजयजी
९ भी कहते हैं उन के बरसिंहजी १० उन
को मारुतजी १० और सुमेरुजी १० भी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहते हैं उन के वीरदंडजी ११ हुवे उन के
अरिमंत्रजी १२ हुवे इन को जयंतजी भी क
हते हैं उन के माणिक्यराजजी १३ उन को
शूरजी १३ भी कहते हैं उन के पुष्करजी
१४ हुवे उन को विजयपालजी १४ भी कहते हैं
उन के असमंजसजी १५ हुवे उन के प्रेम
पूरजी १६ हुवे उन के भानुराजजी १७ हुवे
उन के मानसिंहजी १८ हुवे उन के हनुमा
नजी १९ हुवे उन को धर्म्मपालजी १९ भी
कहते हैं उन के चित्रसेनजी २० हुवे उन
के शंभुजी २१ हुवे उन के महासेनजी २२
हुवे इन को ऋद्धीशजी २२ भी कहते हैं
उन के सुरथजी २३ हुवे उन के रुद्रदत्तजी
२४ हुवे उन को कर्णपालजी २४ भी कहते
हैं उन के हेमरथजी २५ हुवे उन को रोम
पालजी २५ भी कहते हैं उन के चित्रांगदजी २६
हुवे उन के चंद्रसेनजी २७ हुवे उन को चित्र
रथजी २७ भी कहते हैं उन के बाल्हीकजी
२८ हुवे उन को बत्सराजजी २८ भी कहते हैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन के धृष्टद्युम्नजी २९ हुवे उन को वरुण-
जी २९ भी कहते हैं उन के उत्तमजी ३० हुवे
उन के सुनीकजी ३१ हुवे उन के सुबाहुजी
३२ हुवे ये बहुत सुंदर थे इसें इन को मोहन
जी ३२ भी कहते हैं यहां तक कि बहुत से
राजे लोगों की लडकियों नें पसंद कर के इन
को वरलिया इसें इन के १४५ राणीजी हुई
ये एकदिन शिकार को गये थे वहां मथुरा के
यादव बंशीराजा नें और कुरु बंशीराजा नें द-
गा कर के मारडाला उन के सुरथजी ३३ हुवे
उन के भरतजी ३४ हुवे उन को मदसेनजी
३४ भी कहते हैं उन के सत्यकीजी ३५ हुवे
उन को सत्यकजी ३५ और सात्विकजी ३५
भी कहते हैं उन के शत्रुजितजी ३६ हुवे उ-
न को केसरि देवजी ३६ भी कहते हैं उन के
बिक्रमजी ३७ हुवे उन के सहदेवजी ३८ हु-
वे इन को जीत के कुरु बंश के राजा नें दिल्ली
लेली फिर इनने वहां सें निकल कर अरिघाट
जी नाम अपनें मामाजी की मदद सें सुनाभ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम राजा को मार कर कर्णाट देश लेलिया
वहाँ मिहकावती नाम शहर राजधानी ब-
नाई और गुजरात के राजा की मदद सें पौंड्र
देश जीत लिया उन के बीरदेवजी ३९ हुवे
उन को भीमसेनजी ३९ भी कहते हैं उन के
बसुदेवजी ४० हुवे उन के बासुदेवजी ४१
हुवे उन के रणधीरजी ४२ हुवे उन के शत्रु
घ्नजी ४३ हुवे ये अयोध्या के राजा की मदद
वास्ते गयेथे उस लड़ाई में मारेगये उन के
सुमेरुजी ४४ हुवे उन को शालि वाहनजी
४४ भी कहते हैं उन के कृत बर्म्माजी ४५ हु-
वे उन के सुबर्माजी ४६ हुवे उन के दिव्य ब-
र्म्माजी ४७ हुवे उन के यौवनाश्वजी ४८ हुवे
उन के हर्यश्वजी ४९ हुवे उन के अजपालजी
५० हुवे इन नें बंगाला कामरूप वगैरह कई
देश जीते और रावण १ बिडाल २ विडंब ३
नाम असुर मारे और पुष्कर के पास अजमेर
नाम शहर बसाया इन के १३ बेटे हुवे भटव-
लनजी ५१।१ महासेनजी ५१।२ महाबाहुजी ५१।

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३ भीमसेनजी ५१।४ दृढधन्वाजी ५१।५ अ-
श्वपतिजी ५१।६ नृपतिजी ५१।७ जगत्पति
जी ५१।८ सुकर्म्माजी ५१।९ भगदत्तजी ५१
।१० इंद्रदत्तजी ५१।११ धनेश्वरजी ५१।१२ वि
ष्णुदत्तजी ५१।१३ इनमैं भटदलनजी ५१ सैं
सिवाय १२ बेटे रावण के बेटे जटबक वग़ै-
रह नें बालपनें मेंही मारडाले थे येजटब-
क वग़ैरह असुर रावण के साथ अजयपा-
लजी की लडाई में भागगये थे भटदलनजी
५१ के लोहराजजी ५२।१ निम्मराजजी ५२
२ अनंगराजजी ५२।३ ये तीनहुवे इनमेंसें
पहले दोतो उन रावण के बेटों नेंहीं मारडा-
ले उन दोनों को चाहुवाण बंश के लोग पित
रमानते हैं और छोटे अनंगराजजी ५२
गद्दी पर विराजे उन के इक्कीस २१ महाराज
कुमार हुवे भीमजी ५३।१ धर्मपालजी ५३।
२ धर्मरत्नजी ५३।३ रत्नपालजी ५३।४ रुक्म
रथजी ५३।५ रुक्मेशजी ५३।६ रुक्मकोश-
जी ५३।७ पृथ्वीपालजी ५३।८ रुक्मसेनजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५३।९ हरिभानुजी ५३।१० चंद्रभानुजी ५३।११
भानुजी ५३।१२ जगाद्भानुजी ५३।१३ सोमदत्त
जी ५३।१४ जयचंद्रजी ५३।१५ अन्वयचंद्रजी
५३।१६ देवीचंद्रजी ५३।१७ त्रिलोकचंद्रजी ५३।
१८ अमरचंद्रजी ५३।१९ दीपचंद्रजी ५३।२० ब्र
ह्मदत्तजी ५३।२१ इन में भीमजी ५३ के सिवाय
बीसों को रावण के बेटों ने मारडाला भीमजी के
५३ गोगाजी ५४ हुवे ये बडे शूर बीर थे और
बहुतसी भलाई की बातें इन में थीं इन नें जवा
नी सें पहलेही जटबक वगैरह असुर जो स
दा के दुश्मन थे मारडाले इन के नाना देवजी
के बेटा नहीं था और उन के एक बेटी के बेटे
तो गोगाजी थे दूसरी बेटी गौडभव देवजीराजा
को व्याही थी उन के अर्जुनजी १ सुर्जनजी २ ये दो बेटे
थे इन तीनों दोहतों में बहुत अच्छे मान कर
नानाजी नें अपनाराज जिस की राजधानी भो
जकट नाम शहर था गोगाजी ५४ को ही देदिया
इस बात को सुन के अर्जुनजी १ सुर्जनजी २ के
दिल में दुश्मनी पैदा हुई और गोगाजी ५४ के पास

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाकर नानाजी की दीहुई ज़मीन का आधा हिस्सा चाहा इस पर गोगाजी ने कहा कि नानाजीनें राज मेरेही वास्ते दिया है इस वास्ते जो माँग कर लेते होतो मैं चाहों सारा देदूं और ज़ोर के साथ तो मैं कभी नहीं दूंगा जब इन नें लड़ाई करी तो हार कर बहुत से राजों सें मदद माँगी जब किसी नें मदद नहीं दी तो ईरान के बादशाह अबूफर के पास जाकर मदद माँगी फेर अबूफ़र फ़ौज लेकर चढ़ आया दो २ महीनें तक लड़ाई हुई फिर अबूफ़र भागा गोगाजी नें हरियाणे तक पीछा किया और बादशाह को मार लिया इन गोगाजी ५४ को हीं बहादुरी के सबब सें नागका अवतार मान कर बहुत से लोग अबतक पूजते हैं और जाहिर पीर के नाम सें कई मुसलमान भी मानते हैं उन के शुभकर्णजी ५५ हुवे उन के उदय कर्णजी ५६ हुवे उन के जसकर्णजी ५७ हुवे उन के हरिकर्णजी ५८ हुवे उन के कीर्तीशजी ५९ हुवे उन के बालकृष्णजी ६० हुवे उन के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरिकृष्णजी ६१ हुवे उन के रामकृष्णजी ६२
हुवे उन के बलदेवजी ६३ हुवे उन के हरदेव
जी ६४ हुवे उन के भीमजी ६५ हुवे ये मगा-
ध देश अर्थात् पटना के राजा के साथ लड़ाई
में मारेगये और मगाधदेश के राजा नें इनसें
विदर्भदेश छीन लिया भीमजी ६५ के सहदेव
जी ६६ हुवे उन के रामदेवजी ६७ हुवे उनके
बसुदेवजी ६८ हुवे उन नें कुछ समय पाकर
बिदर्भ देश फिर दाबलिया इस पर मगाधदेश के
राजा के साथ फिर लड़ाई हुई उस में बसुदेवजी
६८ मारेगये उन के श्यामदेवजी ६९ हुवे उ-
न के हरिदासजी ७० हुवे उन के महीधरजी
७१ हुवे उन के वामदेवजी ७२ हुवे वे लाहो-
र के राजा मदसेनजी की मदद के वास्ते गयेथे उ-
सी लडाई में मारेगये उन के श्रीधरजी ७३ हु-
वे उन के गंगाधरजी ७४ हुवे उन के महादे
वजी ७५ हुवे उन्हों नें अश्वमेधयज्ञ करना
चाहा था यज्ञ में जो घोड़ा छोड़ा सो मगाधदेश
के राजा नें पकड़ लिया इस बात पर जो लड़ाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुई उसमें महादेवजी ७५ मारेगये उन के शा
र्ङ्गधरजी ७६ हुवे उन के मानसिंहजी ७७ हुवे
उन के चक्रधरजी ७८ हुवे ब्याहसें थोडे ही दि
न पीछे मगाध देश के राजा के साथ लड़ाई में
मारेगये रणीजी के गर्भ था उन के शत्रुजित
जी ७९ हुवे इन नें बहुत से यज्ञ किये इन के
हलधरजी ८० हुवे उन के महाधरनुजी ८१
हुवे उन के देवदत्तजी ८२ हुवे उन के दामो
दरजी ८३ हुवे उन के काशीनाथजी ८४ हुवे
ये कुंतल देश के राजा श्रीधरजी को मार कर
उन की बेटी को महाराज कुमार लीलाधरजी
८५ के वास्ते लाये फेर लीलाधरजी को राज देकर
आप तप करने वास्ते जंगल को गये लीलाध
रजी ८५ राज करने लगे एक बार उन के साले
मदसेनजी अपने पिता का वैर लेने को इन
पर चढ़ आये इस लड़ाई में लीलाधरजी ८५
और इन के साले मदसेनजी दोनों मारेगये ली
लाधरजी के धरणीधरजी ८६ हुवे उन के रम
णेशजी ८७ हुवे ये जबतक ६० वर्ष के हुवे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तब तक उन के कोई संतान नहीं हुई तब उन्हों नें यह मन्नत करी कि जो मेरे बेटा होतो मैं आबू के अचलेश्वरजी महादेव के आगेशिर चढ़ाऊँ कोई दिनों में इन के भगवद्दासजी ८८ महाराज कुमार हुवे रत्नसेनजी जेभी आबूपरजाकर अचलेश्वरजी के आगे शिर चढ़ा दिया भगवद्दासजी ८८ के कुलदासजी ८९ हुवे भगवद्दासजी ८८ के ऊपर कुंतल देश के राजा नें चढ़ाई करी उस लडाई में भगवद्दासजी ८८ और कुलदासजी ८९ दोनों पिता पुत्र मारे गये कुलदासजी ८९ के शिवदासजी ९० हुवे उन के हरिपूर्णजी ९१ हुवे उन्हों नें कुंतल देशपर चढाई करी उहांही मारे गये हरिपूर्णजी ९१ के देवीदासजी ९२ हुवे इन नें महाराज कुमार कर्मचंद्रजी ९३ को साथलेकर और उन के पुत्र रामदासजी ९४ को राज देकर कुंतल देशपर चढ़ाई करी इस लडाई में हीं दोनों काम आये परन्तु कुंतल देश के राजा दृढ़सेनजी भी मारलिये रामदासजी ९४ के वक्त में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुंतल देश के राजा दृढ़सेनजी के बेटे हरिसेन जी नें फिर चढ़ाई करी उस में रामदासजी मारे गये और उन के बेटे महानंदजी ९५ को ले कर इन कीरणीजी अपनें पिता बिदर्भ के राजा भीमजी के पास चलीगईं वहाँ भी हरिसेन जी नें यह कहला भेजा कि यातो अपने दोहतेमहानंदजी ९५ को हमारे कों सौंपा चाहिये नहीं तो लडनें की तयारी करनी चाहिये भीमजी नें भी लडनें की तयारी करी परन्तु महानंदजी ९५ की माता डरसें छिपकर निकलगईं और चंबल नदी पास आगईं उस वक्त टोडा नाम शहर में तँवर जाति के राजपूत जो पांडव बंश में हैं उन का राज था वहाँ के राजा इंद्रसेन जी नें जब महानंदजी के ९५ आने की ख़बर सुनी तब समाचार भेज कर रणीजी को बुलालिया और महानंदजी ९५ को अपनी बेटी ब्याह दी और ७ वर्ष तक रख के यह चाहा कि आधा अपना राज जमाईजी को देदूं परन्तु सुसरेजी की दीहुई ज़मीन का लेना महानंदजी ९५ नें

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ठीक नहीं समझा एक दिन का ज़िकर है कि म-
हानंदजी ९५ ने स्वप्न में यह देखा कि शाकंभरी
नाम देवीजी इन को यौंफर्माती हैं कि ऐ बेटे
अपनी फौज लेकर बौंदाजाति के राजपूत जो
इहाँ राज करते हैं उनपर चढ़ तेरी जरूर जीत हो
वैगी यह स्वप्न देखकर अपनीमाताजी के पास
गये और स्वप्न का वृत्तांत अर्ज़ करके फौजरख-
ने वास्ते किसी रीति सैं दौलत चाही तो उन की
माताजी नें १००००००० दसलाखरुपयों की क़ी-
मत का गहना दिया उसें जितनी फौज इकट्ठी
हुई उसकोंलेकर साँभरजाघेरी और वहाँ के राजा
नरबाहनजी और उन के बेटे जयपालजी को
मार कर मुल्क में अपना कब्जाकरलिया वहाँ
शाकंभरीदेवीजीका मंदिर नयेसिर बनवाया
और शहरकों नयेसिर बसाया जो इन महानं-
दजी ९५ के बंश में हुये वे सब संभरीकचौ-
हाण कहलाये क्योंकि इन्हों नें साँभर राज-
धानी मुकर्रर करी महानंदजी ९५ के विष्णु
दासजी ९६ हुवे उन के महारामजी ९७ हुवे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन के रेवादासजी ९८ हुवे उन के अमरसिंह जी ९९ हुवे उन के गंगादासजी १०० हुवे उन के मानसिंहजी १०१ हुवे उन के विश्वंभरजी १०२ हुवे उन के मथुरादासजी १०३ हुवे उन के द्वारकादासजी १०४ हुवे उन के माधवदासजी १०५ हुवे उन के सुदासजी १०६ हुवे इन्हों नें दंतालगढ़ का किलाजीता इन के दस बेटे हुवे बीरभद्रजी १०७।१ काशीनाथजी १०७।२ मधुसूदनजी १०७।३ बामनजी १०७।४ मुरारिजी १०७।५ बाराहजी १०७।६ हृषीकेशजी १०७।७ केशवजी १०७।८ बलभद्रजी १०७।९ कमलनयनजी १०७।१० इन में काशीनाथजी १०७।३ सें लेकर ९ बेटों का वंश रहा कि नहीं रहा और कितने दिन तक रहा इस्का कुछ पक्का पता नहीं मिला बीरभद्रजी १०७ के गोपालजी १०८ हुवे उन के गोविंददासजी १०९ हुवे उन के माणिकराजजी ११० हुवे ये बडे शूर बीर हुवे इन्हों नें अपना राज बहुत फैलालिया उत्तर में कुरुक्षेत्र तक दक्षिण में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चंबल तक पश्चिम में जालोर तक पूर्व में बयाना जाजब तक इन का राज हुवा इन्हीं को बडे राज के मालिक होने से विश्वपति कहते हैं माणिक्यराजजी ११० के हनुमानजी १११।१ सुग्रीवजी १११।२ ये दो २ महाराज कुमार हुवे इन में सें बडे बेटे हनुमानजी १११ नें तो अपने पिताजी के आगे यही अर्ज़ करी कि मैं तो मेरी बाँहं के जोर सें जो राज मिले उसी पर दिल रखता हूँ सो मेरे को यह हुक्म होकि मैं दूसरे मुल्क जीत नें वास्ते जाऊँ और यहाँ का राज छोटे भाई सुग्रीव १११ को बख़्श जावे यह कह कर उहाँ सें कूँच किया और पटने के सूर्य बंशी चुहलजी राजा को मार कर वहाँ राज कर लिया उन के बंश के चहुवाण पूर्बिये कहलाये सो इकतीस ३१ तरह के हैं आल १ बील २ सागर ३ आसावर ४ तोगी ५ पप्पडिया ६ आमर ७ असिमेरी ८ भाकर ९ सावरिया १० हेइंग ११ जड़ेचक १२ हरिया १३ नम्मसवाल १४ कंगासिक १५ समरीचक

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१६ समरूप १७ मुकराना १८ भावड १९ गोग
सेन २० सामवाल २१ तोसीनां २२ गुरावा
२३ धामनेच २४ मारू २५ मंची २६ भ
वर २७ हबासी २८ दानिक २९ कलेचा ३०
वरगड ३१ इन में सें ही वेदला १ कोठारिया
२ पालसोलिया ३ पूर्बिया चहुवाण उदयपु
र के राणाजी के उमराव हैं माणिकचन्दजी
१० नें तो काशी में रहना मंज़ूर किया और सु
ग्रीवजी ११ साँभर के राजा हुवे उन के अंगद
जी ११२ हुवे उन के केसरीजी ११३ हुवे उन के
जयंतजी ११४ हुवे उन के जगदीशजी ११५ हु
वे उन के जयरामजी ११६ हुवे उन के विजय
रामजी ११७ हुवे उन के हलजी ११८ हुवे उन
के जितयुद्धजी ११९ हुवे उन के गोवर्द्धनजी
१२० हुवे उन के मोहनजी १२१ हुवे उन के
गिरिधरजी १२२ हुवे उन के उदयरामजी
१२३ हुवे जिन को उग्रमजी १२३ भी कहते हैं
उन के भरतजी १२४ हुवे उन के अर्जुनजी १२५
हुवे उन के शत्रुजितजी १२६ हुवे उन के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमदत्तजी १२७ हुवे उन के दुःखंतजी १२८ हुवे उन के भीमजी १२९ हुवे उन के लक्ष्मणजी १३० हुवे इन के परशुरामजी १३१ हुवे उन के रघुरामजी १३२ हुवे ये शराब बहुत पीतेथे और रातदिन रणवास में हीं रहते थे जब पडिहार मंगालजी नाम मारोठ के राजा नें इन पर चढाई करी तब ये ७ दिन लड़कर सातवें दिन राज छोड़कर भागगये साँभर में पडिहारों का राज होगया और रघुरामजी १३२ रणवास सुधाँ अपने सुसरे बुरहान पुर के राजा सोम बंशी तोमर जाति अर्जुनजी के पास जारहे परंतु शराब उन में उहाँभी नहीं छूटी और वहाँहीं परलोक पधारे उन के समरसिंहजी १३३ हुवे इननें साँभर का राज लेने वास्ते तद बीर की मारोठ के राजा मंगालजी के बेटे नाहरजी के साथ लड़ाई हुई परंतु दोनोंहीं मारे गये समरसिंहजी १३३ के माणिकयराजजी १३४ हुवे इननें अर्जुनजी राजा के बेटे चक्रधरजी सें मदद लेकर साँभर का राज पीछा लेलि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या और नाहरजी के ११ बेटे भी मारडाले प॰
हले राज में भी राज बढ़ा लिया और उन नें
काँगड़े के राजा जल्हणजी की बेटी व्याही ज॰
ब व्याह का सब काम हो चुका तब इन के सुस॰
रे जल्हणजी नें यह कही कि लाहोर के राजा
केदारजी ने मेरे २ परगने ज़बर्दस्ती में लेलियेहैं
और मैंनें उन के बदले वर्षदिन के कुछ रुपये
भी देने क़बूल किये तोभी नहीं छोड़े इस वा॰
स्ते कुछ आप की तर्फ़ में मदद हुई चाहिये य॰
ह सुनकर माणिक्य राजजी १३४ नें लाहोर पर
चढ़ाव किया और उस को जीत कर के पहले
दो २ पर्गनों में सिवाय २ दो परगने और भी
सुसराजी के नाम लिखालिये इस वक्त तो ला॰
होर के राजाजी नें हार कर लिखदिये परंतु कि
तनेक दिनों पीछे जब माणिक्य राजजी १३४
तो साँभर में थे उस वक्त समय पाकर फिर काँ॰
गड़ा आय घेरा माणिक्य राजजी १३४ फिर सुस॰
राजी की मदद वास्ते काँगड़े पधारे परंतु उस
लड़ाई में मारेगये इन के दश १० महाराजकु॰

65-22.

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मारहुवे मुहकर्म्मोजी १३५।१ इन को दामो
दरजी १३५।२ भी कहते हैं लालसिंहजी १३५।
२ हरिसिंहजी १३५।३ शार्दूलजी १३५।४ पूर्ण
राजजी १३५।५ मौक्तिकराजजी १३५।६ निर्वा
णजी १३५।७ कुलराजजी १३५।८ लसनरा
जजी १३५।९ प्रवालराजजी १३५।१० इन में
मुहकर्म्मोजी तो सांभर की गद्दीपर बिराजे
लालसिंहजी १३५।२ नें मद्रदेश को जीत कर
वहाँ राज किया उन के बंश के माड़ेचे चहुवा
ण कहलाये हरिसिंहजी १३५ नें सिंधुदेश में
राज किया उन के धुंधेटजी १३६ नाम बेटे
हुवे उन के बंश के धुंधेडिये चहुवाण कहलाये
शार्दूलजी १३५।४ के घनजी १३६।१ और टंकजी
१३६।२ ये दो बेटे थे उन में घनजी १३६।१ नें तो
पंजाब में राज किया उन के बंश के पंजाबी च
हुवाण कहलाये और टंकजी १३६।२ के टाँक
चहुवाण कहलाये पूर्णराजजी १३५।५ नें भ
दावर नाम शहर का राजलिया उन के बंश के
भदोड़िये चहुवाण कहलाये मौक्तिकराजजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१३५।६ नें जालोर में जिसका दूसरा नाम सो-
नगिरी है राज किया उन के बंश के सोनगरे
चहुवाण कहलाये निर्वाणजी १३५।७ के
बंश के निर्बाणे चहुवाण कहलाये वे बहुत
कर्के मारवाड़ सें उत्तर की तर्फ बसते हैं इन
निर्वाणों में देवजी नाम बड़े शूरबीर थे जिनने
आबूपहाड़ के पासराज किया और शिरोही
नाम शहर बसाया उन के बंश के देवड़े चहु-
वाण कहलाये कुसराजजी १३५।८ नें पांड्य
देश में राजकिया इन के बंश के पंडिये चहु-
वाण कहलाये लसनराजजी १३५।९ नें गुज-
रात में राज किया उन के बंश के गुजरात्ती चहु-
वाण कहलाये प्रबालराजजी नें १३५।१० ब-
गसर देश में राज किया उन के बंश के बग-
सरिये चहुवाण कहलाये जो बड़ेही बड़े मु-
हु कर्म्माजी सांभर के राजाथे उन के रामचंद्र
जी १३६।१ और खिच्चीराजजी १३६।२ दोबेटे
हुवे सांभर में तो रामचंद्रजी १३६ राजा हुये
खिच्चीराजजी १३६ के बंश के खींची चहुवा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ण कहलाये उनका इसवक्त रघोगढ़ में राज है रामचंद्रजी के बारामहाराज कुमार हुवे संग्रामसिंहजी १३७।१ गलेशजी १३७।२ बंगदेवजी १३७।३ गोलपालजी १३७।४ पुष्पालजी १३७।५ मलयराजजी १३७।६ चाहोडदेवजी १३७।७ हरीणदेवजी १३७।८ महूणजी १३७।९ मोकलवारजी १३७।१० चक्रडाणजी १३७।११ मूकटजी १३७।१२ इन में बड़े संग्रामसिंहजी १३७ तो साँभर के राजा हुवे बाकी के बंश के चहुवाण इन नामों से कहलाये बालेशजी १३७।२ के बालेशे बंगडदेवजी १३७।३ के बंगडिये गोलपालजी १३७।४ के गोलवाल पुष्टपालजी १३७।५ के पुष्टवाल मलयराजजी १३७।६ के मलयेचे चाहोड़देवजी १३७।७ के चाहोड हरीणदेवजी १३७।८ के हरीणे महूणजी के माल्हण मोकलवारजी के १३७।१० मुकलार चक्रडाणजी १३७।११ के चक्रडाणे मूकटजी १३७।१२ के मू॰

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वटे कहलाये संग्रामसिंहजी १३७ के शिवा
दत्तजी १३८ हुवे उन को सांबदत्तजी १३८
भी कहते हैं उन के भोगादत्तजी १३९ हुवे
उन के शिवदत्तजी १४०।१ और चित्रकजी
१४०।२ ये दो महाराजकुमार हुवे शिवदत्त
जी १४० साँभर के राजा हुवे चित्रकजी १४०
।२ के वंश के चित्ते कहलाये शिवदत्तजी
१४० के रुद्रदत्तजी १४१ हुवे उन के सात
७ महाराज कुमार हुवे ईश्वरजी १४२।१ भै
रवजी १४२।२ क्षयरवजी १४२।३ अभ्रवाज
जी १४२।४ व्याघ्रोराजी १४२।५ ब्रध्नदेवजी
१४२।६ शरखेलजी १४२।७ इन में ईश्वरजी
१४२ साँभर के राजा हुवे भैरवजी १४२।२
के भैरवे कहाये क्षयरवजी १४२।३ के क्ष
यरवे अभ्रवाजजी १४२।४ के अभ्रावे
व्याघ्रोराजी १४२।५ के वाघोरे ब्रध्नदेवजी
१४२।६ के ब्रध्नेचे शरखेलजी १४२।७ के शर
खेले ईश्वरजी १४२ के आठ बेटे हुवे उमाद
त्तजी १४३।१ मयूरध्वजजी १४३।२ बहुलक

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी १४३।३ गजलदेवजी १४३।४ तिलवाट
जी १४३।५ चीबकजी १४३।६ सर्पटजी १४३
।७ चित्रराजजी १४३।८ इन मैं उमादत्तजीतो
साँभर के राजा रहे मयूरध्वजजी १४३।२ के
बंश के मोरचे कहलाये मयूरध्वजजी १४३।
२ के बेटे तो बहुत थे परंतु पर्वतजी १४४ औ
र तुष्टनपालजी १४४ के बंश के जुदेजुदे नाम
सैं कहलाये पर्वतजी १४४ के पड्डिया और
तुष्टनपालजी १४४ के साँचोरे कहलाये क्यों
कि तुष्टनपालजी १४४ साँचोर देश के राजा
हुवे थे बहलकजी १४४।२ के बहोले ग.
जलदेवजी १४३।४ के गयले तिलवाटजी
१४३।५ के तिलवाडे चीबकजी १४३।६
के चीबे सर्पटजी १४३।७ के सर्पाटे चित्र
राजजी १४३।८ के चित्रावे कहलाये चित्रा
जजी १४३।८ के बेटों में सें इन सात के बंश
के चहुवाण नीचेलिखेहुवे नामों सें कहला
ये चांडालीकजी १४४।१ के चंडालिये चाहु
डजी १४४।२ के चाहोडे बटराजजी १४४।३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के बडेरे मोरिकजी १४४।४ के मोरी उन
मोरियों में सें चित्रांगजी नाम मोरीनें ची-
तोड़ का किलाबनवाया था रैवतजी १४३।
४ के रेवडे चंदनजी १४४ के चौंदने बंकट
जी १४४।७ के बंकटे कहलाये ईश्वरजी
१४२ के बडे बेटे उमादत्तजी १४३ जो सांभर
के राजा थे उन के चार महाराज कुमार हुवे
बडे चतुरजी १४४।१ वे तो सांभर के राजा
हुवे दूसरे वत्सलजी १४४।२ उन के बंश
के वच्छल कहलाये तीसरे प्रवाचकजी
१४४।३ उन के बंश के पावचे चौथे कम्मार
जी १४४।४ उन के कम्मरिये कहलाये चतु-
रजी १४४ के तीन महाराज कुमार हुवे पहले
सोमेश्वरजी १४५।१ वे तो सांभर के राजा हुवे
दूसरे तुलसीरक्षकजी १४५।२ उन के बंश के
तुलछीरछण कहलाये सोमेश्वरजी १४५
के दो२ महाराज कुमार हुवे बड़े भरतजी
१४६।१ छोटे उरथजी १४६।२ इन में पहले
भरतजी १४६।१ का बंश लिखा जाता है पीछे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उरवजी १४६ का बंशलिखाजायगा भर
तजी १४६ के युद्धेष्टजी १४७ हुवे उन के मही
सिंहजी १४८ हुवे उन के सिंहजी १४९ हुवे उन
के चंद्रगुप्तजी १५० हुवे चंद्रगुप्तजी के १५० दो
महाराज कुमार हुवे पहले प्रतापसिंहजी १५१
।१ दूसरे आरत्नजी १५१।२ इन में पहले छोटे
भाई आरत्नजी १५१।२ का बंशलिखाजाता है
आरत्नजी के १५२ चतुरंगजी १५२ हुवे उन
के बंश के चोरंग कहलाये चतुरंगजी १५२
के जयधरजी १५३ हुवे उन के सुवाहुजी
१५४ हुवे उन के समरसिंहजी १५५ हुवे उन
के आखंडलजी १५६ हुवे उन के बीरदेवजी
१५७ हुवे उन के बिशोकजी १५८ हुवे उन
के बलराजजी १५९ हुवे उन के बरसिंहजी
१६० हुवे उन के बिलहणजी १६१ हुवे उन
के जयदेवजी १६२ हुवे उन के जहजी १६३
हुवे उन के बिजयपालजी १६४ हुवे उन के क
र्णजी १६५ हुवे उन के लक्ष्मणजी १६६ हुवे
उन के सहदेवजी १६७ हुवे उन के दुःशास

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नजी १६८ हुवे उन के महाबीरजी १६९ हु-
वे उन के रामजी १७० हुवे उन के बिजयरा-
जजी १७१ उन के हरिसिंहजी १७२ उन के
गोबिंदजी १७३ उन के तीन बेटे हुवे बड़े
भीमजी १७३।१ दूसरे मौक्तिकजी १७३।२ ती-
सरे माणिक्यराजजी १७३।३ मौक्तिकराजजी
१७४।२ के बंश के मुक्तिये और माणिक्यरा-
जजी १७४।३ के माणिक्के कहलाये भीमजी
१७४ के धुरंधरजी १७५ हुवे उन के सहस्रम-
ल्लजी १७६।१ और देवराजजी १७६।२ ये दो
बेटे हुवे पृथ्वीराजजी १७७ और जयचंदजी
की लड़ाई में पृथ्वीराजजी १७७ के साथ थे
और वहाँ ही मारेगये सहस्रमल्लजी १७६
के संयमराजजी १७७ हुवे उन के लंगारीरा-
जजी १७८ हुवे देवराजजी के आततायीजी
१७७ हुवे इसें आगे मालूम नहीं कि इनका
बंश ज़मीन पर रहा या नहीं यह आरत्नजी
का बंश लिखा अब बड़े प्रतापसिंहजी १५१
का लिखा जाता है प्रतापसिंहजी के सिंहदे-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वजी १५२ हुवे उन के सिंहबरजी १५३ उ-
न के मोहनरूपजी १५४ उनके रत्नसिंहजी
१५५ उन के सेनराजजी १५६ उन के संप्रति
राजजी १५७ उन के नागहस्तजी १५८ उन
के स्थूलानंदजी १५९ उन के लोहधारजी
१६० उन के धर्मसारजी १६१ उन के वैरिसिं
हजी १६२ उन के बिबुधसिंहजी १६३ उन के
योग्यरजी १६४ उन के चंद्रराजजी १६५ हुवे
ये सं॰ ८७५ में अपनी तर्फसें साँभर में काम
दार रख के आप अजमेर मैं रहने लगे चंद्र
राजजी १६५ के कृष्णराजजी १६६ हुवे उन-
के हरिराजजी १६७ उन के विल्हणराजजी
१६८ उन के पृथ्वीराजजी १६९।१ और अनुरा-
जजी १६९।२ ये दो बेटे हुवे अनुराजजी १६९
।२ के बंशकी हकीकत तो कुछ मालूम नहीं
कोई कहते हैं उन के बेटा नहीं हुवा पृथ्वीरा-
जजी १६९ को डिडुरजी १६९ भी कहते हैं
उन के बंश के डेडरे चहुवान कहलाये पृथ्वी
राजजी के धर्म्माधिराजजी १७० हुवे उन के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बीसलदेवजी १७१ हुवे इन की मरजी एक राणीजी पर बहुत थी इस बात सें दूसरी राणियों के दिल में दुश्मनी पैदा होगई इसका यह फल हुवा कि उन राणियों नें किसी वैद्य की मार्फत राजाजी को ऐसी दवा खिलाई कि राजाजी नपुंसक होगये तब बीसलदेवजी १७१ उदास होकर टोडे सें दक्षिण की तर्फ गोकर्ण नाम महादेवजी का स्थान है वहाँ तप करने को चले गये उहाँ एक साधूनें ऐसी दवा दी जिससें राजाजी के पुरुषार्थ पहले सें भी ज्यादा बंध गया तब खुश होकर गोकर्ण महादेवजी का मंदिर बनाने और बीसलपुर नाम गाँव बसाने का हुक्म दिया ये दोनों चीज़ें अबतक मौजूद हैं जब बीसलदेवजी १७१ अजमेर आये तो इन का ऐसा दिल बिगड़ा कि शहर की औरतों की इज्जत लेने लगाये तब बहुत से भले आदमियों नें अपनी बहू बेटी और जगह भेजदी और सब बस्ती नाराज होगई ऐसा वक्त पाकर गुजरात में जो अनिहलपुर पाट

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ण के राजा सोलंखी बालकराजजी नाम थे उ॰
नोंनें अपने घराने के राजपूत भेज कर जालो
र १ और सोरुत २ ये दोनों इन के परगने दाब
लिये जब इन परगनों के तालुक दारों नें यह
खबर राजाजी के पास भेजी तो राजाजी नें फ़ौज
भेज कर अपने दोनों परगनें छुड़ालिये और
बालकराजजी परभी चढाई करी दोनों तर्फ़ सें
कोई दिनों तक लड़ाई रही फिर बालकराजजी
नें यह कहला भेजा कि एक तो जवान औरत
और १००००००० एक किरोड रुपये लेकर आ॰
प चले जावें तो ठीक है बीसलदेवजीनें औरत
तो लेली और रुपयों के वास्ते यह कहला भे॰
जा कि इन रुपयों सें हमारे नाम का १ एक शह
र बसादो यह कहकर बीसलदेवजी सं॰ ९३६ में
पुष्करजी का मेला देखनें को गये वहाँ एक १
महाजन की लडकी देखी जिसकी माने इन
के महाराजकुमार सारंगदेवजी १७५ को दू॰
धपिलाया था सो विधवा होने के सबब सें पु॰
करमें आके तप करती थी उस को देखतेही

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोहित होगये उस लडकी नें इन को बहुत से रोका परंतु इनोंने जबर्दस्ती उस को दुःख दिया उस नें रोस में होकर शापदिया कि तुम्हारा चित्त बिगाड जावे उस के शापसें ये बावले होगये और बडी खराबियाँ करने लगे यहाँ तक कि मुल्क उजड होगया और इनोंने अपने बेटे सारंगदेवजी १७२ भी मार डाले एक दिन ये शहर के बाहर डेरों में खडे थे कि एक साँपनें काट लिया इस से वहाँ हीं परलोक को पधारे इनोंनें पहले दिनों में अजमेर के पास बीसल सागर नाम तालाब बनाया था सो हालतक मौजूद है बीसलदेवजी १७१ सें पीछे सारंगदेवजी १७२ के बेटे आनाजी १७३ गद्दीपर विराजे इन्होंनें फिर मुल्क आबाद किया और आनासागर नाम तालाब जो अजमेर के पास हाल मौजूद है बनवाया इन को अन्नलदेवजी १७३ और विग्रहराजजी १७३ भी कहते हैं इन के जयसिंहजी १७४ हुवे इन के आनंदमेयजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१७५ इन के सोमेश्वरजी १७६।१ और कृष्ण
जी १७६।२ जिन को कन्हजी भी कहते हैं ये
दो २ महाराजकुमार हुवे जब दिल्ली के रा॰
जा तँवर अनंगपालजी के ऊपर कन्नोज के
राजा राठोड जयचंद्रजी चढ आये उस वक्त
अनंगपालजी की मदद वास्ते सोमेश्वरजी
१७६ भी गये थे उस लड़ाई के पीछे अनंगपा॰
लजी की बेटी को व्याह कर अजमेर आये
कितनेक वर्षों पीछे अनंगपालजी ने जब
अपनी बेटी अजमेर सें बुलाई उन दिनों में
उन के गर्भ था उन के दिल्ली में सं॰ ११५ वै॰
शाख वदि २ बृहस्पति वार के दिन पृथ्वीराज
जी १७७ का जन्म हुवा इन की जो कुछ बहा
दुरी थी सो ज़ाहिर होगी जब ये ८ आठ वर्ष
के हीथे तब नानाजी नें दिल्ली में बुलाये थे
और इन के नानाजी का प्रताप बहुत बढ़ा हु
वा था नागोर लाहोर पिशावर वग़ैरह के
राजा उन्ही की चाकरी करते थे उन दिनों में
मंडोवर के राजा पडिहार नाहर राजजी दिल्ली

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में अनंगपालजी के पास आयेथे कचहरी
में पृथ्वीराजजी १७७ को देखकर राजी हुवे
और अनंगपालजी के आगे बहुतसी बड़ा-
ई करी पृथ्वीराजजी १७७ नें राजी होकर नाह
रराजजी को एक १ सोने की मालारी उस व-
क्त अनंगपालजी नें नाहरराजजी की लड़की
का पृथ्वीराजजी सें ब्याह करने की बात चला
ई फेर पृथ्वीराजजी १७७ तो अजमेर आग
ये और नाहरराजजी मंडोवर को आये इन
दिनों में अनिहलपुर पाटण के राजा भोला
राय भीमजी नें अपने काका के बेटे ७ भा
ई किसी कसूर सें मुल्क बाहर निकाल दिये
थे वे सातों भाई महाराज कुमारों को पृथ्वी
राजजी १७७ नें अजमेर बुला लिये थे एक
दिन ये ७ सातों भाई दरी खाने में हाजिर थे
उन में सें बडे भाई नें सादे दिल सें मूछ पर
हाथ रक्खा उस वक्त पृथ्वीराजजी १७७ के
काका कन्हजी १७६ नें जिन के यह नियम
था कि जो मेरे आगे मूछ पर हाथ रक्खे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस को ज़रूर मार डालूं तरवार उठा के उस का शिर जुदा कर दिया फिर जब और भी भाई लडने पर तयार हुवे तो कन्हजी १७६ वगैरह दरबार के सर्दारों नें सब मार डाले उस दिन पृथ्वीराजजी १७७ ने अपने काका जी सें यह अर्ज करी कि आज सें पीछे आप मेरी अर्ज सें आंखों के आगे १ पट्टी रक्खा करें उस को लडाई वा रण वास में खोला करें यह बात कन्हजी ने भी कबूल करी जब भोलाराय भीमजी ने अपने भाइयों का मरना सुना तो पृथ्वीराजजी १७७ सें कहला भेजा कि आपने हमारे भाइयों को मारडाला इस का फल अच्छा न होगा यह सुन कर पृथ्वीराजजी ने भी यह कह भेजा कि जिस वक्त आप याचाहते हो उसी वक्त हम तयार हैं कोई दिनों पीछे सोमेश्वरजी १७६ ने मंडोवर के राजा नाहरराजजी को कहला भेजा कि हम कुंवर पृथ्वीराज १७७ का व्याह कियाचाहते हैं सो तुम भी अपनी लड़की के व्याह की तया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रीकरो यह सुन तेही नाहरराजजी ने कहा
कि मैंने तो अपनी लडकी देनी कब कही
थी फक्त दिल्ली में बात चली थी और तुम तो
हमारी बराबरी के भी नहीं सो बेटी किसतर
ह दी जावे जब यह बात अजमेर में पहुंची
तो पृथ्वीराजजी १७७ सोमेश्वरजी ने बहुत से
रोके परंतु अपने काका कन्हजी १७६ और
अपने साथियों को लेकर मंडोवर पर चढ़ाई
करदी जब यह खबर मंडोवर में पहुंची तब
नाहरराजजी नें यह तजबीज करी कि आप
तो फौज लेकर अनिहलपुर पाटण की तर्फ
रवाने हुवे और चार हज़ार ४००० मीने और
मेर उन घाटों को रोकने वास्ते भेजे कि जो
अनिहलपुर पाटण के रस्ते में हैं जब रस्ते में
पृथ्वीराजजी १७७ ने यह बात सुनी तो
अपनी फौज की बाग भी अनिहलपुर पा-
टण की तर्फ मोडी जब रस्ते में मीने और
मेर मार भगाये तब नाहरराजजी फौज लेकर
आपहुंचे बहुतसी लड़ाई होने पीछे नाहररा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जजी भाग कर अनिहलपुर पाटण के किले में घुसगये उहाँ सें अपनी लडकी व्याह देने के वास्ते कहला भेजा जब यह बात पृथ्वीराजजी ने मंजूर करी तो नाहरराजजी ने मंडोवर में आकर अपनी बेटी पृथ्वीराजजी १७७ को व्याहदी पृथ्वीराजजी १७७ अजमेर में पधारे इन दिनों में आबू के राजा पँवार सलखजी के एक १ बेटी ऐसी खूब सूरत हुई कि जिनका जिकर सुन कर अनिहलपुर पाटण के राजा भोलाराय भीमजी उन पर मोहित होगये और टीला नाम १ अपना कामदार दोस्ती की तरह का कागज देकर सलखजी पास भेजा और यह अच्छी तरह समझा दिया कि जब तक बन सके नर्मी सें काम करना जो नहीं बने तो ज़ोर दिखा कर भी काम निकालना जब वहाँ जा के टीला ने नर्मी सें काम निकलता नही देखा तब हुक्म के माफिक ज़ोर दिखाया यह सुन कर सलखजी ने यह विचारा कि जो जबरदस्ती सें लड़की छीनलेंगे तो इज्जत में फर्क

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पडेगा और लडकी के लायक तो चाहुवाण पृथ्वीराजजी १७७ हैं यह विचार कर आप तो रण वास सुधाँ अजमेर की तर्फ रवाने हुवे और राज की निगहवानी वास्ते फौज को आबू पर छोडगये यह जब भोलाराय भीमजी ने सुनी तो गुस्से में आकर आबू पर चढाई करदी और सलखजी की फौज को मार कर उन के मुल्क में अपना कब्जा करलिया और थोडी फौज सलखजी की तर्फ भी रवानें करीथी परंतु इस बात की खबर पाकर सलखजी और रस्ते होकर सोमेश्वरजी १७६ के मुल्क में नागोर तक पहुंचगये और वहाँ जाकर सोमेश्वरजी १७६ सें यह कहला भेजा कि भोलाराय भीमजी हमारी लडकी को जबर्दस्ती सें लिया चाहते थे हम आप के महाराज कुमार पृथ्वीराजजी १७७ के साथ लडकी का व्याह करने वास्ते यहाँतक आप पुंचे हैं अब आप को अख्तियार है यह सुन कर सोमेश्वरजी १७६ ने कैमास नाम सामंत को जो अकल मंद कामदार भीथा बहुत सी तस

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्त्री की बातें समझा कर भेजा और सगाई भी
मंजूर करी इस तर्फ भोलाराय भीमजी भी स-
गाई की बात सुनते ही फौज लेकर चढ़ बाणों
को जीतने वास्ते सोकल शहर के पास आय-
डे इधर सें पृथ्वीराजजी १७७ ने भी भोलाराय
भीमजी का आना सुन कर सोमेश्वरजी १७६
सें बिना कहे ही कैमास की मदद वास्ते कित-
नेक सामंतों के साथ फौज भेजी इहाँ जब फौ-
ज कैमास के शामिल हुई तो सब बहादुरों
के यही सलाह ठहरी कि नागोर में तो थोडी
सी फौज के साथ कैमास को छोडें और बाकी
फौज भोलाराय भीमजी की फौज में रात के व-
क धावा मारे सो सलाह के मुवाफिक थोडीसी
फौज के साथ कैमास तो नागोर में रहा बाकी
फौज सोकल के सामने आपडी सलखजी पँ-
वार भी उसी फौज में थे इधर भोलाराय भीम
जी ने कैमास को दगे सें क़ैद करने वास्ते थो-
डीसी फौज के साथ अमरसिंह नाम कामदार
भेजा उसने वहाँ जाकर सब तरह उपाय किया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परंतु इस के जाल में कोई नहीं फँसा फिर कै-
मास की फौज ने रात को छापा मारकर अमर
सिंह की फौज सुधाँ मार भगाया और उस के डेरे
लूट लिये फिर कैमास भी उस फौज में जो भो-
लाराय भीमजी की फ़ौज में छापा मारने वास्ते
गई थी शामिल जा हुवा फिर इनों ने रात में छा-
पा मारा बहुत बड़ी लड़ाई हुई आखिर भोला-
य भीमजी ने भाग कर अनिहलपुर पाटण का
रस्ता लिया फतह पृथ्वीराजजी १७७ की हुई
इस सें पीछें वही फ़ौज आबू के मुल्क पर स-
लखजी को बिठाणे वास्ते और भोलाराय भीम-
जी की फ़ौज आबू में थी उस के निकालने वास्ते
गई जब दुश्मन निकाले गये और सलखजी का
मुल्क उन के हवाले अच्छी तरह होगया तब
सलखजी ने पृथ्वीराजजी १७७ को बुला कर
बेटी का ब्याह कर दिया पृथ्वीराजजी १७७
ने अजमेर में आकर सलखजी और उन के
पुत्र जैत कुमारजी दोनों बहादुरी के कारण
से बुलाकर उहाँही रख लिये एक बार का

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज़िकर है कि गज़नी का बादशाह शहाबुद्दी
न मुहम्मद गोरी की एक मर्ज़ीदार पात्तर और
तथी उस पर हुसेन नामी मुहम्मद गोरी के
घराने का एक आदमी आशिक होगया था
यह खबर पाकर बादशाह ने हुसेन को बहुत
सा धमकाकर यह कहा कि तूमेरे मुल्क सें
निकलजा वह चुप केही उस औरत को भी
साथ लेकर हिंदुस्तान में आगया इहाँ बादशा
ह के डर सें और जगह तो नहीं रह सका परंतु
नागोर में आकर पृथ्वीराजजी १७७ के पास
कुछ नज़र के साथ यह अर्ज करा भेजी कि मे
रा बचाना आप के हाथ है यह सुन कर पृथ्वी
राजजी १७७ नें उस को रखलिया यह बात
जब बादशाह ने सुनीतो सुनतेही पृथ्वीराजजी
१७७ के नाम लिख भेजा कि यह हमारा चो
रहै इस कों सोंप देना चाहिये यह सुन कर
जब पृथ्वीराजजी १७७ ने मंज़ूर नहीं करी त
ब बादशाह ने दूसरी बार सोमेश्वरजी १७६ के
नाम इस तरह का खत भेजा कि आपके महा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजकुमार ने हमारा चोर रख लिया है इस वास्ते आप को चाहिये कि महाराजकुमार को समझा कर हमारा चोर पीछा दिवाया जाय इस को सुन कर सोमेश्वरजी १७६ तो चुप रहे परंतु पृथ्वीराजजी १७७ ने यही फर्माया कि हम ने इसको अपनी पनाह में रक्खा है अब कभी नहीं सौंपेंगे इस बात पर बादशाह चढ आया परंतु हार कर ६ दिन तक पृथ्वीराजजी १७७ की क़ैद में रहा फिर सर्दारों के कहने सें पृथ्वीराजजी १७७ ने जीता छोड दिया पृथ्वीराजजी १७७ के नाना अनंगपालजी के बेटा नहीं था इस वास्ते उन ने पृथ्वीराजजी १७७ को अपनी गोद लेकर संवत् ११२८ मार्गशीर्ष सुदी ५ को राज देदिया अब अजमेर और दिल्ली का एक ही राज होगया अनंगपालजी गंगाजी पर रहने लग गये कोई दिनों में पृथ्वीराजजी १७७ अपने नानाजी सें मिलने वास्ते गंगाजी पधारे थे यह वक्त पाकर भोलाराय भीमजी ने जिन के काका के बेटे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७ सात भाई पृथ्वीराजजी १७७ के दरीखा ने
में मारेगये थे और इस बात सें उन के दिल
में दुश्मनी थी दिल्ली पर चढाई करदी इहां
दिल्ली में सोमेश्वरजी १७६ थे इन ने उन का सा
मना किया परंतु सोमेश्वरजी मारेगये भोला
राय भीमजी फतह पाकर अनिहलपुर पाटण
आगये जब पृथ्वीराजजी १७७ ने यह खबर
सुनी तो फौजलेकर भोलाराय भीमजी पर च
ढाई करी और उन को मार लिया जब पृथ्वीरा
जजी १७७ दिल्ली में थे कोई दिनों में पहली दु
श्मनी के सबब सें शहाबुद्दीन इन पर फिर चढ
आया परन्तु फिर हार कर पीछा गया संवत
११५१ में कन्नोज के राजा राठोड जयचंदजी ने
अपनी बेटी संयोगिता का स्वयंवर बनाया कि
बहुत से राजा बुलाकर अपनी बेटी के हाथ में
माला दी कि जिस को वह पसंद करे उस के गले
में माला डाल दे इस स्वयंवर में जयचंदजी ने पृथ्वी
राजजी को तो नहीं बुलाये और उन की मूरत बना
के दरवान की जगह रखदी यह बात सुन कर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथ्वीराजजी १७७ अपने सर्दारों के साथ धावा मार कर संयोगिता को लेगये इस में उन के बडे शूरवीर २०८ सर्दारों में सें चौंसठ ६४ सरदार मारेगये ये संयोगिता पर ऐसे मोहित हुवे कि रात दिन रनवास में ही रहने लगगये इस वक्त को पाकर शहाबुद्दीन फिर इन पर चढ आया इस लड़ाई में पृथ्वीराजजी १७७ पकडेगये इन पृथ्वीराजजी १७७ ने और भी मुहब्बा वगैरह की कई लडाई जीती और कई लडाइयों में राजों को जीत कर उन की लडकी ब्याही शहाबुद्दीन तो फतह पाकर अपनी तर्फ से दिल्ली में कुतुबुद्दीन ऐबक को छोडकर गज़नी को गया पीछे सें कुतुबुद्दीन के साथ लड़ाई में पृथ्वीराजजी १७७ के बडे बेटे रत्नसिंहजी १७८ मारेगये छोटे सामंतसिंहजी १७८।२ बालक थे उन को बुलाकर कुतुबुद्दीन ने मेवात का परगना दिया इसवक्त सें ही दिल्ली में मुसलमानों का राज होगया सामंतसिंहजी १७८ के जयमल्लजी १७९ हुवे उन को प्रल्हादजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१७९ भी कहते हैं उन के गोविंदजी १८०
हुवे उन कों सोमेश्वरजी १८० भी कहते हैं
गोविंदजी के सूरजी १८१ और जयपालजी
१८१।२ ये दो २ बेटे हुवे सूरजी को वीरवारभ-
द्रजी १८१ और नारायणजी भी कहते हैं सूर
जी १८१ के जैतराजजी १८२।१ और रणधीर
जी १८२।२ हुवे इन दोनों ने रणथंभोर के रहने
वाले भीलों को मारकर वहाँ अपणा राज कर
लिया जैतराजजी १८२।१ अपणे छोटे भाई र-
णधीरजी १८२।२ को पांच लाख की जागीर
के साथ छाण का किला देकर आप रणथंभो-
र के मालिक रहे इन के हम्मीरजी १८३ हुवे
ये बडे शूरवीर थे इन की यह हकीकत है
कि बादशाह अलाउद्दीन की किसी बेगम
को लेकर मुहम्मद शाह नाम एक आदमी
ने हम्मीरजी १८३ के इहाँ पनाह लीथी जब
अलाउद्दीन ने हम्मीरजी को १८३ कहला
भेजा कि इस आदमी को मेरे हवाले करदो
तब हम्मीरजी ने कहला भेजा कि मैं इस को

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कभी नहीं सौंपोंगा जब सं॰१३११ में अला
उद्दीन उन पर चढ़ आया रस्ते में छान के क़िले
में हम्मीरजी १८३ के काका रणधीरजी १८२
थेइन नें बादशाह का सामना किया कोई दिनों
तक लडाई करके रणधीरजी १८२ मारेगये छा
ण में अलाउद्दीन का क़ब्ज़ा होगया अलाउद्दी
न ने आलणपुर में जो रणथंभोर से ३ कोस
पर है फौज डालदी और सब घाटे रोक लिये
एकरात में हम्मीरजी के १८३ हरामखोर काम
दार ने छाण के किले में अपना क़ब्ज़ा रहणे के
लालच सें अलाउद्दीन के आगे किले के सब
भेद बतादिये और यह ठहर गई कि हम हम्मी
रजी १८३ के आगे यह अर्ज़ करदेंगे कि भंडा
र में तो नाज रहा नहीं और बाहर सें आसक्ता
नहीं जब सवेरे यही बात कामदार ने हम्मीर
जी १८३ के आगे अर्ज़ करदी तब सरणागत
मुहम्मदशाह ने कहा कि अब आप मुझे बाद
शाह को सौंपदीजिये फिरभी हम्मीरजी १८३
ने यही कहा कि मेरे मरणे पीछे जो कुछ होसो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो जीते तो तुम को न सौंपूंगा आख़िर ह-
म्मीरजी १८३ के मारे जाने पीछे मुहम्मद
शाह मारवाया इज़्ज़त बिगाड़ने के डर सें
सारा रणवास आग में जलवाया हम्मीरजी
के १८३ एक बेटे पूर्णपालजी १८४ नाम थे
जिन को रत्नजी १८४ भी कहते हैं सो इस
लड़ाई सें पहले उदयपुर के राणा लक्ष्मन
जी के पास भेजदिये थे उन के वंशमें नीमरा-
जजी नामराजा हुवे थे उन ने नीमराणानाम
छोटासा शहर बसाया और हालतक उन के
वंश के वहांही राजकरतेहैं इलाका बहुत छोटा
है जो पृथ्वीराजजी १७७ के काका कन्हजी
१७६ थे उन के वंश के चहुवाण पहले तो मैन
पुरी नाम शहर के परगने में मालिक थे अबभी
उसी तर्फ़ बसते हैं इस किताब में ऊपर लिख
आये हैं कि भरतजी १४६ का वंश पहले लि-
खकर फिर उरयजी १४६ का लिखेंगे सो अब
उरयजी १४६ का वंश लिखते हैं सोमेश्वरजी
१४५ के छोटे बेटे जो उरयजी १४६ थे उन के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चंद्रसेनजी १५५ भी कहतेहैं इन के घर के सब लोग अपनी कुलदेवी आशापूराजी की भक्ति बहुत करते थे उन के संवत् १४८१ में भानुराजजी १५६ नाम बेटे हुवे थे ये अपने साथियों के साथ जंगल में खेल रहे थे उस वक्त अचानक गभीरारंभ नाम राक्षस आकर उन को खागया उस वक्त आशापूराजी देवी ने अपने भक्त के बेटे की यह दशा देखकर उन की हड्डी इकट्ठी कर के अपनी करामात सें उन को जीते कर दिये और फर्माया कि हे बेटे जोकि तू हड्डियों सें जीता हुवा है इसंतेरा नाम अस्थिपाल १५६ होगा और तेरे बंश के हाडा कहलावैंगे और आश्विन शुदि ६ छठ के दिन तू जिलाया इस वास्ते तेरे बंश के इस दिन मेरी जियादा पूजा किया करैं और तेरा प्रताप बढता रहैगा यह फर्मा कर और एक बरछी देकर देवीजी अंतर ध्यान होगई भानुराजजी १५६ ने देवी की करामात सें जोर पाकर उस राक्षस को ढूंढ कर उसी बरछी सें मारडा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ला और अपने पिताजी के पास आकर सारी
हक़ीकत कही भीमचंद्रजी १५५ नें राजी हो
कर आशापूराजी का मंदिर बनाया और यह
मुकर्रिर कर दिया कि हमारे बंश के आश्विन
सुदि ६ के दिन आशापूराजी की ज़ियादा पू-
जा किया करें इस के पीछे महाराज कुमार
भानुराजजी १५६ जिन का आगे अस्थिपा-
लजी १५६ नाम लिखाजायगा देशों को जीत
ने चढे पहले ही अनिहलपुरपाटण पर च-
ढाई हुई वहां के राजा गोभिलराजजी सोलंखी
ने पहलें तो लडाई करी फिरहारकर २००००००००
रुपये देकर मेलकर लिया अस्थिपालजी
१५६ ने कितनाक तो उन का मुल्क अपने क
ब्जे में रक्खा बाकी उन को देदिया यह खबर
पाकर कुबेरजी नाम मेंकुवाण ने कि जिन के
बडे हम्मीरजी को अस्थिपालजी १५६ के
दादा गोपालजी १५४ ने आसेर में सें नि का-
लदियाथा वे वहां सें निकल कर मोरी नाम
शहर में रहने लगगये थे मारे डर के अस्थिपा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लजी १५६ को नालबंदी देना मंज़ूर किया और अपनी बेटी ब्याहदी पीछे अस्थिपालजी १५६ ने कछभुज के राजा यादव भीमजी को जीता और वहां आशापूराजी का मंदिर बनाया वहां सें द्वारका में भगवान का दर्शन कर के हिंगुलाज देवी का दर्शन कर के वहां भी एक आशापूराजी का मंदिर बनाया वहां सें आकर मारवाड सिंध और कश्मीर देश जीत कर ज्वालामुखी का दर्शन किया फिर अपने शहर में आये और भी कई राजाओं ने इन के वास्ते नजरें भेजी मुल्क भी इन के नीचे बहुत आगये भीमचंद्रजी १५५ पीछे ये राजा हुवे इन्हों ने गोदावरी नदी के पास अस्थिपालपुर नाम अपने नाम का शहर बसाया इन के पृथ्वीपालजी १५७ हुवे उन को धारपालजी १५७ चंडकिरणजी १५७ चंद्रराजजी १५७ भी कहते हैं उन के सेनपालजी १५८ हुवे उन को आज्ञाकीर्तिजी १५८ और लोकपालजी १५८ भी कहते हैं उन के शत्रुशल्यजी १५९ हुवे उन के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामोरजी १६० हुवे उन के नृसिंहजी १६१ हु-
वे उन के हरिबंशजी १६२ हुवे उन के हरजस
जी १६३ हुवे उन के सदाशिवजी १६४ हुवे
उन के रामदासजी १६५ हुवे उन के रामचंद्र
जी १६६ हुवे उन के भागचंद्रजी १६७ हुवे उ-
न के रूपचंद्रजी १६८ हुवे उन के मंडनजी
१६९ हुवे ये सदा शिकार खेलने में ही रहा कर
ते थे एक दिन ये तो शिकार खेलने पधारे थे
और पीछे सें एकाएकी उज्जैन के राजा पँवार
लक्षजी आसेर के किले में घुस आये किले में अ-
पना कब्जा कर लिया यह खबर सुनकर मंडन
जी १६९ थोडी बहुत फौज ले कर मेवाड के राज
में आगये वहाँ के राजा रावल तेजसिंहजी तो
एक वर्ष सें मारवाड के राजा पडिहार अज्जजी
के साथ लडरहे थे इन्हों ने इस मुल्क सें थोड़ासा
मुल्क दाबलिया और थोडेही दिनों में अपने
नाम का मंडन गढ नाम किला बनाया जिस
को अब माँडलगढ कहते हैं जब रावल तेजसिं
हजी मारवाड की लडाई सें पीछे आये तो इहाँ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपना मुल्क दूसरे के नीचे दबा हुवा देखा इस वास्ते दोबार मांडलगढ पर चढाव किया परंतु कुछ फायदा नहीं मिला मंडनजी १६९ के आत्मारामजी १७० हुवे उन के आनंदराजजी १७१।१ और जयराजजी १७१।२ ये २ दो महाराजकुमार हुवे जयराजजी तो सोमेश्वरजी १७६ के सर्दारों में थे सो कन्नोज की लडाई में मारे गये उन के बेटे अक्षयराजजी १७३ शहाबुद्दीन गोरी की लड़ाई में काम आये आनंदराजजी १७१ के हम्मीरजी १७२।१ और गंभीरजी १७२।२ ये दो बेटे हुवे हम्मीरजी १७२ नें मांडलगढ के पास हम्मीरपुर नाम गांव बसाया और दहियाजात के राजपूत रणधीरजी को मारकर नैणवा नाम शहर लेलिया जो हालबूंदी के नीचे है हम्मीरजी १७२।१ और गंभीरजी १७२।२ ये दोनों भाई तो पृथ्वीराजजी १७७ के सर्दारों में रहे और कन्नोज की लडाई में मारेगये हम्मीरजी १७२ के सुमेरुजी १७३ हुवे उन के बेटा नहीं था गंभीरजी १७२ के रणधवलजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१७२ हुवे ये अपने दादा आनंदराजजी १७२के पास रहे और आनंदराजजी १७२ के पीछे एही उन की गद्दी पर बिराजे उन के सरदार जी १७४ हुवे उन के जोधराजजी १७५ हुवे इन को भीमसेनजी १७५ बीरमदेवजी १७५ रायचंद्रजी १७५ चंद्रजी १७५ और कलिकर्णजी १७५ भी कहते हैं इन्हों ने चीतोड के राणा दिनकरजी को जीता उन के रत्नसिंहजी १७६ हुवे इन को वत्सजी १७६ और रेणुजी १७६ भी कहते हैं ये अफीम बहुत खाते थे यह जानकर चीतोड के राणा नागपालजी ने दिल में दगा रख कर इन सें ऊपरी दोस्ती करी एकदिन इन को चीतोड में बुलाकर बडी मिहमानी करी तब तो रत्नसिंहजी १७६ ने भी बदले की मिहमानी देने वास्ते राणाजी मांडलगढ में बुलाये जब राणाजी के बहुत से आदमी किले में घुस आये तब लड़ाई कर के रत्नसिंहजी १७६ बाहिर निकल दिये रत्नसिंहजी १७७ ने भागकर बंबावदा नाम गाँव में आकर वहाँ के पास के शहर दाब

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिये और वहाँ १ किला बनाया उस के पास
ही दूसरा रत्नगढ नाम किला बनाया इन दोनों
में रहकर सिंहोली १ खेडी २ अठाणा ३ जाब
द ४ नीवडी ५ वेयूं ६ बीकोल्यां ७ वग़ैरह कि
ले भी दाबलिये और राणाजी मन में दुख पा
तेरहे इन के कूल्हणजी १७७।१ और बीक
राजजी १७७।२ ये दो बेटे हुवे बीकराजजी १७७।
२ को हुन्नराजजी १७७ भी कहते हैं इन को
जागीर में बीकोली मिली इन नें नयेसिरे अ
च्छी तरह बसाई और शिवजी के बहुत से मंदि
र बनाये ये धोडगांव में जहाँ मुसलमान गा
यों को मारतेथे उन के रोकने में मुसलमानों
के साथ लडाई में काम आये रत्नसिंहजी १७६ के
पीछे कोल्हणजी १७७ गद्दीपर विराजे ये शि
वजी के बडे भक्त थे छ ६ बार तो केदारनाथ
जी की यात्रा करी सात ७ वीं वार ज़मीन पर
दंडवत करते हुवे यात्रा करणा कबूल किया
यहाँ तक कि १६ सोलह दिनों में १६ सोलह
कोस पहुंचे तो उस रात स्वप्न में शिवजी ने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह फर्माया कि मैं तेरी भक्ति सें राजीहुवा
और तू अब दुःखमत उठा इन्हों ने सवेरे
उठकर स्वप्न को याद करके उहां एक १ शिवजी
का मंदिर बनवाया यह मंदिर बूंदी सें पौण
कोस पर हाल मौजूद है कोल्हणजी १७७ ला
खेरी नाम शहर में जो हाल बूंदी के इला के में
है मुसलमान गायों को घेर लेजाते थे उन के
रोकणे में मुसलमानों के साथ लडाई मे मारे
गये इन के आशुपालजी १७८ हुवे थे उनका
कोल्हणजी के आगेही स्वर्गबास होचुका था
परंतु उन के विजयपालजी १७९ होगये थे
सो अपने दादा कोल्हणजी १७७ की गद्दी
पर विराजे उन के बंगदेवजी १८०।१ के सर
खानजी १८०।२ कर्मसिंहजी १८०।३ कुंभ
राजजी १८०।४ और बीरमदेवजी १८०।५ ये
पाँच महाराजकुमार हुवे बिजयपालजीके पीछे
बंगदेवजी १८० गद्दीपर विराजे इनके देव
सिंहजी १८१।१ कर्मणजी १८१।२ सिंहणजी
१८१।३ नयनसिंहजी १८१।४ अर्डकजी १८१।५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बर्डक जी १८१।६ नाथूजी १८१।७ पाथूजी १८१।८ हिंगुलूजी १८१।९ खड्गहस्तजी १८१।१० मोहनजी १८१।११ स्वामिदासजी १८१।१२ कृष्णदासजी १८१।१३ ये तेरा १३ हुवे बंगदेवजी १८० ने चीतोड १ जीरण २ दसोर ३ भाणपुर ४ पुरमांडल ५ पानगढ ६ सांडागढ ७ हिंगलाजगढ ८ खैरोली ९ कैथोली १० भैंसरोड ११ वगैरह छोटे बडे २४ किलेदार वलिये इन के बडे महाराज कुमार देवसिंह जी १८१ ने भी बहादुरी सें इन्ही दिनों में बूंदी में कब्जाकर लिया इस की इस तरह बात है कि बूंदी नाम गाँव में ३०० घरों की बस्ती थी इसमें जैता नाम मीणे का राज था और इस के नीचे छोटे २ बारा १२ गाँव और भी थे जैते के कामदार जसराजजी नाम गोलवाल चहुवाण थे उन के दो बेटी थी जैते ने अभिमान सें यह चाहा कि मेरे दोनों बेटों का व्याह जसराजजी की लडकियों सें हो जावे तो ठीक है यहाँ तक कि जैते ने एक दिन यह बात

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जसराजजी सें भी कहदी यह सुन कर जस·
राजजी के फिकर तो बहुत हुवा परंतु उपाय
कुछ नहीं था इनने बंबा बदे में आकर यह
अर्ज देवसिंहजी १८१ सें करी इन को सुनतेही
गुस्सा तो ऐसा आया कि अभी उनपर चढाई
करी जावे परंतु जबजसराजजी ने यह अर्ज
करी कि वे घेर में हीं बहादुर हैं लडाई में कब
ठहर सक्ते हैं तब तो महाराजकुमार देवसिंह
जी १८१ ने यह विचारा कि लडाई में तो भाग
कर बच रहेंगे इस्सें उन को धोका देकर मारना
ठीक है यह विचार कर आपस में बातचीत ठ·
हराली जसराजजी ने भी मन सूबे
के माफिक जेते के पास आकर बेटी देना
मंजूर किया और ऊमरथूणा नाम गाँव में
जो बूंदी सें चार ४ कोस पर जगह है व्याह ठ·
हराया जसराजजी ने देवसिंहजी १८१ को भी
व्याह के बहाने सें बुला लिये जब मीनेलोग
आगये तो बात की बात में मारडाले बचे सो
भागगये और उसी दिन संवत १२९८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आषाढ वदि ४ के दिन बूंदी में देवसिंहजी
१८१ का क़ब्ज़ा होगया जसराजजी की दोनों
बेटी टोडा के राजा सोलंखी गोबिंदराजजी के
बेटे कुंभराजजी और कन्हडजी को व्याही
गई देवसिंहजी १८१ बूंदी में क़ब्ज़ा कर के
खटकड के मालिक गोडगजमलजी को पाट
ण के मालिक गोहिल मनोहरदासजी को
गेणोली और लाखेरी के मालिक गोडों को
और करवर के मालिक दहिया जसकर्णजी
को मार कर वहाँ अपना क़ब्ज़ा कर के बूंदी को
पधारे इस बात को सुनकर बंगा देवजी १८०
भी राजी होकर बूंदी में पधारे देवसिंहजी
१८१ बहुत सराहे पाँच ५ दिन पीछे बंगादे-
वजी १८० तो बंबावदे को पधारे और देव-
सिंहजी १८१ ने जो जो इला के जीते थे वे उन
के ही हवाले करे पीछे देवसिंहजी १८१ को
बूंदी में इकल्ले समझ कर वे सब ठाकुर लोग
जिन के मुल्क छीने गये उन पर इकट्ठे होक
र चढ आये यह खबर सुनते ही बंगदेवजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१८० फिर फौज लेकर बूंदी में आपहुंचे आ
खिर दुश्मन हार कर भागगये बंगदेवजी
१८० फिर बंबा बदे को पधारे इन बंगदेवजी
१८० के वक्त में देवसिंहजी १८१ ने बूंदी से २
कोस पर नैऋत कोण की तर्फ एक बंगे श्र
ीदेवीजी का मंदिर और बावडी १ बनवाई
सो मौजूद हैं देवसिंहजी १८१ नेही लाखेरी
के पास कोहणजी १७७ की छत्री बनवाई
थी बंगदेवजी के पीछे देवसिंहजी १८१ गद्दी
पर विराजे इन के छोटे भाइयोंमेंसे सिंहणजी
१८१।३ के घुग्घुलजी १८३ हुवे उन के घु
ग्घुलोत कहलाये मोहनजी १८१।११ के
बंश के मोहनोत कहलाये बाकी दश १०
भाइयों के बेटे न हुवे इन में हिंगुलजी
१८१।९ तो राणाजी के पास रहे और अला
उद्दीन के साथ राणाजी की लडाई में मारे
गये वहां उन के महल हैं देवसिंहजी १८१
के हराजजी १८२।१ हत्थजी १८२।२ उन
को अप्पजी १८२।२ भी कहते हैं भटभ्रर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी १८२।३ उन को भोजजी १८२।३ भी कहतेहैं
वरघजी १८२।४ बलिबालजी १८२।५ उन को
कुम्भजी १८२।५ भी कहतेहैं चाहडजी १८२।६
समरसिंहजी १८२।७ मोकलजी १८२।८ इनको कं
मचंद्रजी १८२।८ भी कहतेहैं जैत्रसल्लजी १८२।९ उ
न को सौंडजी १८२।९ भी कहतेहैं गोविंदराजजी १८२।१०
कुंभपालजी १८२।११ शलिबाहनजी १८२।१२
ये बारा महाराजकुमार हुवे देवसिंहजी
१८१ नें बंबावदे के मुल्क सें थोडा बहुत मु
ल्क निकाल कर बूंदी के नीचे लगाकर बंबा
वदा और बूंदी ये दो २ राज बराबर के बनाए
ये आप तो बंबावदे में रहे और बूंदीकाराज
अपने प्यारे बेटे समरसिंहजी १८२।६ केजो
उस वक्त सात ७ वर्षके थे संबत् १३०० में ह
वाले करदिया देवसिंहजी १८१ के पीछे हर
राजजी १८२ तो बंबावदे में और समरसिंह
जी बूंदी में राज करनेलगे हस्यजी १८२।२
के बंशके हस्याउत कहलाये इन तीनोंभा
इयों सें सिवाय ९ भाइयों के बेटा नहींहुवा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरराजजी १८२ केहालूजी १८३।१ लालजी
१८३।२ लोहराजजी १८३।३ हमीरजी १८३।
४ बलिराजजी १८३।५ अक्षयराजजी १८३।
६ श्यामजी १८३।७ सुरताणजी १८३। ८
हरदोलजी १८३।९ लवणकर्णजी १८३।१०
रोमपालजी १८३।११ हल्लपालजी १८३।१२
ये बारा महाराज कुमार हुवे हालूजी १८३
का वृत्तांत आगे लिखाजायगा समरसिंह॰
जी१८२ के सं॰ १३१० में नरपालजी १८३।१
जिन को नापालजी १८३।१ भी कहते हैं
हरपालजी १८३।२ जैतसिंहजी १८३।३ औ॰
रडूँगरसिंहजी १८३।४ ये चार महाराजकु
मार हुवे समरसिंहजी १८३ ने केथोण १
सीसवाली २ बडोद ३ रेलावण ४ रामगढ
५ मऊ ६ सामोद ७ इन में भीलों को मार
कर इन परगनों में अपना थाना बिठारिया
जब समरसिंहजी १८२ बूंदी को पधारने
लगे तब चंबल के किनारे जहां अबकोटा
बसता है वहां समरसिंहजी १८२ के पास

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थोडी फौज देखकर भील फिर इकट्ठे होगये इतने में फौज भी आपहुंची बहुत से भील मारेगये बाकी भागगये जहां लडाई हुई वहां भीलों का गांवथा उस में कोटा नाम भील मालिकथा वहभी भागगया समरसिंहजी १८२ नें बूंदी आकर हरपालजी १८३।२ को जजावर नाम गांव जागीर में बख्श हरपालजी १८३।२ के बंश के हरपालपोते कहलाये जब जैतसिंहजी १८३।३ को जयथलगांव बख्शने लगे तब उन्ने अर्जकरी कि जहां आप के साथ भीलों से लड़ाई हुई वहां मैं एक नयाशहर बसाया चाहताहूं जबयह बात समरसिंहजी १८२ ने मंजूर करी तो जैतसिंहजी १८३ ने वहां आकर कोटा भील को मार कर शहर बसाया वही अब कोटा शहर है जैतसिंहजी १८३।३ के जैतावत कहलाये परंतु उन की तीसरी पीढी में खंधलजी नाम बडे शूरबीर हुवे जो मांडू के बादशाह के साथ लडाई में मारेगये उन के वंश के जैतावत खांधलोत कह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाये डूंगरसिंहजी को १८३।४ खजूरी नाम
गाँव बख्शा इस वास्ते उन के वंश के खजूरी
के हाडे कहलाये जब अलाउद्दीन की फौज ने
सं॰ १३२८ में चीतोड के राणाजी पर चढाव कि
या तब वक्त पाकर समरसिंहजी १८२ ने माँडल
गढ फिर दाब लिया जब अलाउद्दीन का मेवाड
में कब्जा होगया तो मेवाड के पहले कामदारों
ने बादशाह के कानों तक यह बात पहुँचाई कि
जिस वक्त आप की फौज मेवाड पर चढीथी उन्ही
दिनों में समरसिंहजी १८२ ने माँडलगढ दाबलि
याहै और बंबावदा वगैरह इलाके जो हरराज
जी १८२ के पास हैं वेभी पहले मेवाड के नीचे
ही थे तब तो अलाउद्दीन ने समरसिंहजी १८२
सें कहला भेजा कि यह माँडल गढ जो आपने
दाबलिया है सो मेवाड में है सो छोड दिया च
हिये क्योंकि अबराणाजी के राज के हम मालि
क हैं यह बात सुन कर समरसिंहजी १८२ ने सो
च विचार कर माँडलगढ खाली कर दिया जब
अलाउद्दीन ने माँडलगढ में कब्जा करके हर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजजी के ऊपर फौज इस वास्ते भेजी कि जो
मुल्क राणाजी का उन ने दाब लिया है सो छुडा
ना चाहिये तब अपने भाई हरराजजी १८२
की मदद वास्ते समरसिंहजी १८२ बंबावदे
में पधारे हरराजजी १८२ ने समरसिंहजी १८२
से बहुत कहा कि तू मेरे पीछे बूंदी क्यों खोता
है परंतु उस वक्त समरसिंहजी ने बूंदी को
लौटना मुनासिब नहीं समझा आखिर इ॰
सलडाई में हरराजजी १८२ समरसिंहजी १८२
वगैरह भाई काम आये फक्त मोकलजी १८२
बाकी रहे यह लड़ाई सं॰ १३३२ में हुई समर
सिंहजी १८२ ने सं॰ १३२० में बूंदी को बहुत
बडी करीथी सं॰ १३२१ में कोटा बसाया था
समरसिंहजी १८२ के पीछे नापाजी १८३ ग॰
दी पर विराजे इन के हम्मीरजी १८४।१ जिन
को हामाजी १८४।१ भी कहते हैं नोरंगजी
१८४।२ और स्थिरराजजी १८४।३ ये तीन
महाराजकुमार हुवे नापाजी १८३।१ बहुत
गाफिल थे इन के वक्त में रैलावण १ रामगढ २

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मऊ ३ माँगरोल ४ लाखेरी ५ करवर
६ केथोरा ७ चौरह परगने दुश्मनों ने
दाब लिये चैत्रशुदि ३ तीज के दिन गणगोर
का त्योहार था इस से गणगोर निकाली थी उस
को सेरगढ के राजा पँवार हरराजजी जबरद-
स्ती से छीन लेगये परंतु नापाजी देखते रहे
कुछ नहीं बनपडा ये सं. १३४३ में अपने सु-
सरे के इहां टोडे में पधारे थे वहां एक अच्छा
पत्थर देख कर जबरदस्ती बूँदी लाने लगे इस
बात पर तकरार होने से लडाई में साले के हा-
थ से मारेगये इन के हाथ से साले का हाथ कट
गया इन के पीछे १५ बर्ष की उमर में हामाजी
१८४ गद्दी पर बिराजे इन के बरसिंहजी १८५।१
और लालसिंहजी १८५।२ ये दो २ महाराज कु-
मार हुवे इन्हों ने नापाजी के वक्त के दबे हुवे
परगने दुश्मनों से छुडा लिये जो हरराजजी ना-
पाजी के वक्त में गणगोर छीन लेगये थे उन को
जीत कर उन की राणी और आप की गणगोर
दोनों छीनली और जिन ने नापाजी मारे थे उन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के बेटे सातलजी जीते और टूंक भी जीता
बंबावदे में हरराजजी १८२ के पीछे सं॰ १३३२
में १३ वर्ष की उमर में हालूजी १८३ गद्दी पर वि-
राजे इन के पास केवल बंबावदा १ बेघूं २ बी-
कोली ३ भैंसरोड ४ रत्नगढ ५ और सीगोली
६ येही परगने रहे बाकी सब बादशाह के नी-
चे आगये थे ये बडे शूरवीर थे इन्नेगद्दी पर वि-
राजने से दो वर्ष पीछे हीजीरणापुर के राजा पं-
वार जैत सिंहजी को जीतकर हिंगलाजगढ ले
लिया और भाणपुर के राजा खींचीभरतजी
और दसोर के राजा को जीतकर खेडी और जी-
नोद के किले लेलिये जब ये वर्ष १७ की उमर
में पहलेही स्योपुर में ब्याह के वास्ते पधारे थे
पीछे से जैतसिंहजी पंवार और खीचीभरतजी
दोनों ने बंबावदा घेरलिया बंबावदे में हालू-
जी के भाई लाल सिंहजी १८३ और लोहराज
जी १८३ ये बहुत बडी लडाई हुई जब ब्याह
करके पीछे पधारते हुवे हालूजी १८३ ने यह
बात सुनी तो अपने राणीजी को कोटे में भाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जैतसिंहजी के यहाँ छोडकर आप ५००० पाँच हजार सवारों के साथ आकर दुश्मनों को मार भगाया हालूजी १८३ ने अभी व्याह का कंकण भी नहीं खोलाया कि थोडेही दिनों में जैतसिंहजी राणाजी की फौज को इन पर चढा लाये इन्होंने राणाजी की फौज भी मार भगाई और बूंदी के मालिक नापाजी १८३ की मदद करके पलायत्ता १ और सीसवाली शहर नापाजी १८३ के कब्जे में करदिये जबजीरगपुर के राजा जैत सिंहजी के बेटे सुंदर दासजी ने चीतोड के राणा हम्मीरजी से फिर फौज लेकर इन पर चढाव किया उसवक्त इन की मदद वास्ते बूंदी से हामाजी १८४ पधारे इस लडाई में राणाजी के काका बिंकराजजी और राणाजी के बेटे खेतलजी के बहुत घाव आये राणाजी की फौज भागगई इस से पीछे हालूजी १८३ ने जोर में आकर पुरमांडल शहर जो राणाजी के नीचे था उस में भी अपना कब्जा करलिया जब यह बात राणाजी ने सुनी तो यह मनसूबा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पक्का बाँधा कि हाल्लूजी का खोजही खोदेना चाहिये जीरन १ और दसोर २ के मालिक फौजसुधाँ बुलाये और अपनी फौज लेकर हाल्लूजी १८३ पर चढाव कर दिया हामाजी १८४ बूँदी पधारयाही थे ये राणाजी का चढाव सुनतेही सीधे राणाजी की फौज में पधार कर राणाजी से मिले और यह कहा कि आप के महाराज कुमार खेतलजी के जो घाव हैं सो मेरे हाथ से लगे हैं सो मैंही कुसूरवार हूँ और आपको यह नहीं चाहिये था कि खींची और पँवारों की हिमायत करके हाल्लूजी १८३ के ऊपर फौज भेजी राणाजी ने यह कहा कि मेरे काके मारे गये और पुरमाँडल में कब्जा कर लिया इसका बदला क्या चाहिये तब हामाजी ने कहा कि मैं मेरे बेटा लालसिंह १८५ की बेटी का ब्याह आप के महाराज कुमार खेतलजी से कर दूँगा और पुरमाँडल को हाल्लूजी खाली कर देवेंगे इस बात पर राणाजी राजी होगये इसें पीछे हामाजी १८४ ने अपनी पोती की

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सगाई खेतलजी सें करदी और हाल्लजी १८३
को समझाकर पुर मांडल खाली करवादिया
और आप २५ वर्ष की उमर वाले वरसिंहजी
१८५ को राजदेकर और लालसिंहजी १८५।२
को कसवा गेणोलीजागीर में देकर सं॰ १३९३
में कासीजी पधारे और संवत् १४२३ में
वहांही स्वर्ग को पधारे वरसिंहजी १८५
के वैरीशल्लजी १८६।१ जावडुजी १८६।२
और निम्मराजजी १८६।३ ये तीन महाराज
कुमार हुवे एक चारण जात के कवि लोह
टजी नाम हाल्लजी १८३ के पासगये थे उन
दिनो मे हाल्लजी १८३ ने यह नियम कर र
क्खाया कि जैसे वणें तैसें लडाई में मरनाही
ठीकहै। हाल्लजी ने इन कवि को बहुत माल
बख्श और यह कहा कि मेरी पाग बांध क
र किसी के आगे सिर मत ऊकाइयो इन ने
भी मंजूर करी जबये कवि मंडोउर के राजा
पडिहार हम्मीरजी के यहां गये तो हम्मीर
जी ने बुलाये परंतु इन ने यह कहलाभेज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि मेरे पास इस वक्त केवल हालूजी १८३
कीदी हुई एकही पागा है इस को बाँधकर
किसी के आगे सिर नहीं झुकाऊंगा उस
वक्त तो हम्मीरजी ने मंजूर करके कवि को
बुला लिया पहलाँ तो बडी खातरी करी फेर
अपनी तर्फ से पोशाक देकर कहा कि इसको
पहरो जब कवि ने अपने कपडे उतारे औ
र उन के दिये हुवे कपडे पहरे तब हालूजी
१८३ कीदीहुई पाग नौकर पासदी हम्मीरजी ने
देखने के बहाने से लेकर वह पाग कुत्ते के
सिर पर बाँधदी कवि ने नाराज होकर बंबावदे
में आकर यह बात हालूजी १८३ से कही इ॰
न्होंने सुनतेही मडोवर पर चढाई करदी वहाँ
हम्मीरजी लडाई में जीतलिये उन की माने
बहुतसी खुशामद करके राज बचालिया उस
लडाई में हालूजी १८३ के भाई गोपालजी भी
मारेगयेथे हालूजी ने बंबावदे में आकरजब
यह जाणलिया कि मेरे भाग में तरवार से मर
ना नहीं है अपने महाराज कुमार चंद्रराज॰

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी १८४ को राजदेकर ८२ वर्ष की उमरमें
संवत् १४११ में भद्रकाली के आगे अपना
शिर चढ़ादिया हालूजी १८३ के वंश के हालू
पोते कहलाये इन में चंचाउत वगैरह और
भी हुवे लालूजी वगैरह भाइयों का वंश नहीं
चला लालसिंहजी १८५।२ ने गोणोली में
रहकर अपने बेटी का जिन की सगाई राणा
जी के कवर खेतलजी से हुईथी व्याह करना
चाहा चीतोड सें कवर खेतलजी के साथ बहु
त बडी बरात चढ कर गोणोली में पहुँची जब
व्याह होगया और दूसरे दिन शराब पीते
वक्त सब हाजर थे उस वक्त पहले तो दोनों
तर्फ से आप आप की बहादुरी की बातें हुई
बरात में वारूजी नाम चारण ने राणाजी की
बहुत बडाई करी जब लालसिंहजी १८५।२
ने कहा कि हमने सुना है कि पहले दिनों में
चीतोडगढ में एक पत्थर की पूतली चार ४ हा
थ वाली निकलीथी जब वह राणाजी के रुब
रु खडी करीगई तब उसका एक हाथ तो राणा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी की तर्फ़ या एक आसमान की तर्फ एक ज़मीन की तर्फ़ और एक गले के लगर हाथा जब राणाजी ने इस्का कारण पूछा तो तुम ने यह अर्ज की थी कि यह पूतली यों कहती है कि इन राणाजी जैसा दाता और शूरबीर न तो पृथ्वी में है न आकाश में है जो होवे तो मेरा गला काटा जावे सो यह बात केवल तुम ने ही बनाई थी ऐसा क्या कोई दाता और शूरबीर नहीं है अब जो तुम माँगो सो मैं देता हूँ जो मेरा सिर भी माँगो तो तयार है और बहादुरी में जमाई के सिवाय जो कोई लडने को आवे तो देखा जाय अब जो तुम कुछ नहीं माँगो तो तुम नालायक हो और मैं नहीं दूं तो मैं नालायक हूँ और पूतली तो पत्थर की है उस्के बदले तुम ने अपना सिर कटाया चाहिये यह सुन कर बारूजी ने शर्मिंदगी से डेरे पर जाकर अपने चाकर को कह दिया कि मैं मेरा सिर काटता हूँ तू लालसिंहजी पास पहुँचाइयो यह कह कर सिर काट डाला और

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाकर नें लालसिंहजी पास पहुंचादि
या लालसिंहजी को बडा शोच हुवा
तब यह खबर चीतोड में राणाजी पास
पहुंची राणाजी ने आप के कंवर सें
कहला भेजा कि जो तू मेरा बेटा है तो लाल
सिंहजी १८५।२ को मार कर आणा यहखबर
सुन कर लालसिंहजी १८५ ने और बरसिंह
जी १८५ ने जमाईजी साहब को समझाया कि
आप की हमारी लडाई इस छोटीसी बात पर
न हुई चाहिये आखिर उन ने नहीं मानी और
एक वर्ष की लडाई में लालसिंहजी के
हाथ से कवर खेतलजी मारेगये इसलडाई
में लालसिंहजी यहबात चाहतेथे कि मेरा
जमाईजी सें सामना नहीं होय परंतु जमाई
जी ने ही आप सामना कियाथा और पहले
शस्त्र चलाया बरसिंहजी १८५ के भी इस
लडाई में छः६ घाव आये और लालसिंह
जी की बाईजी कंवर खेतलजी के साथ
सती हुई फ़ौज लोट कर राणाजी पास गई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन दिनों के भीतर राणाजी स्वर्गवास करचुके थे फौज से खेतलजी का मरणा सुन कर इहाँ खेतलसिंहजी के बेटे लाखणजी गद्दीपर बैठे लोगों ने यह अर्ज करी कि जो बूँदी के मालिक बरसिंहजी १८५ मदद पर न होते तो गेणोली के जागीरदार सें क्या हो सक्ता था यह सुन कर लाखणजी ने यह नियम किया कि जब तक बूँदीवालों को नहीं जीतोंगा तबतक रोटी नहीं खाऊँगा तब लोगों ने यह अर्ज करी कि यह बात कब हो सक्ती है कि आप थोडे ही दिनों में बूदी जीत सकें जब लाखणजी ने नहीं मानी तो यह अर्ज़ करी कि हाल तो एक मिट्टी की बूँदी बणा कर उसमें थोडे से आदमी रख कर सरकर लीजिये तब लाखणजी ने कहा कि उसमें कोई हाडा जात का रजपूत रक्खा चाहिये उस वक्त कुंभकर्णजी १८४।२ हाडा जो हालजी १८३ के दूसरे पुत्र थे और चंद्रराजजी १८४ की दीहुई जागीर को छोड कर राणाजी के पास आरहे थे लोगों ने बणावट

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की बूँदी में रखने वास्ते तयार किये और य-
ह समझा दिया कि जब राणाजी चढ कर आ-
वें तब तुम शस्त्र गोर दीजो कुंभकर्णजी ने
बहुत सा कहा कि मैं हाडा हूँ बूँदी की रख-
वाली में कसर नहीं करूंगा परंतु लोगों ने
हाँसी समझ के उस बूँदी में थोडे से लड़ाई के
सामान के साथ रखदिये उन के पास ३०० ती-
न सो नौकर थे जब राणाजी चढे तब इनो ने
अपने नौकरों से कहा कि सिवाय राणाजी
के कोई वार में आवे मार डालो यह सुन ते-
ही पहलौंतो पैंचलाई फेर निकल कर बडी
बहादुरी सें लडे आखिर थोडे आदमी थे बहु-
त सी फौज को मार कर आपभी काम आये
बरसिंहजी १८५ ने जब देखा कि हमारी साथ
बहुतों की दुश्मनी होगई और आस पास के
मुल्कों में मुसलमानों का गदर मचरहा है
बूँदी के ऊपर एक तारागढ नाम किला सं-
बत् १४११ में बनवाया पहले दिनों में मंड-
नजी के बेटे हम्मीरजी ने नैणवाँ में अपना

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क़ब्ज़ा कियाथा पीछे से दहियों नें उसेंकब्ज़ा
कर लियाथा अबनैनवां के मालिक दहिया
भीमजीनेज़ोर पाकर बूंदी घेरली ॥ उसवक्त
बरसिंहजी १८५ गंगाजी की यात्रामें थे इ॰
हां गैणोली सें लाल सिंहजी १८५।२ ने आक
र ऐसी बहादुरी करी कि दुश्मन भगादिये ब॰
रसिंहजी १८५ ने आकर यह बात सुनीतो रा॰
जी होकर माखीदाका किला भाई के वास्ते
दिया आप नैनवापर चढ़गये और दहियों
को निकाल कर नैनवा में अपना क़ब्ज़ाकर
लिया और संबत १४५० में बरसिंहजी१८५
का स्वर्ग बासहुवा बंबावदे में चंद्रदेवजी
१८४ सें पीछें उन के बेटे धीरदेवजी १८५
गद्दी पर बिराजे हालूजी १८३ की बहुतोंकी
साथ दुश्मनीथी परंतु जबतक बरसिंहजी
१८५ सलामत रहे तब तक तो चंद्रदेवजी
१८४ और धीरदेवजी १८५ दोनों पर दुश्मनों
का दाव नहीं चला बरसिंहजी १८५ के पीछे
बहुत से परगने दुश्मनोंने दाबलिये और

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राणा लाखणजी के बेटे मोकलजी ने धीरदे
वजी १८५ को मार कर बंबावदा छीन लिया
और कोई हाल्हजी के बंश के रहे उन को थो
ड़ा बहुत खाणे वास्ते रहणे दिया लालसिंह
जी १८५।२ के जैतसिंहजी १८६।१ और नो
ब्रह्मजी १८६।१ ये दो २ बेटे हुवे जैतसिंह
जी १८६।१ के जैताउत नोब्रह्मजी के नो
ब्रह्म के हाडे कहलाये बरसिंहजी के पी
छे बूंदी में ३२ वर्ष की उमर में बैरीशाल
जी १८६ गद्दी पर विराजे इन के अखैरा
जजी १८७।१ चूंडाजी १८७।२ उदयसिंह
जी १८७।३ सुभांडदेवजी १८७।४ जिन को
भारमल्लजी १८७।४ और भांडाजी १८७।४ भी कह
ते हैं शोंडजी १८७।५ जिन को शांडाजी १८७।५ भी
कहते हैं लोहटजी १८७।६ कर्मचंद्रजी १८७।७ और
श्यामजी १८७।८ जिन को केशवदासजी १८७।८ भी
कहते हैं ये आठ महाराजकुमार हुवे जाबदुजी के
एक तो सारणजी हुवे जिन के बेटे सांवतजी के बं
श के सांवत के हाडे कहलाये दूसरे सेवाजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुवे जिन के बेटे मेवाजी के बंश के मेवाउत
कहलाये नीमराजजी के बंश के नीमाउत
कहलाये बैरीशालजी १८६ के वक्त में मांडू
के बादशाह ने इस तर्फ के राजों को जेर कर
लिया केवल चीतोड के राणाजी और बैरी
शालजी १८६ उसके हुक्म में नहीं थे और बैरी
शालजी १८६ ने उसके वकील भी धमकाये
थे इस वास्ते पहलों उन ने बूंदी पर चढाई क
री पहलों तो दोनों तर्फ सें तोपें चलती रही
परंतु जब मुसलमानों ने तोपों के सामने
बैल और गाय करदिये और आप भी गायों
को मारणे लगे तब तो सब लोगों ने बैरी
शालजी १८६ सें अर्ज करी कि अब तो अ
पनी तोपों सें गायें मरती हैं सो शहर सें
बाहर निकल कर लडाई में मरणा ठीक है
जब अर्ज मंजूर करके बैरीशालजी ने सोलह
र आदमियों को हुक्म दिया कि मुसलमानों
की फौज बहुत है जो हम मारे जावें तो रण
वास लडका लडकी वगैरह को निकालकर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नेणवाँ में लेजाणा यह हुक्म देकर बूंदी के दरवाजे खोल दिये और सब बहादुरों को बाहर निकलने का हुक्म दिया परंतु अरेराजजी १८७।१ चूंडाजी १८७।२ और उदयसिंहजी १८७।३ ये तीन बेटे अपनी अपनी जागीर के गाँवों में रहे और लडाई में नहीं आये उस वक्त बैरीशालजी १८६ ने यह फर्माया कि हमारे पीछे जो पाँच भले आदमी रहें इन तीनों को नत्तो राज में दखल करणे देवें और नहमारी क्रिया कर्म करने दें इन दोनों बातों में भाँडाजी १८७।४ ही मुकर्रर किये जाँय यह फर्माकर लडने को निकले बहुत बडी लडाई हुई आखिर मुसलमान बहुत थे बैरीशालजी १८६ मारे गये और जावदजी और निम्मदेवजी बहुत घायल हुवे उन को तो कोई भले आदमी अपने घर में ल्याकर इलाज करने लगे और किले के रख वाले लोग रणवास को लेकर नेणवाँ को चले इस तर्फ मुसल्मानों ने बूंदी में घुस कर लूट मचाई जब रात के वक्त

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कितनेक उमराव और थोडी फौज के साथ
रणवास नैणवाँ को रवाने हुवा उस वक्त मुस-
लमानों ने किले में घुसकर देखा तो रणवास
में सें कोई नहीं पाया तब तो इधर उधर ढूंढने
लगे तो एकधाय जिस के पास महाराजकुमा-
र श्यामजी १८७।८ थे हाथ आगई मुलमानों
ने उस को बादशाह पास सौंपा इस तर्फ रण
वास दुबलाणे गाँव में पहुंचगया और षीप-
लदे सें उदयसिंहजी १८७।३ भी दुबलाणे में
आगये जब श्यामजी की खबर नहीं पाई और
यह निश्चय होगया कि वे बादशाह के हाथ
आगये तब तो सब उमराव लोगों को गुस्सा
आया और रात के वक्त धावा करने की ठहरी
बादशाह के डेरे बूंदी सें दक्षिण की तर्फ पौण
कोस जहाँ अब गणेश बाग है पड रहेथे रा-
त को बहादुरों ने धावा मारा इस सें बादशाह
भाग निकला परंतु श्यामजी को साथही लेग-
या जब इहाँ किला दुश्मनों से खाली पाया तो
अमीर उमराव लोगों ने दुबलाणे से रणवास

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुलाकर बूंदी में दाखिल किया यह लडाई सं॰
बत १४९० में हुई जिसमें ७२ बर्ष की उमर
पाकर बैरीशालजी १८६ काम आये बादशाह
ने श्यामजी को मुसलमान बणादिये अब बै॰
रीशालजी १८६ के हुकमाफिक पाँच आदमि॰
यों ने ९ वर्ष की उमर में भाँडाजी १८७ गद्दीप॰
र बिठादिये इन के नारायणदासजी १८८ नर॰
बदजी १८८।२ और नृसिंहजी १८८।३ ये तीन
महाराजकुमार हुवे अखेराजजी के अवखा॰
उत चूंडाजी के चूंडाउत और उदयसिंहजी के ऊ॰
दाउत हाडेकहलाये बाकी भाइयों का बंश न॰
हींचला भाँडाजी १८७ को कम उमर देख कर
उन के बड़े भाइयों ने जिन को राज नहीं मिला॰
था मुल्कदाबना शुरू किया खटकड के जागीर
दार अखेराजजी ने पाटण १ जेथल २ खेडा ३
लाखेरी ४ लबान दाबलिये और बरूधर के
जागीरदार चूंडाजी ने नमाणा १ खीणा २ और
डाभी ३ दाबलिये और पीपलदा के जागीर दार
उदयसिंहजी ने बीस २० गाँव तो खालसे के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और मारवी देका किलाजो गैणोली वालों पास
यादाब लिये यहाँतक कि बाहर के दुश्मनों नेभी
बूंदी का मुल्क बहुत सादाब लिया इस राज के
यह चार आदमी खैर ख़ाह थे सारणजी साँडाजी
१८७।५ और लालसिंहजी १८५।२ के बेटे जैतजी
१८६ और खेतल कामदार जो ये नहीं होते तो
राज जाचुकाथा और उन दिनों में नीमाजी के
बेटे तोगजी १ नवब्रह्मजी २ सेवाजी ३ अमर
सिंहजी ४ बिजयसिंहजी ५ येभी राज के खैर
ख़ाह रहे साँडाजी १८७।५ बहुत शूरबीरथे परं
तु उस वक़्त लड़ाई का वक़्त नहीं होणें से खेतल
कामदार इन को रोक देता था जब मेवाड के
लोगों ने बडी लूटमार मचाई और दिन दिन
रैयत की खराबी की खबर आणेलगी उन
दिनों में खेतल तो कुछ बीमारथा और साँडाजी
ने आपके बडे भाई भाँडाजी १८७ लडने परत
यार किये दोनों भाई फौजलेकर हींडोली की
तर्फ जहाँ मीणे और मेवाडे राजपूतों ने लूट
मार मचारक्खी थी रवाने हुवे बहुत बडी लडाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होणे पीछे मीणे लोग और मेवाडे राज पूत भा
गनिकले उस लडाई में ८ आठ मेवाडे राज
पूत हाडों की क़ैद में आगये तो गजी सारण
जी और सौंडाजी ने भौंडाजी १८७ तो बूंदी की
तर्फ रवाने किये और आप ५०० जवानों को
साथ लेकर अमरगढ की तर्फ जो हाल में भी
राणाजी के कब्जे में है रात को रवाने हुवे इनों
ने ऐसा दाव किया कि जो ८ आठ राज पूत क़ैद
में थे उन के वास्ते कुछ जागीर देने का लालच
देकर यह कहा कि इस वक्त तुम किले के पास
जाकर किले के सिपाहियों से यों कहो कि जो
आदमी किले से निकलकर बूंदी के मुल्क को
लूटने वास्ते गये थे वे तो हाडों ने सब मारडा
ले केवल हम ८ आठ आदमी बचे हैं जो हम
को किले के भीतर नहीं लोगे तो हम भी मारे
जांयगे उन्हों ने भी कहे माफिक पहर के तड
के किले के पास जाकर उसी तरह कहा किले
वालों ने उन के भीतर लेने वास्ते दरवाजा खो
ला उसी वक्त ५०० जवान किले में घुस गये

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किले वालों को सब को मार कर भाँडाजी की
दुहाई फेरदी जब यह खबर बूँदी में पहुँची
तब भाँडाजी १८७ ने तो गाजी तो उहाँ किला
हार रक्खे साराणाजी और साँडाजी बूँदी बुला-
लिये जब हाडों का कब्जा अमरगढ में होगा-
या तो इस बात को सुन कर राणा कुंभाजी ने
बूँदी पर चढाई करी उस वक्त उन के राणीजी
ने यह पूछा कि आप कितनेक दिनों में पधारो
गे राणाजी ने कहा कि हाडों को मार कर आव
णसुदि ३ तीज सें पहलां आजाऊँगा राणीजी
ने कहा कि जो आप तीज तक नहीं आवो
गे तो आप का परलोक जाण कर चिता में
जलजाऊँगी राणाजी ने सोगंद खा कर तीज प-
र आने वास्ते कहा राणाजी ने यह चढाई इस
ढब सें करी कि थोडी थोडी फौज जहाँ तहाँ र-
खकर चुप के घोडों की डाँक में मांडलगढ आ-
पहुँचे इहाँ फौज भी जियादा रक्खी थी जब फौ-
ज को लेकर राणाजी ने अमरगढ घेर लिया
उस वक्त किले में लडाई का सामान नाज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वरोरह बहुत थोडा था आखिर उहां के किले
दार तो राजी ने किले सें बाहर निकल कर ब॰
हुत बडी बहादुरी सें लडाई करी बहुत से राण
जी के सरदारों को मार कर आप भी मारे गये
इस सें पीछे राणाजी ने अमरगढ में क़ब्ज़ा क॰
र के बूंदी के घेरा देलिया कितनेक दिनों तक
लड़ाई होती रही जब सावन की तीज पास
आने लगी तो राणाजी ने फ़ौज के सर्दारों सें
फ़रमाया कि हम तो हमारे बचन के बमूजिब
चीतोड़ को जावेंगे तब सर्दारों ने अर्ज़ की कि
जो आप पधारते हो तो आप की पागा इहां छो॰
ड़जावो कि हम उसकूं मुजरा करके लड़ाई पर
जाया करेंगे राणाजी ने तो आप की पागा रख
कर चीतोड़ की तर्फ़ कूंच किया इस तर्फ बूं॰
दी के सरदारों ने यह खबर अच्छी तरह जा॰
न ली उस वक़्त सारणजी और सांडाजी ने यह
मन सूबा बांधा कि जैसे बने तैसे राणाजी
की पागा छीन लेवें यह बिचार कर अचाण॰
क रात के वक़्त फ़ौज लेकर दुश्मनों की फ़ौज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर धावा मारा उस वक्त दुश्मन अचेत पड़े
थे सो भागा निकले जब देरों में ढूंढने लगे तो
गोहिल जात के राजपूत हरिसिंहजी के जो
बूंदी के सरदारों में थे राणाजी की पारा हाथ
आगई उस को लेकर बूंदी के सरदार तो किले
में दाखिल हुवे राणाजी की फ़ौज ने भाग कर
कितनेक दिनों में यह ख़बर राणाजी के पास
पहुंचाई राणाजी शर्मिंदगी से रणवास के बा-
हर भी नहीं निकले और दो महीने पीछे स्व-
र्ग को पधारे कितने दिनों में भाँडाजी १८७
ने अपने भाई साँडाजी को बहादुरी और बे-
रख़ाही के सबब से करवर नाम कसबा बख़्श
ण उन्हीं दिनों में साराणजी जैतजी और साँ-
डाजी ने ऊदाजी चूँडाजी और अखयराजजी
की दाबी हुई ज़मीन भी सरकारी क़ब्ज़े में करदी
और साँडाजी नें बैर लेने वास्ते यह चाहा कि
माँडू के बादशाह सें लड़ाई करनी चाहिये
उस वक़्त भाँडाजी १८७ ने और कामदारने
इन को रोका कि वह इस वक़्त बड़े ज़ोर में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं उस सें लडना ठीक नहीं तब तो सांडाजी
ने चुपके ही ४०० चार सौ सवारों को साथ ले
कर मांडू के बादशाह के बहुत से खासा घोडे
लूट के भांडाजी १८७ की नज़र किये उस व
क्त भांडाजी १८७ जैतजी और सारणजी ने
यह कहा कि यह घोडे नहीं लाये हो बल्कि
बूंदी पर आफत लाये हो जब मांडू के बाद
शाह ने नाराज होकर बूंदी का खोजही खोना
बिचारा उस वक्त श्यामजी नाम भांडाजी १८७
के छोटेही छोटे भाई ने जो बैरीशालजी के
वक्त की लडाई में बादशाह के हाथ आगये
थे और बादशाह ने मुसलमान बनाकर सम
रकंद नाम रक्खाथा और बादशाह उन सें
बहुत राजीथा बादशाह सें यह अर्ज करी
कि जो मेरे पर महरबानी होय तो मेरे साथ
फौज दीजावे कि बूंदी फतह करूं बादशाह
ने उन की अर्ज मंजूर करी और यह फर्माया
कि जो बूंदी को फतह करे तो बूंदी तेरेही वा
स्ते दीजावे जब समरकंद ६०००० साठ हजार

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बादशाही फ़ौज लेकर भाणपुर तक आप
ईंचा तबतो भाँडाजी को भी खबर पहुँची
इहाँ सब के यही सलाह ठहरी कि अबलड
ना ठीक नहीं यह बिचार कर सारणजी जैत
जी और खेतल कामदार येतीनों कुछ भेटले
कर चंबल तक पहुँचे उहाँ समर कंद के आगे
सब तरह की नरमी दिखाई समर कंद ने कहा
कि भाँडाजी १८७ को तो जागीर की तरह बारा
१२ गाँव सुहाँ दबलाणा दिया जायगा और
भाँडाजी १८७ को पाँच गाँव दिये जायँगे बाकी
मुल्क में हमारा राज रहेगा यही इन्हों नेभी मं
ज़ूर करी और उसी तरह हुई बूँदी में समर कंद
का क़ब्ज़ा होगया भाँडाजी १८७ दबलाणे में
रहने लगे खेतल कामदार ने दबलाणे सें ए
क १ कोस पर जहाँ हाल में भवानीपुरा नाम
गाँव बसता है खेतोलाव नाम तलाव और
एक खेतोला देवी का मंदिर बणाया इसी ने
किसी रीत सें यह जाण लिया था कि अगले
वर्ष में काल पडेगा इस वास्ते भाँडाजी १८७ के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुबस सें बहुतसा नाज खरीद करलियाथा जब
काल के दिन आये तब बहुत सें राजों को भी
उस वक्त भाँडाजी १८७ ने नाज देकर पालाथा
जब समरकंद नें यह बिचारा कि औरों को
तो बहुतसा नाज देते हैं और हम को थोडाही
दिया इस के दिल में पहलों सें यहथी किसी
तरह सें इस वंश का नाश करदूं परंतु कोई
बहाना नहीं मिलताथा अबकुछ खुशी का
बहाना करके भाँडाजी १८७ के सारे घरकेलोगों
की मिहमानी करी और हीं डोली नाम गाँव में
यह ठहरी कि भाँडाजी १८७ को खेतलजी नें
बहुत से मन्न किया परंतु भाँडाजी १८७ नें
नहीं मानी सांडाजी को भी जोरावरी सें सोगंद
देकर लेगये यहां यह नौबत हुई कि जब यह
भोजन करने लगे उस वक्त मुसलमानों ने सम-
रकंद के हुक्म माफिक भाँडाजी १८७ वगैरह
१७ आदमी मारडाले यह खबर जब १६ वर्ष
की उमर वाले नारायणदासजी १८८ ने सुनी
उस वक्त शोचतो हुवा परंतु कुछ बस नहीं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या इस वास्ते मोका ढूंढते रहे और जो लोगमा
त्रिम वास्ते आते उन सें यही फर्माते रहते कि
मेरे पिताजी और काकाजी दोनों आपके मा
लिक समरकंदजी के बदखाहथे सोमारेगये
बहुत अच्छाहुवा ॥ और मेरे तो समरकंदजी
और बेगम साहिबा ये दोनों हीं माता पिता हैं
जब यह बात कानों कान समरकंदने सुनी तो
राज़ी होकर अपणा बेटा और बेगम मातमपुर
सी के वास्ते भेजे वहां बेगम से यही बात कही
कि मेरे तो आपही माता हो तबतो राज़ी होकर
यही बात बेगम नें बूंदी में समरकंदको कही
उस वक्त बूंदी में बुलाकर समरकंदने इनको
१२ बारगांव और दिये इन के सूर्य्यमल्लजी
१८९।१ रायमल्लजी १८९।२ और कल्याण
मल्लजी १८९।३ ये तीन महाराज कुमार हुवे
नरबदजी के अर्जुनजी १८९।१ भीमजी १८९।२
पूरजी १८९।३ और मोकलजी १८९।४ ये
चार बेटे हुवे और कर्मवतीजी नाम बाई
हुई ये चीतोड के राणा संग्रामसिंहजीको ब्याही

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गईथीं अर्जुनजी १८९।१ के सुरजनजी १९०।१
अखयराजजी १९०।२ खाँधलजी १९०।३
और रामजी १९०।४ ये चार बेटे हुवे अर्जु-
नजी १८९ के बंश के अर्जुन पोता अखयरा-
जजी १८९।२ के अखयराज पोता खाँधलजी
१८९।३ के बेटे जसराजजीथे उन के जैसावत
कहलाये रामजी १८९।४ के राम के हाडेकह-
लाये एक दिन वक्त पाकर नारायणदासजी
१८८ अपणे बहादुरों को लेकर किसी बहा-
ने सें बूंदी पधारे चार ४०० सौ सिपाही तो दर
वाजे सें बाहर रक्खे और आप सात ७ बहा-
दुरों के साथ जाकर समर कंद को जहाँ वह
थोडे से आदमियों के साथ बुलबुल लड़ारहा
था मारडाला वहाँही खटकड के जागीरदार अ-
खयराजजी के बेटे संग्रामसिंहजीभी हाजरथे
उन्होंने नारायणदासजी १८८ को मारणा वि-
चारा नारायणदासजी १८८ ने उन कोभीमा-
रडाला उस जगह को अबतक भी पूजते हैं
तब तो सब अपने सिपाही शामिल होगये

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समरकंद का बेटा दाऊद जो उस वक्त शिकार को गया था आता हुवा चतुर्भुजजी के मंदिर पास जो बूंदी के बाजार में है मारागया उस वक्त हसनखां और चांदखां जो समरकंद के बडे बहादुरथे हवेली पर चढ़कर नारायणदास जी १८८ सें कहने लगे कि जो आप हमारे एक तीर सें बचजावोगे तो हम शस्त्र छोडकर फ़क़ीर होजावेंगे जब इन्हों ने हुक्म पाकर नारायणदासजी १८८ के ऊपर गोली के रुपये सें तीर चलाया तो नारायणदासजी १८८ के थोडासा घाव लगा तब तो वे भी दोनों फ़क़ीर होगये नारायणदासजी १८८ ने एक तो मींडकदरे पर और दूसरी केदारनाथजी के रस्ते में इन के नाम की चौकी बणवाई और चतुर्भुजजी के मंदिर के पास समरकंद और दाऊद की कबरें बणवाई समरकंद की बेगम ने बूंदी के पास भी बनवा नाम गांव बसाया और वहां एक बावडी बनाई ॥ नारायणदासजी १८८ अफीम बहुत लेने लगे यहां तक कि विशेषकर उस के नशे में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊँघते रहते एक वक्त चीतोड पधारे थे वहाँ
राणाजी के दरीखाने में बिराजे हुवे ऊँघ रहे
थे उस वक्त ढकूजी नाम पूर्बिया चहुवाण
जो राणाजी के सरदारों में थे जिन्हों ने पह-
ले दिनों में राणाजी के साथ बूंदी में आकर
दरी खानें में नारायणदासजी १८८ को ऊँघ
ते देखकर हाँसी करी थी अब उन्हों ने नारा-
यणदासजी १८८ का फिर ठट्ठा किया जोकि
बूंदी में हाँसी की खबर पाकर भी नारायण-
दासजी १८८ नें कुछ न फर्माया था अ-
ब इन्हों ने उस नालायक को दरी खाने में
ही मार डाला संबत् १५८१ में माँड़ के बाद-
शाह ने नालबंदी लेणे वास्ते दो इक्के जो
बडे बडे बहादुर थे चीतोड में भेजे थे उन
दिनों में नारायणदासजी १८८ चीतोड बु-
लाये गये थे सो उन्हों ने १ एक इक्का साँग-
सें घोडा सुधाँ मार लिया दूसरा इक्का भागग-
या उस वक्त राणाजी ने इन सें बडी दोस्ती
दिखाई नारायणदासजी १८८ तो बूंदी में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पधार आये राणाजी ने नरबदजी १८८।२
के बेटे अर्जुनजी जो अपणे बहण कर्म
वतीजी को पहुंचाणे वास्ते चीतोड आये
थे ६५००० की जागीर देकर चीतोड मैं ही
रख लिये जब इक्के के मारणे की खबर सु
न कर अहमदाबाद और मांडू के बादशा
ह महमूद और मुजफ्फर नैं अपनी फौजसैं
चीतोड घेर लिया उस वक्त भी नारायण दास
जी १८८ नैं राणाजी की मदद करी रात के धावे
मैं हार कर दोनौं दुश्मन भगगये इस लडाई
मैं अर्जुनजी के भी बहुत घाव लगे मांडू का काम
दार इन्होंने मारलिया नारायणदासजी १८८
के छोटे भाई नृसिंहजी इस लडाई मैं काम आये
जब बाबरशाह दिल्ली सैं बडी फौज लेकर चीं
तोड पर चढ आयाथा उसवक्त भी नारायण
दासजी १८८ राणाजी की मदद पर थे पील्या
खाल पर आकर लडाई हुई उस वक्त राणाजी
ने बादशाह की फौज बहुत देख कर भावा
णा चाहाथा परंतु नारायणदासजी १८८ ने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहा कि आपकी दीवान पदवी है सो दुश्मनों
की फौज सैं भागजाने सैं अच्छी नहीं दीखैगी
तब राणाजी ने कहा कि दीवान पदवी आप
को मुबारिक है यह कह कर चीतोड को च॰
लेगये नारायणदासजी १८८ नैं बाबरशाह सैं
बडी लडाई करी और फतह पाई उसवक्त सैं
बूंदी वालोंको दीवान कहते हैं इस लडाई मैं
नीमाउत नृसिंहजी हरपाल पोता भीमजी
नोरंग पोता भरतजी डूंगरसिंहजी खजूरीवा॰
लों के वंश के अमरसिंहजी थिरराज पोता गं॰
गादासजी वगैरह बहुत काम आये मोहणोत
देवसिंहजी जैताउत राघवदासजी ये दोनों हा॰
डे लडाई सैं भागकर बूंदी मैं आछिपेथे नारा॰
यणदासजी १८८ भी बहुत घायल हुवे जबभा॰
गता हुवा बाबरशाह रस्ते में बूंदी के मुल्क को
लूटने लगातो बूंदी सैं सूर्यमल्लजी १८९ तयार
हुवे नरबदजी ने इन को बालक समझ कर ब॰
हुत रोके परंतु जब इन्हों ने किसी तरह नहीं
मानी तो किसी बहाने सैं मकान मैं ताले सैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बंद करदिये इस के पीछे नरबदजी फौज को लेकर चंबल के किनारे कुशक के घाट पर बादशाह सैं लडने को जापहुंचे बहुत बडी लडाई हुई इसमैं नरबदजी १८८।२ मारेगये और हाथाउत हम्मीरजी घुरघुलोत तेजजी लाखाजी कुबेरजी हालू पोता अनोपजी खजूरी के खेमजी वगैरह कई काम आयेथे पीछे सैं नारायणदासजी १८८ बूंदी मैं आये एक दिन थोडे से लवाजमैं के साथ औतरी के गुढे के पास शिकार वास्ते पधारे थे उस वक्त खटकड के जागीरदार नरबदजिस्के बाप संग्राम सिंहजी समरकंद के साथ नारायणदासजी १८८ के हाथ सैं मारेगये थे खाल मैं छिपकर नारायणदासजी १८८ पर गोली चलाकर पहाड की तर्फ भागा नारायणदासजी १८८ नें उस के पीछे घोडा दौडाया परंतु पहाड पर चढ नहीं सका उसी गोली सैं संवत् १५८४ मैं नारायणदासजी १८८ का परलोक हुवा और इन के पीछे सूर्य्यमल्लजी १८९ वर्ष २१ की उमर मैं गद्दी पर बिराजे राणाजी नै

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टीके का दस्तूर १ हाथी २ घोड़े १ पोशाक और
जड़ाऊ गहणे भेजे थे इन के सुरताणजी १८०
हवे सूर्य्यमल्लजी १८४ नै बदला लेने वास्ते
खटकड घेरली उस वक्त नरबद तो छिपकर
भागगया इन्हों ने उस का माल लूट लिया
और सिवाय खटकड के कि जो नरबद के घर
के लोगों के गुज़रान वास्ते छोड़ा गया सारे
जागीर के गाँव ख़ाल से कर लिये नरबद ने
भाग कर सारंगपुर के राजा मखन मुसल-
मान के यहाँ जो नरबद का दोस्त था पनाह
ली सूर्य्यमल्लजी १८४ ने मखन सैं कहलाभे
जा कि जो तुम्हारा भला चाहते हो तो हमारे
बदख़्वाह को सौंपदो जब उस ने क़बूल न-
हीं करी तो उस पर चढ़ाई हुई उहाँ कुछ ल-
ड़ाई करके मखन और नरबद दोनों भागग-
ये सारंगपुर को लूटकर सूर्य्यमल्लजी १८४
बूँदी पधार आये इन्हीं दिनों मैं राणाजी के
साथ मालवे के महमूद शाह और गुजरात
के मुज़फ़्फ़र शाह की लड़ाई मैं मुसलमानों

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने किले को सुरंग लगाकर उडाना चाहा॰
था उस वक्त जिस बुरज पर नरबदजी के बे॰
टे अर्जुनजी जो राणाजी ने चीतोड मैं ही र॰
खलियेथे मौजूदथे वहबुर्ज बारूत सैं उड़गई
उसी के साथ अर्जुनजी भी उडगये जीत हो॰
जाने पीछे राणाजी नै अर्जुनजी के बेटे
सुर्जनजी को दूणीजागीरदी चीतोड मैंराणा
संग्रामसिंहजी का देहांत हुवा और उनके
बेटे रत्नसिंहजी गद्दी पर बैठे श्रीनवार के
राजा पँवार सारंगसिंहजी की बडी बेटी तो
राणा रत्नसिंहजी को व्याहे छोटे बेटी सूर्य्य
मल्लजी १८९ को व्याहेथे और इन राणाजी
का बडा कामदार कोठारे का ठाकुर पूर्णमल्ल
था यह नालायक सूर्य्यमल्लजीसैंनाहक दुश्म॰
नीरखताथा और हाथी १ घोडे २ जडाऊमूठ
की तलवार सरपेच पोशाक कमठा और क॰
बाण येचीजैं नारायणदासजी१८८ के हाथ सैं
इक्का सवार मरणे पीछे राणाजी की तर्फ सैं
हर साल बूंदी को भेजी जातीथी और बाबर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाह की लडाई के पीछे ये चीजें दूणी
भेजी जाती थी सो पूर्ण मल्ल नें सब
बंद करदी मांडू और गुजरात के बा-
दशाह सें मेल करके सूर्य्यमल्लजी को
मारणा चाहाथा परंतु यह बण नहीं
सकी। और खटकड के जागीरदार
नरबद के बेटे पूरजी नें इस बात की
सूर्य्यमल्लजी १९९ के आगे अर्ज भी
करदीथी पूर्णमल्ल राणाजी के कानों
में भी यही भरा करता था कि आप तो
बूंदी वालों सें दोस्ती रखते हो वे आपका
मुल्क लिया चाहते हैं एक वार सूर्य्यम-
ल्लजी १८९ आप के सुसराल श्रीनग-
र में पधारे थे उहां इन सें राणाजी की
राणीजी नें जो इन की बडी साली थे यह
कहा कि आपनें बडा शेर तीर सें मारा सुना है
सो ऐसा ही एक शेर इहां भी हिलरहा है उसको आ-
प मारें तो हम भी देखा चाहती हैं सूर्य्यमल्लजी
१९९ नें सुनकर दूसरे दिन उहां मालादिवाया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और दूसरे दिन रात के वक़्त आप उसमें वि-
राजगये रणवास की स्त्रियों नें इन के पास
जोरावरी सें इन के राणीजी भेजे कितनी देर
पीछे हिलाया हुवा शेर भी आपहुंचा इन्हों
नें उस को तीर सें मारलिया इन की सालीजीनें
जिन नें यह हक़ीक़त आंखों सें देखी थी बड़ा तरु-
जुब हुवा और सवेरे इन की नछरावल करी य-
ही बात इन की सालीजी नें राणाजी के पास
आकर सारी सुनाई राणाजी नें पूर्णमल्लसें कही
पूर्णमल्लनें अर्ज़ करी कि आप की राणीजी की
सूर्य्यमल्लजी १८९ सें दोस्ती होगई है इसमें श-
क नहीं राणाजी के चित्त में यह पक्की ठहरगई
और किसी बहानें सें सूर्य्यमल्लजी १८९ को
मारडालना ठहराया कोई बहाना करके बूंदी-
में आये मुलाक़ात होने सें पीछे राणाजीने य-
ह कहा कि आप के यहां शेर की शिकार अच्छी
सुनी जाती है जो होय तो हम शिकार खेलाचा-
हते हैं दूसरे दिन सूर्य्यमल्लजी १८९ शेर की
शिकार की जगह राणाजी को लेगये उहांराणा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीनें दग़ा तो किया परंतु चला नहीं दूसरे दिन
राणाजी को हरिणों की शिकार का शौक़ हुवा
राणाजी नें कहा कि हरिणों की शिकार में ज़ि-
यादा आदमी अच्छे नहीं हमारे साथ जो पाँच
आदमी हैं सो आपके ही हैं तब यह सुनकर
एक १ राजपूत जो पानी पिलानें वाले नौकर के
पास सें पानी की शीशी लेकर साथ हुवे थे वे
भी सूर्य्यमल्लजी १८९ नें पीछे भेज दिये परंतु
वे कुछ दूर पर पीछे पीछे आते रहे राणाजी नें
अपणे आदमी समझा रक्खे थे जब शिकार की
जगह में पहुँचे और मौक़ा पाकर पूर्णमल्ल
नें सूर्य्यमल्लजी पर तीर चलाया सो सूर्य्यमल्ल
जी १९९ के लगा कर पार निकल गया तब तो
सूर्य्यमल्लजी १९९ नें सम्हल कर एक १ आद-
मी को जो पीछे बैठ कर सूर्य्यमल्लजी १९९ के
कटारी की घूँस दिया चाहता था पीठ का जोर दे-
कर मार डाला जोकि तीर बड़े ज़ोर सें लगा था
और अब दोनों नें आदमी पर ज़ोर दिया इस सें
सूर्य्यमल्लजी १९९ को मूर्छा आगई जब राणाजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नें पूर्णमल्लजी को पूछा कि सूर्यमल्लजी मार लिये तब पूर्णमल्ल नें खुसी सें अर्ज करी कि मारलिये उस आवाज सें सूर्यमल्लजी को कुछ होस आया उस वक्त राणाजी के पूर्णमल्ल वगैरह तीन ३ आदमी एक कतार सें खडे हुवे थे सूर्यमल्लजी १८९ नें एक तीर इस जोर सें छोडा कि तीनों सें फूट निकला उस वक्त मरते हुवे पूर्णमल्ल नें राणाजी सें अर्ज करी कि जो इन को जीते छोडोगे तो ये आप को जीते नहीं छोडेंगे यह सुन कर राणाजी नें सूर्यमल्लजी १८९ के कि जो फिर तीर छोडने के जोर सें वे होश होरहे थे शिर पर तलवार चलाई इन्हों नें होश सें आकर राणाजी को घोडे सें नीचे गिरा कर कटारी सें पेट फाड डाला और एक आदमी जो राणाजी को पानी पिलाने वाला था उस को भी लात सें मार डाला ऐसे राणाजी और पाँच उन के आदमियों को मार कर उसी वक्त सं॰ १५८८ में आप भी स्वर्ग को पधारे एक राजपूत जो सूर्यमल्लजी १८९ के पीछे पीछे आते थे देखरहे थे उन नें आकर यह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाल बूंदी में कही दूसरे दिन दोनों तर्फ की फौज
आपस में लडी और जो राणाजी की फौज बची
सो चीतोड को गई सूर्यमल्लजी १८९ के पीछे
उन के महाराज कुमार सुरताणजी ८ वर्ष की उ-
मर में गद्दीपर बिराजे इन की ऐसी बुरी आदत
थी कि इन्हों नें आप के सब अमीर उमराव ना
खुश कर दिये जो कोई इन के आगे अच्छी अर्ज
करता उस की बेइज्जती करते या मरवा डालते
इस वक्त को पाकर के सरखां और डागरखां इ-
न मुसलमानों नें जैताउत राघवजी के बेटे बी-
रमजी और कन्हजी को निकाल कर कोटे में
अपना कब्जा कर लिया इन को तो फेर भी होश
नहीं हुवा जो कोई इन को अच्छी सलाह देता
उस की बेइज्जती ही करते यहां तक कि सब
उमराव लोग अपणे अपणे घर बैठ गये इस
मोके पर मांइ के बादशाह नें बूंदी फिर घेर-
ली परंतु उस वक्त सामंतसिंहजी और काका
राय मल्लजी और कल्याणमल्लजी वगैरह
बहादुरों नें अपणी अपणी जागीरों में आकर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बादशाह को हटा दिया रायमल्लजी कल्याण मल्लजी सैंहसाजी सात्तलजी ये मारे गये बाक़ी सब उमराव अपणे अपणे ठिकाने चले गये एक सामंतजी सुरताणजी के पास रहे जब इन को भी सुरताणजी १९० ने मारडालणा चाहा तो ये बूँदी सैं निकलकर अपणी जागीर बाँसी मैं जाकर ७०० आदमी जो उन के नौकर थे लेकर शाह सलीम के पास चले गये जो शेर शाह का बेटा था शाह सलीम नैं इन को रण थंभोर के क़िलेदार बना दिये तो ये अपने साथ को लेकर रण थंभोर चले गये बूँदी मैं सुरताणजी १९० के ज़ुल्म सैं अमीर ग़रीब पंच सब दुखी होगये थे सब नैं मिलकर अर्जुनजी के बेटे सुर्जनजी जो चीतोड़ मैं थे उन के पास इस तरह की अर्ज़ी भेजी कि अब सुरताणजी १९० के ज़ुल्म सैं हम सब दुखी होगये हैं जो आप इन को गद्दी सैं दूर करके बूँदी को अपणे क़ब्ज़े मैं नहीं लोगे तो यह राज हाडों के हाथ सैं जाता रहेगा सुर्जनजी नैं यह राणाजी के आगे ज़ाहर करके उन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के कहनें सें यह लिख भेजा कि फौज खर्च वा-
स्ते बीस हजार रुपैये भेजो तो मेरा आणा होस-
के जब बूंदी से लिखे मुवाफिक रुपैये आगये
तो येभी फौज को लेकर बूंदी के पास सतूर में
पधारे सुरताणजी १८० नें यह खबर सुन कर
राज के आदमियों सें सबब पूछा तो उन्हों नें उ-
परी दिल सें यह अर्ज करी कि ये बडों के चौंत
रों के दर्शन वास्ते आये हैं परंतु आपपाटणमें
पधारिये नहीं तो कुछ दंगा होजायगा सुरता-
णजी यह सुनकर राज के आदमियों की साथ
पाटण को पधारे वे लोग सुरताणजी को छोड
कर सुर्जनजी सें आमिले सं·१६११ में ३६ वर्ष की
उमर में सुर्जनजी १६१ गादी पर बिराजे और
अमीर गरीब सब को राजी किया सुरताणजी
नें जब यह खबर जाण ली तो अपणे राणीजी
वरोरह को लेकर राय मल्लजी खींची पास प-
धारे उन नें इन के गुजरान वास्ते बडोद का
परगना दिया इन के वंश के सुरताणोत के
हाडे कहलाये सुर्जनजी १६१ के दूदाजी १६२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भोजजी १९२।२ और रायमल्लजी १९२।३
ये तीन महाराज कुमार हुवे दूदाजी के दूदा-
उत और रायमल्लजी के रायमलोत हाडा क-
हलाते हैं सुर्जनजी नैं सं·१६१४ मैं केसरखां
और डागरखां को जिन नैं कोटादाबलियाथा
मारकर कोटा पीछा लेलिया और रायमल्लजी
खींची सैं मऊका परगना लेलिया इन दिनों
मैं शेरशाह और सलीमशाह के अमीर जो प-
हलां रणथंभोर के किले मैं रहते थे उनों नैं
सामंतसिंहजी किलेदार सैं कही कि किले मैं
आयर दिये और हम को निकाल दीजिये नहीं
तो अकबरशाह मार डालेगा सामंतजी नैं ये
तो निकाल दिये और सुर्जनजी १९१ के नाम
यह लिख भेजा कि अब किले मैं अपना कब्जा
कर लेना ठीक है तब सुर्जनजी १९१ सं·१६२०
मैं उहां थोडीसी फौज लेकर पधारे और अपनी
तर्फ सैं सामंतसिंहजी कूं ही क़िलेदार रक्खे
उन दिनों मैं सुरताणजी अकबर के पास जार-
हे थे अकबर नैं इन को कितनेक तोपखाने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के मालिक कर दिये जब चीतोड पर अकबर
की चढाई के वक्त लाखेरी के मुकाम सैं सुरता
णजी नें कित्तनीक फौज के मालिक को कुछ
लालच देकर बूँदी की तर्फ मोड कर बूँदी पर
लडाई करणा चाहा बूँदी मैं सुर्जनजी के भाई
रामसिंहजी थे उनों नें दो बार तो रात को धावा
मार कर फौज भगादी और कुछ बादशाही फौ-
ज की तोपैं लूटली जब सुरताणजी और फौज
के अफसर के आपस मैं बिगाड होगया राम-
सिंहजी नें इस बिचार सैं कि सुर्जनजी १९१ तो
रणथंभोर मैं हैं और यहाँ बादशाह सैं बिगाड ठीक
नहीं बादशाह की तोपैं पीछी देकर अफसर के
साथ ऐसा मेल कर लिया कि उस नैं बादशाह
का दिल सुरताणजी सैं फेर दिया और बादशाह
नैं भी बिना परवानगी बूँदी पर चढने के कुसूर
सैं सुरताणजी वे तर्फ कर दिये तो सुरताणजी
निरास होकर रायमल्लजी सींची पास चलेगये
अकबरशाह चीतोड मैं अपना दखल कर के
रणथंभोर किला लेणे वास्ते उहाँ आया पहलो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तो कोई दिन लडाई रही और जब किला टूटनें
की उम्मेद कम होगई तो सुर्जनजी १९१ को
जोर दिही के रस्ते समझाणे वास्ते जयपुर के
राजा भगवंतसिंहजी भेजे जब जोर सैं काम न
हीं हुवा तो अकबर नैं भगवंतसिंहजी सैं यह
कहा कि तुमहिं हूलोगा तुम्हारी जात की तर्फ
दारी सैं कहते नहीं हो यहकहकर जलेब दार की
सूरत बणा कर भगवंतसिंहजी के साथ एक
दिन अकबर आपही गया जब भगवंतसिंह
जी नैं पहली तरह सैं कहा तो सुर्जनजी १९१
नैं यहीजबाब दिया कि हम डर सैं किला कभी
नहीं छोडैंगे जब भगवंतसिंहजी नैं कहा कि
आज कल मुसलमानों का प्रतापवधरहा है
और जो आप का विगाड कुछ बादशाह सैं न
हो सका तो आप के बेटे पोतों पर कोई तरह
की तक्लीफ पहुंचेंगी इस वक्त जो आप इकरा
र किया चाहैं सोभी होसक्ता है सो उस इकरार
पर किला खाली कर देणा ठीक है तब तो कुछ
दिल सैं बिचार कर सुर्जनजी १९१ नैं यह कहा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि ये सात ७ बातें जो नीचे लिखी हैं सो मंजू
र होवें ॥ और कुछ मुल्क भी मिले तो किला
खाली होसक्ता है पहले १ हम हमारी बेटी बा
दशाह को नहीं देवें १ दूसरी हमारे रणवास
के लोग नोरोजे में नहीं जावें तीसरी अटक
पार हम नहीं उतरें चोथी हम आमखासदरी
खाने में शस्त्र लेकर जावें पाँचवीं लाल कोट
तक हमारा नक्कारा बजे छठी हमारे घोडों के
दाग नहीं लगें सातवीं हम किसी हिंदू राजा
के हुक्म में होकर लडाई में नहीं जावें जब यह
बात अकबर नें सुनी तब तो डेरे में आकर सातों
७ कलमों की और सात ७ परगनों की लिखा
वट लिख कर भेजदी और एक लिखावट इस
तरह की भी भेजी कि जो तुम गुडवाणा फत
ह करो तो ५२ परगने जैसा चाहो वैसे मिलेंगे
इन लिखावटों को लेकर सुर्जनजी १६१ नें
किले में सें दो भगवान की मूर्ति और धूलधाणी
१ और कटक विजली नाम दो तोपें निकाल
कर संवत १६२४ में किला खाली कर दिया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन मूर्त्तों में सें एक तो बूंदी के बाजार मैं चतुर्भु
जजी की है दूसरी बारां मैं कल्याणरायजी की
है जो उहां रावराजा रत्नजी १९३ की माताजी
नें पधराई है जब बादशाह के वास्ते किला खा
ली किया तो सामंत सिंहजीनें सुर्जनजी १९१ सें कहा
कि आप तो बादशाह की बंदगी करो हम तो इस
किले को मरे बिना नहीं छोडेंगे आखिर बादशाह
की फोज सें लड कर मारे गये किले मैं बादशाह
का कब्जा होगया सुर्जनजी १९१ नें गुडवाणे मैं बारी
गढ के गौडों को जीत कर बारी गढ मैं बादशाह
का कब्जा करदिया वहां अपनें नाम का दरवाजा
बनाया वहां के राजा की बादशाह आगे बडाई क
के और कुसूर माफ करा के बारी गढ पीछा दिवाया
इस बात पर अकबरने सुर्जनजी १९१ को रावराजा
पदवी और अपनी सवारी का हाथी १ घोडा १
पोशाक गहणा हथियार और पंज हजारी का
मुन सब दिया साथही ५२ परगने दिये और
काशी सिवायदी इन परगनों मैं हिंगुलाजगढ १ शाहाबाद २ मालपुरा ३ टोडा ४ टोंक ५

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामपुरा ६ सेरगढ ७ केकडी ८ सिरोंज ९ बर॰
वाडा १० बाला भेट ११ खाताखेडी १२ भिलसा १३
खंडार १४ मलारणा १५ चैनपुर १६ बाडी १७
खेडी १८ रतनगढ १९ सिंघोली २० भैंसरोड २१
केथोली २२ साढोरा २३ गूरोर २४ खलचीपुर
२५ आगर २६ ये परगनें तो बूंदी के पास दिये
और चनारगढ मांडारामगढ वगैरह २६ परग॰
ने काशी के पासदिये इन को लेकर सुर्जनजी
१९१ बूंदी मैं पधारे इन दिनों मैं सुर्जनजी की रा॰
णी कनकवतीजी नैं दुधारी मैं कनक सागर ना॰
म तालाव बणाया सुर्जनजी १९१ नैं दूदाजी को
बूंदी और पाटण भोजजी को लाखेरी और खटक
ड रायमल्लजी कों पलायता और मांगोद बख्शे
आप रणवास सुधां काशी मैं पधार कर राजमंदि॰
र बणाया जो हाल तक मौजूद है इसैं पीछे बा॰
दशाह पास आकर दूदाजी और भोजजी को
बुलाकर बादशाह के आगे हाजर किये परंतु
बादशाह नैं खूबसूरती अच्छापहराव गहणा
वगैरह देखकर भोजजी को बडे समझ कर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन कोही पहली खिलअत दी उस सैं पीछे दूदा
जी को दी उस वक्त दूदाजी नाराज हो कर डेरे
को आते वक्त बादशाह को सलाम भी नहीं करी
तब बादशाह नैं हँसकर इन को दूदाल कड खाँ
का खिताब दिया दूदाजी १९२ नैं रस्ते सैं आते
वक्त भोजजी १९२ को मार डालनैं का उपाय
किया था सो भोजजी की होशयारी सैं टल गया
जब बादशाह को खबर हुई कि बडे तो दूदाजी
१९२ थे हमनैं पहली खिलअत भोजजी १९२
को दी तब तो सुरजनजी १९१ सैं कहकर दोनों भा·
ई फेर बुलाये और जैसी ठीक थी वैसी उन के सा·
थ मुलाकात करी जिस वक्त सूरत सैं एक मुसल
मान नैं अपनैं को जुदा बादशाह बणा कर गुज
रात तक कब्जा कर लिया था उस वक्त की लडाई
सैं अकबर की साथ दूदाजी १९२।१० और भो·
जजी १९२।२ दोनों थे वहाँ भोजजी १९२।२ नैं
बडी बहादुरी सैं सूरत का बादशाह मार लिया
उस वक्त राजी हो कर अकबर नैं कहा कि अब
हमारी तर्फ सैं बूँदी का राज तुम को मिला भोज·

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी १९२ ने भी राजी होकर सलाम करी और
जब दखण में अहमदाबाद की चाँदसुल-
ताना बेगम जो बडी बहादुर औरत थी उसकी
साथ अकबर की लडाई में भोजजी १९२ भी थे
वहाँ इनों नें सीढी लगाकर किले में जाकर कि-
ला फतह किया और वहाँ एक बुर्ज बणाई जो
अब भोज बुर्ज कहलाती है जब इस फतह सें
खुश होकर अकबर नें कहा कि बूंदी तो तुम
कों पहली ही दी है अब फिर जो तुम मांगोसो
हम देते हैं तब भोजजी नें यह मांगा कि हमा-
री फोज के पास गायों का मारणा और भगवा-
न के मंदिर और मूर्तों का फोडना नहीं होय
और बरसात के दिनों में रुखसत के बिना भी
हम हमारे देश में चलेजाया करें और बादशा-
ह की सवारी के वक्त हम हुक्म के बिना भी घो-
डे पर सवार होकर साथ चलें ये सब बातें बाद-
शाह नें मंजूर करी सुरजनजी १९१ भी काशी सें
दिल्ली पधार आये थे जब दूदाजी नें सुर्जनजी १९१
का चित्त भी भोजजी की ही तर्फ देखा तब तो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खुला खुली भोजजी सैं दुश्मनी करने लगा-
ये और बादशाह सैं बागी होगये फतहपुर
सीकरी मैं बादशाह का तबेला लूट लिया रा-
ठोड बलभद्रजी मारवाड का रहनेवाला धा-
दी बादशाह का बदख्वाह था और रामपुर मैं
चंद्राउतों के अपणा व्याह करने को जानें
मैं बादशाह की फौज सैं डरता था उस की मदद
करके व्याह कराया और अच्छी तरह उस के घर
पहुँचा दिया एक बार बलभद्र मुद्दा बादशाही
फौज सैं घिर भी गये थे परंतु कुछ उन का बिगा-
ड नहीं हुवा और बूँदी मैं आगये और बादशा-
हनें भोजजी को बूँदी दिलाने वास्ते उन के साथ
सुर्जनजी १९१ के काका के बेटे भाई सिंहजी और
मुहब्बतखाँ फौज मुद्दा भेजे जब यह फौज दू-
दाजी नें बडदाकुमारती के बीचले मुकाम मैं
रात को धावा मार कर मुहब्बतखाँ समेत
मार भगाई तो फेर सुर्जनजी १ के साथ भोज-
जी और नवाब रणमस्तखाँ फौज दे कर भे-
जे और यह कही कि दूदाजी को समझाकर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ ले आओ यहाँ आजाने पर उन को बूँदी के एवज दूसरा राज मिलेगा जब बूँदी के पास आकर सुर्जनजी १९१ ने दूदाजी सें यह बादशाह की कही हुई बात फर्मा भेजी तो दूदाजी ने जबाब भेजा कि भोज और रणमस्त खाँ के साथ एक लडाई होणे पीछे जो आप फर्मावोगे सो करूँगा दूसरे दिन बूँदी के पास मथूर में देवीजी की पूजन कर्ते हुवे दूदाजी बादशाही फौज नें घेरलिये इन्हों नें खूब लडाई करके फौज भगादी दूसरे दिन रात के वक्त धावामारा भोजजी और रणमस्त खाँ भागकर छिपगये माल बहुतसा दूदाजी नें लूटलिया सुबह के वक्त दूदाजी आकर सुर्जनजी १९१ के कदमों में गिर पडे रणमस्त खाँ नें कहा कि हमारे तुमारे बीच में अल्लाहे तुम को जीवका डर कभी नहीं होवेगा जब ये इन के कहनें सें बादशाह सें आमिले ॥ तो बादशाह नें ऊपर सें तसल्ली करी कोई बहानें सें दूदाजी और रणमस्त खाँ तो पहली लाहोर को भेजदिये पी-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छे सैं जयपुर के राजा मानसिंहजी को काबुल
भेजते वक्त यह कहा कि दूदाजी को मारकर
या पकड कर काबुल को जाइयो जब यह ख-
बर रणमस्त खाँ के बेटे ने अपने बाप को
लिख भेजी इस नैं दूदाजी सैं कही तो दूदाजी
बूंदी आये रस्ते मैं नानणा के मुकामपर
जब यह खबर पाई कि बूंदी मैं भोजजी का
कब्जा करणे वास्ते जो बादशाह ने फौज के
साथ नौशेरखाँ भेजा है सो इहाँ पडा है तब
रात मैं धावा मार कर इन ने उस को मार भगाया
तब तो बादशाह ने बहुत फौज भेजी उस वक्त
लडाई कर्के सं.१६३२ मैं दूदाजी बूंदी सैं निक-
लगये बूंदी मैं भोजजी १६२ का कब्जा होगया
दूदाजी ने बूंदी और दिल्ली के मुल्क मैं लूटम-
चाई दिल्ली मैं बीजापुर के बादशाह का राज
करादेने के उपाय मैं बीजापुर को जाते थे पर
तु मालवे के देवगाँव मैं वहाँ के आदमियों
नैं जहर दे दिया इस सैं सं.१६३८ मैं परलोक
पधारे इनों नैं बूंदी मैं तारागढ के नीचे महल

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बनाये सो दूदाजी के महल कहलाते हैं गीह-
डगढ नाम किला बनाया जो बूंदी सें सात आ-
ठ कोस पर मौजूद है इन के चतुर्भुजजी १९३।१
जिन को अमरसिंहजी १९३ भी कहते हैं पर-
सुरामजी १९३।२ और स्यामसिंहजी १९३।३
ये तीन बेटे हुवे सुर्जनजी १९१ ने काशी के
पास एक बाग बनाया और सं॰ १६४२ में काशी
में देहांत हुवा मणिकर्णिका के घाट के पास
ब्रह्मनाली के बीच इन की राणियों के चौंतरे
हैं जहां वे सती हुवे थे सुर्जनजी १९१ के पीछे
३५ वर्ष की उमर में भोजजी १९२ गद्दी पर बिरा-
जे इन के रत्नजी १९३।१ हृदयनारायणजी।
१९३।२ केशवदासजी १९३।३ मनोहरजी १९३।४
ये चार महाराजकुमार हुवे एकदिन जयपुर
के महाराज मानसिंहजी ने बादशाह के आगे
यह चुगली करी कि जहांपनाह जब सूरत का
बादशाह भोजजी १९२ के हाथ सें मारागया
था उस वक्त उस की पाग के सर पेच में जो
बडे मोल का हीरा था सो भोजजी १९२ के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाथ आगया था सोइन के पास है जब बाद-
शाह ने दरीखानें में भोजजी १९२ से कहा कि
वह हीरा तुमारे पास है सो हम को भी दिखा
ओ इन्हों नें कटारी पर हाथ रख के कहा कि
वह इसी जगह में है जिस ने कहा है वे वक्त
पाकर देखही लेंगे इस बात सें मानसिंह को
बडा रंज हुवा जब कि बादशाह की मा मरगइ
उस वक्त बादशाह ने हुक्म दिया जो हिंदू सरदा-
र हैं वे अपणी चाल के माफिक सब डाढी मूं-
छ मुडवावें उस वक्त और सरदारों ने तो बादशा-
ह का हुक्म माना इन्हों ने डाढी मूंछ नहीं मुंड-
वाये उस वक्त किसी का मकदूर नहीं था कि जो
जबरदस्ती सें इन की मूंछ मुंडवाता परंतु बा-
दशाह ने नाराज होकर बूंदी के पास के २६ पर
गने और काशी के पास के १९ परगने उता-
र लिये फक्त काशी के पास ७ सात परगने रहे
जब इन्हों नें बादशाह के हुक्म सें हीरासिंह
नाम सिकव को जिस ने लाहोर की तर्फ लूट
मार मचार कवाथी मारडाला तो इन के वास्ते

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मालपुरा १ टोंक २ दोडा ३ ये परगने फेर मिले जब कि बुंदेलों के बंदोबस्त वास्ते इलाहाबाद का सूबा शरीफखाँ को मिला और उसकी अर्ज के माफिक बादशाह ने चुनार का किला उसके नीचले परगनों सुद्धां शरीफखाँ को देदेणे का परवाना रत्नजी १९३ के नाम भेजा तो रत्नजी १९३ ने कहा कि मैं मेरे पिताजी की परवानगी बिना नहीं दूंगा इस बात पर तकरार होने सें रत्नजी १९३ नें शरीफखाँ को मार डाला तो बादशाह नें खफा हो कर सात परगनें सुद्धां काशी भी उतार ली अकबरशाह के मरने पीछे जब जहाँगीर तख्त पर बैठगया तब भोजजी १९२ ने बूंदी में आकर हृदय नारायणजी १९३।२ के वास्ते आबों १ दूणी २ कोटा ३ ये जागीर मैं बखशे केशोदासजी १९३।३ को बंडोद और मनोहरजी १९३।४ को बंभोरी और डाबरी दिये संबत १६६४ के आषाढ शुदि ४ के दिन भोजजी १९२ का देहांत हुवा इन्होंनें नवलखा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाग बनाया जहाँ अब नवल खा तालाब है और बादलमहल फूलमहल और हथियोंसाल ये बणाये इन की राणीजी साहिबा बालणोतजी ने पहले कटले में बावडी बणाई कालीजी ने रंगमंडप बणाया इन की खवासजी फुलवलता ने संवत् १६५९ में कोटड़ा का तालाब और उस की पाल पर बाग बणाया भोजजी १९२ के पीछे रत्नजी १९३ गद्दी पर बिराजे इन के गोपीनाथजी १९४।१ माधवसिंहजी १९४।२ हरिसिंहजी १९४।३ जगन्नाथजी १९४।४ ये चार महाराज कुमार हुवे हृदयनारायणजी १९३।२ के हरदावत केशोदासजी १९३।३ के केशोदासभोज पोता कहलाये और मनोहरजी १९३।४ के सबलसिंहजी और भोपालसिंहजी इन दोनों के बेटा नहीं हुवा जब रत्नजी १९३ दिल्ली को पधारे उन दिनों में जहाँगीर बादशाह के बेटे खुरम ने दखण में लूट मार मचाई थी उस के पकडने वास्ते बादशाह ने रत्नजी १९३ को भेजे इन्होंने खुरम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को हराकर भगादिया और बुरहानपुर मैं रहे उन्हीं दिनों मैं संवत १६७१ मैं २५ वर्ष की उमर मैं महाराजकुमार गोपीनाथजी का स्वर्गवास हुवा इन के शत्रुशालीजी १६५।१ इंद्रशालजी १६५।२ बैरीशालजी १६५।३ राजसिंहजी १६५।४ मुहकमसिंहजी १६५।५ महासिंहजी १६५।६ उदयसिंहजी १६५।७ सूरसिंहजी १६५।८ स्यामसिंहजी १६५।९ केसरीसिंहजी १६५।१० कनकसिंहजी १६५।११ नगराजसिंहजी १६५।१२ रामसिंहजी १६५।१३ ये हुवे. माधवसिंहजी १६४।२ के माधाणी हरीसिंहजी १६४।३ के हरीजी के हाडा और जगन्नाथजी १६४।४ के जगन्नाथोत कहलाये रत्नजी १६३ नै बुरहानपुरसैं बारीगढ के पास तिमरनी के गौडजीते और महाराज कुमार गोपीनाथजी १६४ की खबर सुनकर बहुत उदास हुवे बुरहानपुर का सूबा बादशाह नै इन के हवाले किया जब खुर्रम भागकर उदयपुर के राणा करणसिंहजी के पास चलागया था उसवक्त

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्णसिंहजी के भाई भीमसिंहजी सैं लडाई
वास्ते बादशाहकी फौज आईथी उसमैं हृदयना-
रायणजीथे सो लडाई सैं भागकर बूंदीमैं आग-
ये इस कुसूरपर कोटा और कोई गाँव उनके र-
त्नजी १९३ मैं उतारलिये जब उदयपुर सैं भाग
कर खुर्रम नैं दख्खणमैं जाकर फेर एकलाख
१००००० फौज इकट्ठी करली और आधी फौज
बुरहानपुर परलड़नेकों भेजी आधी फौज सैं
थोडीसी दूर पर आपरहा जबरत्नजी १९३ नैं
शहरसे बाहर निकल कर फौज भगादी और
बहुत दूर तक उसका पीछा किया तो पीछे सैं
खुर्रम किलेके सिपाहियों को मारकर बुरहा-
नपुरके किलेमैं आघुसा इस बात को सुन
कर रत्नजी १९३ पीछे आये तो शहरके दख-
णीदरवाजे को हाथी सैं तुडाकर शहरमैं दाखि-
लहुवे और लडाई करके खुर्रम को पकडलि-
या और उसकी फौजके जो मरहटे और मुसल
मानथे घेरलिये जबरत्नजी सैं उन मरहटे और
मुसलमानोंनैं यह अरज करी कि आप हमको

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवते छोड़दीजिये और जो हम को हथियारों समेत इज्जत के साथ निकालदेवें तो यह कौल करते हैं कि जब दिल्ली की फौज के साथ हमारी लड़ाई होय तो हम हाड़ों सें कभी नहीं लड़ेंगे और हाड़ों के निशान देखतेही चलेजाया करेंगे यह इकरार सदा रहेगा इस में कुरान और देवता हमारे आप के बीच में है रत्नजी १९३ नें इस तरह की लिखावट लिखा कर रात को निकाल दिये खुर्रम और मुहम्मद तक़ी क़ैद में रक्खे हरकासजी फौजदार को करवर हरिसिंहजी को कापरण माधोसिंहजी को कोटा और केशोदासजी को हर्गांव दिये और खुर्रम की हिफाजत पर हरिसिंहजी रक्खे इन नें खुर्रम को बहुत दुःख दिया कितने क दिनों के पीछे जब बादशाह का यह हुक्म आया कि खुर्रम और मुहम्मद तक़ी को दरबार में भेजदो तो यह हुक्म रत्नजी १९३ ने खुर्रम को सुनाया खुर्रम नें घबरा कर बड़ी खुशामदी के साथ कहा कि जो मेरे को आप दरबार में भेजोगे तो बादशाह मुज को

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मारडालेगा और यह हरिसिंहजी मुझको ब॰
हुत दुःखदेते हैं इसवास्ते मेरी निगहबानी प॰
र और कोई रक्खाजाय यह सुनकर रत्नजी
१९३ नें खुर्रम की निगहबानी वास्ते माधोसिं
हजी मुकर्रिर किये और यह समझादिया कि
इनको किसी तरह की तकलीफ नहीं होवे
और मुहम्मद तकी के पैरों में लोहे की सांक॰
लडाल कर उन सैयदों के कि जो बादशाह के
फर्मान लेकर खुर्रम और मुहम्मद तकी के ले॰
ने वास्ते आयेथे हवाले किया और खुर्रम के
वास्ते यह कहलाभेजा कि अभी वे बीमार॰
हैं सोरस्ते में मरजाने के डरसें नहीं भेजे इस
बात को सुनकर बादशाह नें रत्नजी १९३ खुर्र॰
म सुहाँबुलाये जब यह हुक्म खुर्रम को सुना
या तो वह बहुत घबराया तब रत्नजी १९३
इन की निगहबानी वास्ते माधवसिंहजी हरिसिं
हजी और केशोदासजी को छोड कर और उन
की खबरदारी की बातें समझाकर आप बादशा॰
ह पास गये और यह अर्जकरी कि जो मैं उनको

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाता तो रस्ते में मर जाते और अब भी उम्मेद
है कि वैसी ही खबर सुन नें में आवेगी बादशा-
ह ने इन को हाथी घोडा सिरोपाव इनाम दिये
और टोंक टोडा रामपुरा मालपुरा चेचकजीर
पुर खैराबाद ये परगने दिये और यह फर्माया
कि तुम्हारे बडों ने भी दुश्मन को पकड कर हा-
जर नहीं किया तुमनें दुश्मन को पकडकर हा-
जिर किया यह बहुत बहादुरी का काम किया ज-
ब अटक के पार कोई किलासर नहीं होताथा
बादशाह ने उस के सरकरने वास्ते रत्नजी १९३
को कहा और रत्नजी १९३ नें सुर्जनजी १९१
की लिखाई हुई सात कलमों के माफिक अट-
क में पारजाने वास्ते इनकार किया तो बादशाह
ने भी समझ कर यह कहा कि तुम बुरहान पुर
जातेही खुर्रम को मारडालना जब इन को वज़ी
रनें चुप के कहा कि बादशाह के यह एकही
बेटा है इसका मारणाठीक नहीं रत्नजी १९३
ने बूंदी में आकर माधवसिंहजी और केशव
दासजी के नाम लिख भेजा कि खुर्रम को रात-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में निकाल देना जब रत्नजी १९३ के लिखे मा-
फिक खुर्रम को निकालने लगे उस वक्त खु-
र्रम नें अहसानमंद होकर यह लिख दिया
कि मेरा जीव रत्नजी १९३ ने बचाया है और
जो परगने बादशाह नें हाल दिये हैं सो बने र-
हेंगे हरिजी की बे अदबी माफ करी जावेगी
और तख्त पर बैठने पीछे माधवसिंहजी को
कुछ मुल्क दिया जायगा खुर्रम सें इस लिखा-
वट को लेकर माधवसिंहजी केशवदासजी
और हरिसिंहजी नें उस को निकाल दिया दि-
न निकलते ही खुर्रम के भागने की खबर हुई
तो किलेदारों ने पहरे के सिपाही क़ैद कर दिये
और रत्नजी १९३ के पास खुर्रम के भागा जाने
की अर्जी भेजी रावराजा रत्नजी १९३ नें वह
अर्जी तो दिल्ली को रवानें करी और आप बुरहा-
न पुर जा कर माधवसिंहजी और हरिसिंहजी
को नजर क़ैद कर केशवदासजी किलेदार मुक-
र्रिर किये जब खुर्रम के भागने की खबर सुन
कर खुर्रम के निकाल देने वाले की तलाश

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करनें वास्ते वेही सय्यद जो खुर्रम को पकड
ने आये थे भेजे और उन्हों नें दर्याफ्त कर के
हार का दासजी का मारणा बिचारा तो लडाई हो
ने में सैयद और हारका दासजी दोनो ही मारे
गये जब इस बात सें गुस्से में आकर बादशाह
की तर्फ सें बूंदी पर हमला करणे वास्ते अजमेर
का सूबेदार अमानत खाँ आया तो उस की फौज
में अखैराजजी के बंश के दयालजी के बेटे भूप
तिजी थे उन्हों नें बूंदी पर लडनें सें इनकार कि
या और भी कई उस फौज के राजपूत इसी बात
में शामिल हुवे तो अमानत खाँ अजमेर को च
लागया जब बादशाह महावत खाँ की क़ैद में
था उस वक्त महावत खाँ के पास गोपीनाथजी
१९४ के बेटे स्यामसिंहजी और लाखेरी वाले
केशोदासजी के बेटे स्यामसिंहजी थे उन्हों ने महा
वत खाँ के इशारे में बादशाह की बेगमों के
गहणे लूट लिये थे जब बादशाह क़ैद सें छूटा
तो गोपीनाथजी १९४ के बेटे तो किसी रीत सें
मारडाले और केशोदासजी के बेटे के वास्ते जो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भागकर लारवेरी में आयुसेथे रत्नजी १९३ को
लिख भेजा कि स्यामसिंहजी को जरूर मारडाल
ना रत्नजी १९३ ने यह बात बूंदी में शत्रुशाल
जी १९५ को लिखी तो इन्हों नें स्यामसिंहजी
मारडाले इसबात पर बादशाहराजी होगया
संवत १६८४ में जहांगीरमरगया और खुर्रम
शाहजहां के खिताब में तख्त पर बेठा जब रत्न
जी १९३ बूंदी में पधारे माधवसिंहजी १९४।२
के वास्ते खजूरी १ अरंडखेडा २ केथून ३ आवों
४ कनवास ५ मधुकरगढ ६ डीगोद ७ ये परग
ने सिवाय दिये और माधवसिंहजी के माताजी
भी कोटे में पधारगयेथे इस सें नानत्ता वरोरह
५ गांव जो माधवसिंहजी १९४।२ के माताजी
की जागीर के थे सोभी उन के परलोक होनें
पीछे माधवसिंहजी १९४।२ के नीचे आगये
ऐसें हरिजी १९४।३ को सारसलामक वरोरह ७
गांव और दिये जगन्नाथसिंहजी को १९४।४
बालाहेडा वरोरह गांवदिये गोपीनाथजी १९४
के बेटे इंद्रशालजी कों अणघोरा १ छीपरी २

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ककराबदा ३ ये जागीर मैं दिये और इंद्रगढ
नाम शहर उन्हों नें अपनें नाम सैं बसाया और
इंद्रशालजी के छोटे पोते अमरजी नें गौडों कों
मार कर खातोली मैं कब्जा कर लिया और इंद्रशा
लजी के छोटे बेटे अणदसिंहजी को इन के मा-
माजी ने अपना मुल्क नीबोला देदिया और र-
त्नजी १९३ ने बैरीशालजी कों बलवण १ आ-
मथूण २ वग़ैरह जागीर मैं बख़्शे और मुहक-
मसिंहजी को करवर महासिंहजी को जजावर
और राजसिंहजी को हरिगढ बख़्शा जब कि
शाहजहाँ नें हरिजी बुलाये और रत्नजी ने नहीं
भेजे तब तो इन के वास्ते नये दिये हुये ७ परगने
उतार लिये फिर बादशाह के हुक्म सैं रत्नजी १९३
बुरहानपुर को पधारे उस वक्त शत्रुशालजी १९५
के बेटे भावसिंहजी १९६ साथ थे उहाँ बहुत से
मुल्क बादशाह के कब्जे मैं करे और संवत १६८८
मैं गोदावरी नदी के किनारे स्वर्ग को पधारे इनों
नें नोहाण १ रत्नदोलत नाम दरीखाना २ रत्न-
निवास ३ रत्नमहल ४ जिस कों नारीकुंजर भी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहते हैं रत्नमंदिर ५ जिस कौं खरबूजा महल-
भी कहते हैं जनाना मैं रसोई है रत्नमंडप ७ और
शहर के चौतर्फ कोट बुर्ज वगैरह बणाये छा-
रबाग १ रत्नबाग २ ये दो बाग बणाये ये सब हा-
ल मौजूद हैं रत्नजी १९३ के पीछे २५ बर्ष की
उमर मैं उन के पोते शत्रुशालजी १९५ गद्दी पर
बिराजे जिन को छत्रशालजी भी कहते हैं उन
के भावसिंहजी १९६।१ भीमसिंहजी १९६।२
भारतसिंहजी १९६।३ भगवंतसिंहजी १९६।४
भूपतिसिंहजी १९६।५ भूपालसिंहजी १९६।६
और ईश्वरीसिंहजी १९६।७ ये सात महाराज कु-
मार हुवे इंद्रसालजी के इंद्रसालोत वैरीशालजी
के बैरीसालोत मुहकमसिंहजी के मुहकम
सिंहोत महासिंहजी के महासिंहोत कहलाये
राजसिंहजी का बंश ४ चार पीढी सैं पीछे नहीं रहा
बाकी भाइयों के बेटा नहीं हुवा छत्रशालजी १९५
के वक्त मैं केशव नाम सोमाणी जात के महाज-
न को जिसने रत्नजी १९३ के स्वर्गबास पीछे
कहत साली मैं बुरहानपुर मैं जो रत्नजी १९३

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की फौजथी उस की बडी निगाहबानी करी और
अच्छी तरह सैं फौज कों बूंदीमैं ले आयाथा दल-
थंभण की पदवी मिली ये जब दिल्लीमैं शाहज-
हां के पासगये शाहजहांने इन को वह शिव-
प्रसाद हाथी जोरत्नजी १९३ ने बादशाह की न-
जरकियाथा घोडे सुद्धां दिया उन दिनों मैं दखण
मैं मुसलमान और मरहटों ने लूट मार मचारक्खी
थी उन को मारणेवास्ते १०००० फौजके साथछत्र
शालजी भेजे इन्होंने उन को मार भगाया उनका
सरदार जहांनखां कीलागढ मैं जाघुसाथा उस्के
३ बेटे तो मारलिये और वहछिपकर भागगया
उन की लूट शत्रुशालजी १९५ के हाथ आई
फक्त तोपैं बादशाहने ली जबये दिल्लीमैं आ-
ये बादशाह बहुतराजी हुवा उस वक्त शत्रुशा-
लजी १९५ ने अर्ज करी कि यह फतह मेरे का-
का हरीजी की बहादुरी सैं हुई है जो वे नहीं हो
ते तो जीतना मुश्किलथा अबयह अर्ज है
कि जो पहले दिनों मैं इन्होंने बेअदबी करी
थी सो माफ होय बादशाह ने राजी होकर हरि-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी कों गूंगेर का पटा दिया इस सें पीछे छत्रशा-
लजी १९५ बूंदी पधारकर उदयपुर के राणा जी
की बहण सें व्याह करने पधारे वहां ७०० हाथी
और एक एक हाथी के साथ खासा पोशाख ब-
खशी इन दिनों में बरसिंह नाम बुंदेलखंड का
रहणे वाला जो जात में किसी रीत कम था और
शाहजहां की मिहरवानी सें जोर पकड बैठाया
उस ने अपनी लडकी का व्याह भावसिंहजी
१९६ सें करने वास्ते बूंदी को वकील भेजा जब
लालच देने सें भी यह छत्रशालजी १९५ ने
नहीं मानी तो वकील पीछे गये बरसिंह इस
बात सें बूंदी पर चढ आया और लडाई में मारा
गया इन दिनों में शाहजहां काबुल पर चढा था
उस वक्त अटक सें पार उतरने में सब हिंदुस्ता-
नी राजा औनें नाहकरी परंतु माधवसिंहजी
बादशाह के साथ अटक के पार चले गये जीत
होजाने पीछे बादशाह ने खुश होकर बारां २
मऊ २ ये दो परगने जो बूंदी के नीचे थे माधव
सिंहजी को देदिये कोटा पहली इन के पास जागी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रमैंही था बादशाहनैं इन को राव पदवी देकर
जुदा राजा बणादिये कितनेक दिनों पीछे छत्र
शालजी १९५ शाहजहाँ की तर्फसैं उस के बेटे
औरंगजेब के साथ दखणमैं पधारेथे वहाँ उन
की बहादुरीसैं नासिक १ त्र्यंबक २ बिदर ३
कल्याणी ४ और धामनी ५ गोलकुंडा ६ के
किलेसरहवे बादशाहनै खुश होकर टोंक १
मालपुरा २ केकडी ३ हथणीगढ ४ हिंगलाज
गढ ५ केथोली ६ पानगढ ७ भैंसोद ८ ये पर-
गने दिये परंतु बारांमऊ जो माधवसिंहजी को
दिवादियेथे नहीं दिवाये जबकि शाहजहाँ नै
औरंगजेबसैं दाराशिकोह की लडाई के वक्त छ-
त्रशालजी १९५ बुलाये उस वक्तसैं पहलाँहीं बा-
राँ १ मऊ २ के परगने इन को लिख दियेथे इनों
नै दोनों परगनों पर अपना कब्जा करलिया औ-
र बादशाह के हुक्मसैं दिल्ली जाते वक्त इनों नै
भावसिंहजी १९६ को राज देदियाथा और यह
अच्छी तरहसैं जानलियाथा कि अब इस लडा-
ईमैं नहीं बचैंगे बादशाहनै बडी मिहबानी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करी उसवक्त आगर १ सागर २ छबडा ३ वग़ैर
ह परगने और दिये और हक़ हजारी का मुनस
ब देकर औरंगजेब सें लडने को भेजे इसलडा
ई मैं धौलपुर मैं बडी बहादुरी सें संवत १७२५
मैं काम आये उन के अबतक वहाँ चौंतरे मौ
जूद हैं धौलपुर के लोग उन को रण के चौंतरे
कहते हैं इनौं नें पाटण मैं केशोरायजी का मंदि
र १ बूँदी के चौगान मैं हर्षदादेवी का मंदिर २
चौगान दरवाजा ३ और मौंडकदरा ४ ये दोशह
र के दरवाजे छत्रमहल ४ बणाये और भी सत
र के पास बाग और बूँदी के पास तालाब वग़ैर
ह बनाये इन के पीछे भावसिंहजी ३५ वर्ष की
उमर मैं गद्दी विराजे इन के महाराजकुमार न
हीं थे इस वास्ते अपने छोटे भाई भीमसिंहजी।
१९६।२ के बेटे कृष्णसिंहजी १९७ गोद लिये भीम
सिंहजी १९६।२ के कृष्णसिंहजी सें सिवाय कोई
बेटे नहीं थे बाकी भारतसिंहजी वग़ैरह के बेटे
नहीं हुवे जो कि शाहजहाँ की तर्फ सें छत्रशाल
जी १९६ औरंगजेब से लडे थे और उसी लडाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में काम आयेथे और छत्रशालजी १९५ के चौथे
महाराजकुमारभगवंतसिंहजी १९६।४ पहः
ली सैं हीं औरंगजेब की तर्फ थे इस वास्ते जब
भावसिंहजी दिल्ली में पधारे तब तख्त औरंगजे
ब के हाथ आगयाथा उसीदुश्मनी सैं भावसिंह
जी १९६ काढाई हजारी मुनसबरहणे दिया वा
रैंमक और टौंक मालपुरा वगैरह परगने जो दख
ण की फतह सैं शाहजहाँ नैं दियेथे सब उतार
कर भगवंतसिंहजी १९६।४ कों देदिये और ढाई
हजार का मुनसब देकर राव खिताब के साथ जु
दा राजा मुकर्रिर करदिये जब संवत १७२३ में
शाहजहाँ के मरनैं पीछे औरंगजेब तख्त पर बै
ठा और सब राजा बुलाये और यह कहा कि तुम
लोग बेटी देकर दूर होजाते हो अब यह ठीक है
कि सब हमारे शामिल बैठ कर खानाखाओ कि
तुमभी हमारे दीन को मंजूर करो और तुम को
दूणाराज दियाजायगा तब तो सब घबराये औ
र मनसूबा करने लगे भावसिंहजी १९६ नैं
कहा कि एक दिन मरणा जरूर है फेर धर्म कों

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छोड करजीणाठीक नहीं तबजयसिंहजी जय-
पुरवालों नें बादशाह के आगे एकांत मैं नर्मी
के साथ अर्ज करी कि हमलोग जो मुसलमान
होजांयगे तो बूंदी और उदयपुरके राजाजो हा-
लतक बादशाह को बेटी नहीं देतेहैं हम को
भी नहीं देंगे न हमारी लेंगे और मुसलमानलो-
गभी हमसें नफरत करेंगे फेर हमारे बेटा बेटी
कुमारे रहेंगे इस सें इसवक्त आप बूंदीवाले भा-
वसिंहजी १९६ सें मंजूर करावो तो हमभी मंजूर
करलेंगे तब तो बादशाहने गुस्से मैं आकर यह
हुक्म और दिया कि जहांजहां देवतों के मंदिर
हैं सब फोडे जावें और उनके मसाले सें मस्जिदें
बणवादीजावें जब यह भावसिंहजी १९६ नें
सुनी तो महाराजकुमार कृष्णसिंहजी १९७ के
नाम बूंदी मैं यह हुक्म भेजा कि हम को तो यह
बादशाह मुसलमान बनाया चाहता है इस
वास्ते हमनें तो यहां मरणा पडेगा परंतु बादशा-
ह के भेजे हुवे आदमी मंदिरों को फोडनें वास्ते
आवें तो जबतक तुम जीवते रहो तबतक यह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काम नहीं होने पावे इन्हीं दिनों में बादशाह
के भेजे हुवे ५००० आदमियों ने पाटण में के
शवरायजी का मंदिर फोडना शुरु किया परंतु
मंदिर के ऊपर का सोने का कलसही उतार ने
पाये थे इतने में कृष्णसिंहजी १९७ ने बहादुरी
से उन को मार भगाया और उन के डेरे लूटलिये
इनहीं दिनों में मऊ में भगवंतसिंहजी १९६।४
मरगये उन की माताने बूंदी से कृष्णसिंहजी
बुलाकर भगवंतसिंहजी की गद्दी पर बिठादिये
जब यह भावसिंहजी १९६ ने सुनी तो बूंदी में
आप के कामदारों के नामलिख भेजा कि अब
कृष्णसिंहजी को बूंदी में मत आणे देणा और
उस का बेटा अनिरुद्धसिंह हमारी तर्फ से गोद
ले लेणा जब बादशाह ने केशवरायजी का मंदि
र फोडने पर आप के आदमियों का यह हाल
सुना तो गुस्से में आकर भावसिंहजी १९६ में
कहा कि कृष्णसिंहजी को पकड कर यहां लाओ
इनों ने अर्ज करी कि वह तो हम से बदल कर भ-
गवंतसिंहजी के मरणे पीछे उन की जगह बैठ-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया तब तो बादशाह नैं कहा कि तुमारे मऊ
बाएँ जो परगनैं थे उनपर तुम कब्जा कर लो तब
तो उनों ने खुशी सैं वहाँ कब्जा कर लिया जब कि
संवत १७२४ मैं भादों शुदि १० के दिन बादशाह
नैं यह कहा कि तुम हिंदू लोग तुमारा धर्म नहीं
छोडते हो इस का फल अच्छा नहीं होगा जो
काल्ह के दिन तुमारे मूर्त्तों को बाहर निकाल
ते हैं सो कोई निकालनैं नहीं पावे जब रात के
वक्त सब राजा मनसूबा करने लगे कि काल्ह
क्या करना चाहिये तब भावसिंहजी १९६ नैं
कहा कि एक दिन मरणा तो जरूर है तो धर्म
के वास्ते ही मरणा ठीक है जब एकादशी के दि-
न नारायण की मूर्त्ति बडी धूम धाम सैं पधरा-
ई गई उस वक्त भावसिंहजी १९६ आप की फौ-
ज के साथ निगाहबानी मैं रहे जब बादशाह
नैं इन के ऊपर फौज भेजी तो येभी बहादुरी सैं
लडनैं को तयार होगये फक्त आप की फौज
को यह हुक्म दिया कि पहलों बादशाह की
फौज का वार होणे दो फेर जैसी बणे तैसी बहा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुरी करणी परंतु औरंगजेब की मानैं जब औरंगजेब बहुत सा समकाया तो फौज पीछी हटा ली परंतु इन पर बहुत नाराज रहा संवत १७२४ मैं औरंगजेब नैं बीकानेर सैं वहां के राजा कर्णसिंहजी बुलाये थे जोकि शाहजहां के साथ काबुल की लडाई के वक्त कर्णसिंहजी के पिता बहुत बीमार थे इसवास्ते बादशाह का साथ छोडकर कर्णसिंहजी बीकानेर चले गये थे इस बात सैं औरंगजेब के दिल मैं दुश्मनी थी और कर्णसिंहजी के दिल मैं भी इसका डर था सो कर्णसिंहजी नैं शहर सैं बाहर ही डेरा किया भावसिंहजी १९६ की बहण कर्णसिंहजी को ब्याहे थे जब बादशाह नैं पिछले कुसूर की सजा देने वास्ते कर्णसिंहजी पर फौज भेजी तो ये बहुत डरे परंतु उसी वक्त आप की फौज को लेकर मदद पर भावसिंहजी आपहुंचे बीकानेर वालों के बडी खुसी हुई उसी वक्त बादशाह सैं कामदारों नै अर्ज करी कि हालतो भाव सिंहजी ही मिले हैं परंतु आपसैं धर्म के मुकद्दमे मे सब हिंदू नाराज हैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लडाई शुरू होने की देर है कि सब हिंदू इन मैं
जामिलैंगे तब तो बादशाह नैं समझ कर फौज
पीछी हटाली इस मैं पीछे भावसिंहजी १९६ बूं-
दी मैं पधारे संवत् १७३४ मैं औरंगजेब नैं अ-
पणे बेटे को दखण की तर्फ भेजा जो कि केशव
रायजी का मंदिर तोडने पर कृष्णसिंहजी नैं
बादशाह की फौज लूटी थी इस वास्ते बादशाह
उन सैं नाराजथा अब अपने बेटे को यह कह
दिया कि इस तर्फ तुम कृष्णसिंहजी को साथले-
कर कोई बहाने सैं मारडालना शाहजादा कृ-
ष्णसिंहजी को जब साथ लेकर उज्जैन मैं पहुंचा
उसी वक्त किसी काम के बहाने सैं बुलाकर द-
गा सैं मरवाडाले इस खबर को सुनकर इन के
उमराओं नै जो दरवाजे पर थे उन के मारनेवालों
को मारडाला भावसिंहजी १९६ की बहण क-
र्मवतीजी नाम जोधपुर के राजा जसवंतसिं-
हजी को व्याहे थे बादशाह जसवंतसिंहजी पर
नाराजथा सो इन सैं जोधपुर उतार लिया था औ-
र इन की फौज वगैरह दिल्ली मैं हीरकवे और

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये काबुल की तर्फ लडाई में भेजदिये थे सो व॰
हाँही मरे और दिल्ली में एक तो इन की राणीजी
गर्भ सें थे दूसरे कर्मवतीजी थे जब राणीजी के
दिल्ली में बेटा हुवा तब बादशाह नें कहला भे॰
जा कि यह लडका हमारे हवाले कर दिया चाहि
ये कर्मवतीजी ने वह लडका किसी तरह सें मार॰
वाड में भेज दिया जब बादशाह नें रणवास में
ढूंढाया तो लडका नहीं पाया तब यह हुकम दि॰
या कि राणियों को हीं पकडलावो तब तो भाव॰
सिंहजी १९६ के बहण सब शस्त्र लेकर मरदाना
पोशाक पहन कर हाथी पर सवार होकर फौज
के साथ बाहर निकले और बहादुरी सें बहुत॰
सी बादशाह की फौज को मार कर संवत् १७३५
में काम आये इन दिनों में भावसिंहजी १९६ द॰
खण में थे औरंगाबाद के पास इनों नें भावपुरा
नाम गाँव बसाया था वहाँ १० वर्ष रहकर संब॰
त् १७३८ में बैशाख वदि ८ के दिन इस संसार
सें कूँचफर्माया जब यह बात बूँदी में सुनी तो
वहाँ १५ वर्ष की उमर में अनिरुद्ध सिंहजी १९८

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थे इन को बालक समझकर बैरीशालोत दुर्जन
शालजी नैं बलवण सैं आकर राज करने की उ-
म्मेद पर बूंदी घेरली परंतु राणियों नैं अनिरु-
द्धसिंहजी १९८ को बूंदी के मालिक मान कर
फौज को लडाई का हुक्म दिया दो दिन लडाई क-
रके दुर्जनशालजी भागगये भावसिंहजी १९६
नैं बूंदी मैं मोतीमहल और रत्नबाग के पास ए-
क बाग बणाया और फूल सागर सैं उत्तर की तफ
बाग चादर और फंवारे बणाये भावसिंहजी
बहुत अच्छे स्वभाव वाले थे और न्याय करने मैं
बहुत ही अच्छे थे आज तक सबेरे महाजन
लोक उन का नाम लेते हैं इन के पीछे संवत
१७३८ मैं अनिरुद्धसिंहजी १९८ गद्दी पर बिरा-
जे इन के बुधसिंहजी १९९।१ जोधसिंहजी १९९।२
अमरसिंहजी १९९।३ और बिजयसिंहजी १९९
।४ ये च्यार ४ महाराजकुमार हुवे बादशाह नैं
लालच मैं आकर बडोद १ और खेरा बाद २
ये दो परगनैं इन सैं उतार लिये बाकी राज इन के
नीचे रहा जब बादशाह दखण की लडाई पर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

औरंगा बाद को जाता था उस वक्त रस्ते मैं अ-
निरुद्ध सिंहजी १९८ उसे मिले और साथ हीर
हे वहाँ बादशाह अपने बेटे कों और अनिरुद्ध
सिंहजी १९८ कों छोड कर आप दिल्ली को आग-
या इहाँ अनिरुद्ध सिंहजी १९८ नैं इस लडाई मैं
मरहटों को जीता ऐसे तीन बार लडाई मैं फतह
पाई चौथी वार बीजापुर भाग नगर के मरहटे
और मुसलमान औरंगजेब के बेटे आजम की
बेगम को पकड ले आये इस लडाई मैं इकल्ले
अनिरुद्ध सिंहजी १९८ नैं ऐसी बहादुरी करी
कि दुश्मनों को भगा कर बेगम को पीछे लाये
इस लडाई मैं अनिरुद्ध सिंहजी १९८ के बहुत बा-
हादुर मारे गये और मरहटों मैं आनंद १ संतू २
नारू ३ नत्थे राव ४ ईश्वर ५ वगैरह मारे गये औ-
र मुसलमान लोग रत्नजी १९३ के कौल मा-
फिक हाडों के निशानों के सामनैं नहीं रहे इस
बहादुरी सैं आजम बहुत राजी हुवा और औरंग
जेब सैं अर्ज कर कै बारां १ मऊ २ रैंवा बाद ३ चा-
चुरनी ४ खेडी ५ बडोद ६ ये परगने और सिरोपा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व गहणा हाथी घोडा वगैरह दिलवाये अनि-
रुद्धसिंहजी १९८ की फौजमें एकतो सावंत-
का हाडा भजनेरी काजागीरदार दुर्जनसिंहजी
और कायथविश्वनाथ ये दो आदमी हरामखो-
री के कारण सें मरहटों सें मिलरहे थे जब इन
का भेद खुलगया तो अनिरुद्धसिंहजी १९८नें
बूंदी को लिखभेजा कि इन दोनों आदमियों की
जागीर तो खालसे करलो और इन को बूंदीमें म-
त आनेदो जब ये दोनों फौज में सें भाग कर थो-
डे दिन छिपेहुवे बूंदी में रहे इस सें पीछे बैरीश-
लोत दुरजनशालजी को बहका कर बूंदी परच-
ढालाये इहां तक कि दुरजनशालजी नें संवत
१७४० में बूंदी पर कब्जा कर लिया और बद मि-
जाजी सें पहली के कामदार कैदकरदिये और
रणवास पाटण भेजदिया जब यह बात अनिरु-
द्धसिंहजी १९८ नें सुनी तो बादशाह के आगेक-
ही बादशाह तो इन के ऊपरराजीहीथा बहुत
सी फौज इन के साथभेजी इनों नें आकर बूंदी
घेरली और दुर्जनशालजी सें कुछभी नहीं बनी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छिप के दुरजनसिंह सावंत के हाडे की साथ भाग
गये विश्वनाथ कायथ क़ैद में आगया दुरजनश
लजी नें भागकर बूंदी के मुल्क में लूट मचादी
लारैरी का कोटवाल मारडाला भीलों सें मिलक
लूट मचादी अनिरुद्धसिंहजी १९८ नें कुसला
नाम सिलहदार बहुत से सवारों के साथ भेजा
और यह फर्मादिया कि दुरजनशालजी कहीं
ठहरनें नहीं पावें यहां तक कि दुरजनशालजी
इसीदोड धूप में मरगये इस सें पीछे दुरजनश
लजी के छोटे भाई फतहसिंहजी और जैतसिंह
जी दोनों अनिरुद्धसिंहजी १९८ के क़दमों में आ
य पडे और कुसूर माफ कराया अनिरुद्धसिंहजी
१९८ नें फतहसिंहजी कों रहेलोदा और जैतसिं
हजी को रेडा १ और दोलाड़ा २ ये गांव बख्शे
इन दिनों में योगिरी और सिनसिनी वाले जाटों
नें दंगा मचादिया यह पुकार जब औरंगजेब के
पास पहुंची तो उसने अपणा पोता फौज के सा
थ भेजा और अनिरुद्धसिंहजी १९८ को भी इस
लडाई पर बुलाया कि तुम जलदी शामिल हो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इनों नैं आप की फौज तयार करी परंतु फौज के लोगों नैं यह अर्ज करी कि गणगौर का त्योहार नजदीक है इससैं गणगौर देखकर चलैंगे और जल्दी चलकर बादशाह की फौज के शामिल हो जावैंगे जब अनिरुद्धसिंहजी नैं भी यही करी और जल्दी करने सैं भी बादशाह की फौज मैं नहीं पहुंचते तब तो सुनकर बादशाह कू गुसा आ॰ गया इस तर्फ जाट लोगों का जोर फिर भी बढ़ गया जब अनिरुद्धसिंहजी १९८ लडाई मैं पहुंचे तो वहां जाटों का जोर देखकर फिर पीछे बूंदी मैं दाखिल होगये और कोटे वाले बहुत अच्छे लडे तब तो औरंगजेब नैं नाराज होकर यह लिखभेजा कि तुम काबुल के सूबे पर जरूर जाओ जो॰ कि राव राजा सुर्जनजी २९१ के लिखाये हुवे कौल के माफिक अटक के पार उतरना ठीक नथा परं॰ तु अनिरुद्धसिंहजी १९८ नैं लाचार होकर यह भी कबूल किया और काबुल की तर्फ पधारे व॰ हां ६ वर्ष रहकर संवत १७५२ मैं इस संसार को छोडा इनों नैं अनिरुद्धमहल और महलों के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊपर छत्रियां और शहर के खुरे बणाये और
कापरण में महल बणाया इन के भाभाई हे॰
वानें बूंदी के पास देवपुरगांव बसाया वहांही
एक बावडी १ बाग २ महल ३ और बडी छत्री
४ बणाये और दूसरी छत्री किले में बणवाई
अनिरुद्धसिंहजी १९८ के पीछे बुधसिंहजी १९९
इस १० वर्ष की उमर में गद्दी पर विराजे इन के
देवसिंहजी २०० जिन को धोंकलसिंहजी २००।१
भी कहते हैं भावतसिंहजी २००।२ जिन को लाल
सिंहजी २००।२ भी कहते हैं पद्मसिंहजी २००।३
उम्मेदसिंहजी २००।४ चंद्रसिंहजी २००।५ दीप॰
सिंहजी २००।६ येछः हे महाराजकुमार छवे बा॰
की भाइयों का बंश नहीं चला संवत १७५३ में इन
को औरंगजेब नें बुलाकर अपने बेटे शाह आ॰
लिम के पास रक्खे इनों नें अपनी नेकचाल ब॰
हादुरी वगैरह सें शाह आलम को राजी करलि॰
या शाह आलम नें औरंगजेब सें अर्ज करके दो॰
क १ का परगना इन को दिवादिया इनदिनों में
औरंगजेब नें शाह आलम को काबुल की तर्फ

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेजा वहाँ बुधसिंहजी १६९ साथ थे लडाई में अ
नूपसिंहजी सुलानसिंहजी वग़ैरह सरदार हा
डों के काम आये जीत शाह आलम की हुई
एक दिन बुधसिंहजी १६९ शाह आलम के
दरीखाने में पधारते थे दो २ डोढी के पीछे तीस
री डोढी में शाह आलम के एक मुसलमान स
रदार नें इन सें बुरी जबान कही इनों नें कटारी
सें उस को मारडाला जब यह बात शाह आल
म नें सुनी तो सोच विचार कर यह कहा कि इ
सें बुधसिंहजी १६९ का कुछ कुसूर नहीं इन
दिनों में औरंगजेब दखण के औरंगाबाद सें
मरगया तब इस तर्फ बादशाह का छोटा बेटा
आजम तख्त पर बैठगया और उसी की तर्फ
कोटा वग़ैरह के राजा शामिल थे उसनें बूंदी
में कहला भेजा कि जो तुम बूंदी का राजर कवा
चाहते हो तो फौज लेकर जल्द हमारे शामि
ल होजावो जब बूंदी सें यह जबाब गया कि य
हां तो बूंदी की निगहबानी के लायक ही फौज
है और बुधसिंहजी १६९ काबुल की तर्फ हैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तब तो आजम नैं कोटा के राव रामसिंहजीसैं
कहा कि बूंदी तुम को बख्शी इनों नैं भी सला
म करी जब औरंगजेब के मरनैं की खबर
काबुल मैं शाह आलम नैं जिस को मुअ-
ज्जम और बहादुरशाह भी कहते हैं सुनी
तब तो जल्दी सैं फौज ले कर आया परंतु
इस की तर्फ एक बुधसिंहजी १९९ हीथे श-
ह आलम नैं बुधसिंहजी १९९ को फौज के
सरदार बणा कर भेजे जाजब मैं बडी लडाई
हुई बुधसिंहजी १९९ के पास तो थोडी ही फौ-
जथी दूसरी तर्फ दूणी सैं भी बहुत जियादा थी
परंतु बुधसिंहजी १९९ नैं बहादरी सैं फतह
पाई और आजम को उसके बेटे सुहाँ मारलिया
इस बहादुरी सैं खुश होकर शाह आलम नैं इन
को महाराव राजा पदबी और पंज हजारी ५००
का मुनसब और बहुत सा गहणा और कोटा
१ गागरून २ शाहाबाद ३ सेरगढ ४ बडोद ५
चेचत ६ छबडा ७ गूगोर ८ पचपहाड ९
पिडावा १० डग ११ वगैरह चौवन ५४ परग

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने दिये जब शाह आलम दखण की तर्फ गया
उस वक्त बुधसिंहजी १९९ तो बादशाह के
साथ थे उनों नें बूंदी हुक्म भेजा कि बादशाह
नें कोटा हम को दिया है सो कोटे पर फौज भे
जकर खाली करालो जब यह खबर कोटे में
पहुंची तो वहां के राव भीमसिंहजी नें बूंदी
कहला भेजा कि सिवाय कोटे के और मुल्क
में कब्जा करलो और कोटा हमारे पास रहने
दो जब यह बात बूंदी के सरदारों नें नहीं मानी
और फौज लेकर चढ़ आये तब तो भीमसिंह
जी भी लडने को तयार हुवे ऐसे लडे कि बूंदी
की फौज हार कर पीछी आई कितने कदिन
पीछे बूंदी की फौज फेर चढी परंतु हार कर
पीछी आगई उस में सुहकमसिंह होत जोगीराम
जी जो फौज के सरदार थे मारे गये जब दखण
सें शाह आलम दिल्ली की तर्फ रवाने हुवा तो र
स्ते में मनोहरपुर सें बुधसिंहजी १९९ बूंदी पधा
रे तब जैतसागर को देख कर आप के भाई जो
धसिंहजी की बात याद कर के बहुत उदास हुये

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वह बात इसतरह है कि जिन दिनों में बुध
सिंहजी १६६ काबुल की तर्फ थे और बूंदी में
गणगोर के दिन जोधसिंहजी नाव में बिराज
कर कितनेक सरदारों के साथ गणगोर का द
रीखाना कर के जैत सागर में सैर करते थे उ
स वक्त राज का हाथी जो सवारी के हाथियों में
से दूर खडाया और थोडा मस्त भीथा जो धसिं
हजी के हुक्म से महावत ने तालाब के बीच में
चलाया उसने तालाब में घुस कर नाव उलट
दी उस वक्त जोधसिंहजी का स्वर्गवास हुवा कि
तनेक अर्से के पीछे बहादुर शाह के मरने की
खबर पहुंची इस खबर से बुधसिंहजी १६६ के
मन पर ऐसा फिकर हुवा कि रियासत के जरूरी
कामों से भी मन उखड गया आगे जो जो का
म बेखबरी के इन से हुवे इन की मुख्य जड
यही फिकर है जब दिल्ली के तख्त पर फर्रुख
सियर बैठ गया था इसने तख्त पर बैठ कर स
ब राजा बुलाये बुधसिंहजी १६६ बूंदी में ही
बिराजे रहे तब तो रूपनगर के राजा राजसिंह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीनैं जो बुधसिंहजी १४४ को आप कीबेटी
दिया चाहते थे और बुधसिंहजी १४४ नैं यह
बात मंजूर नहीं करी थी और कुछ करडी
बात भी कही थी बादशाह के आगे चुगली
खाई कि जहाँपनाह बूँदीवाले तो आप के
हुक्म सैं बाहर होकर जोधपुर वालों सैं मिल-
कर दंगा किया चाहते हैं इस वास्ते यह ठीक है
कि कोटावाले भीमसिंहजी को बुलाकर बूँदी उन
को बख्शदी जावे जब बादशाह ने भीमसिंह
जी को बुलाकर महाराव पदवी देकर यह क-
हा कि बूँदी तुम को दी बुधसिंहजी १४४ को
वहाँ से निकाल दो भीमसिंहजी ने कोटे में
आकर फौज तयार करी जब जयपुर के म-
हाराज जयसिंहजी नैं बूँदी होकर बादशाह
के हुक्म से दखण की तर्फ कूँच किया तो बुध-
सिंहजी उन को पहुँचाने पधारे जब बूँदी को
पीछे पधारते वक्त बुधसिंहजी १४४ ने नमा-
णा नाम गाँव में जो बुधसिंहजी १४४ के नाना
जी की जगह थी मुकाम किया पीछे सैं भीमसिं-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हजी नैं संबत् १७७० मैं बूंदी घेरली गजमुख
जीपुरोहित नैं बूंदी मैं घुस कर गोला चला
णा शुरू किया परंतु जब भीमसिंहजी ने
यह कहा कि तुम पुरोहित हो तुमारी तर्फ
सें तो दोनों तर्फ के बराबर हैं तब तो लाल
च में आकर भीमसिंहजी के पास चले ग-
ये भीमसिंहजी ने इन को क़ैद कर्के बूंदी में
कच्चा कर लिया जोगीरामजी के बेटे सालि
मसिंहजी ने अपनी जागीर का करवर के कि
ले में आकर बंदोबस्त कर लिया इन दिनों में
उणियारे के मालिक नरू के संग्रामसिंहजी नैं
कुछ मुल्क दाब लिया और बुधसिंहजी के रा-
णीजी साहब अपणे २ पीहर को पधारे बाकी
सारे रणवास के नौकर चाकरों का बेघूंके ठाकु
र देवसिंहजी ने गुजारा चलाया येभी बुधसिंह
जी १९९ के साले थे भीमसिंहजी ने १८ अठा
रा दिन तक करवर पर लडाई करी परंतु कर-
वर हाथ नहीं आई जब फर्रुखसियर को यह
दर्याफ्त हुआ कि बुधसिंहजी सिर्फ बहादुर शा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ह के फिकर के सबब सें नहीं आसकेथे
और उन का कसूर नहीं तबतो फर्रुखसिय
रने दिलावुरखां के साथ फौज भेज कर बूंदी
में संवत १७७२ में बुधसिंहजी १९९ का क
ब्जा करदिया परंतु मऊ बारां में भीमसिंह
जी काही कब्जा रहा जब बादशाहने बुधसिं
हजी १९९ बुलाये तब दिल्ली को पधारे इन
के साथ इंडरगढ के महाराजा मेघसिंहजी के
बेटे छित्तरसिंहजी और करवर वाले सालि
मसिंहजी और पलोधी के जागीरदार जैतसिं
हजी बलवण वाले अभयसिंहजी वगैरह
साथ हुवे उसवक्त करवर में भीमसिंहजी की
साथ लडाई की बहादरी सें राजी होकर बुधसिं
हजी १९९ नेसालिमसिंहजी को नैणवा का
परगना बख्शा बुधसिंहजी १९९ नें दिल्ली में
पहुंचकर कितनेक दिनों में फर्रुखसियर को
राज़ी करलिया और बुधसिंहजी १९९ नें आ
पकी तर्फ सें बूंदी की कामदारी पर सालिमसिं
हजी भेजे जब सैयदों नें कोटे वाले भीमसिंह

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी और रूप नगर वाले राजसिंहजी और जो-
धपुर के अजितसिंहजी को मिलाकर फरुख-
सियर मारडाला और भीमसिंहजी के बहका-
ए सैं सैयदों की फौज नै बुधसिंहजी १६६ का
डेरा घेरलिया तब बुधसिंहजी १६६ तो फौज
को फाडकर आमेर मैं जयसिंहजी सैं आमि-
ले इस तर्फ लडाई होतीरही पीछे सैं भीमसिं-
हजी नैं कोटे मैं आकर फौज चढाकर बूंदी-
घेरली सालिमसिंहजी एकदिन लडाई करके
भागगये बूंदी मैं संवत १७७६ मैं भीमसिंह
जी का दूसरी बार कब्जा होगया जब कलीज
खां की साथ लडाई मैं भीमसिंहजी मारेगये
उस वक्त भीमसिंहजी की तर्फ सैं बूंदी का का-
मदार धाभाईया उसनैं बूंदी मैं बुधसिंहजी
१६६ की दुहाई फेरकर अपणे थाणे बठालि-
ये सालिमसिंहजी जो बूंदी पर दंगा खडाक-
के भागगये थे कलाय सैं आकर फेर बूंदी
के कामदार बणगये उस वक्त जयसिंहजी
के बहण कछवाहीजी और बेधूंके चूंडाउ-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तजी और भणाय के राठोडजी ये तीन ३ ही
बुधसिंहजी १९९ के राणीजी ये राणावतजी
पहली शांत होगये थे चूंडाउतजी के संवत्
१७८६ मैं आषाढबदि अमा ३० के दिन उम्मे
दसिंहजी २०० का जन्म हुवा बुधसिंहजी
१९९ कछवाहीजी पर नाराज थे चूंडाउत
जी और राठोडजी पर राजी थे इस वास्तै जय
सिंहजी भी इन सैं नाराज होगये थे और म
न मैं यह ठहराई कि इन के पास बूंदी का रा
ज न हीं रहा चाहिये यह बिचार कर सालिम
सिंहजी मुहकमसिंहोत को कहला भेजा कि
मैं तुमारे बेटे कूं बूंदी की गद्दी पर बिठलाहूं
तब इन के छोटे बेटे दलेलसिंहजी नैं मंजूर
करी जब दलेलसिंहजी जयपुर मैं गये तो
जयसिंहजी नैं बराबर गद्दी पर बिठा कर यह
कहा कि तुम अब सैं बूंदी के मालिक हो और
अपणी बेटी दलेलसिंहजी को व्याह दी इस बा
त को सुण कर कई बुधसिंहजी १९९ के चाक
र बाना महाजन जो जोधराज प्रधान का

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाणजा था १ सुखराम कायथ २ और उदय
भान चौधरी ३ जगदीस नागर ब्राह्मण ४
किंतू हाडा ५ भचान हाडा दघारीका ६ सु
भराम धाभाई ७ अलोद का जागीरदार महा
राम ८ वग़ैरह दलेलसिंहजी मैं मिलगये
जब दलेलसिंहजी ने आकर बूंदी मैं क़ब्ज़ा
करलिया तब बुधसिंहजी १९९ भी कामा-
नोह को जो जयपुर के इलाके मैं बुधसिंह
जी १९९ के बिरजणे की जगह थी छोड कर
बूंदी की तर्फ़ पधारे संवत् १७९६ मैं जब जय-
सिंहजी दलेलसिंहजी कूं साथ लेकर मालवे
की तर्फ़ रवाने हुवे और सालिमसिंहजी कूं
अच्छी तरह समझा गये कि बुधसिंहजी १९९
कूं बूंदी मैं मत आणे देणा जब बुधसिंहजी
१९९ कूं पधारते सुणकर सालिमसिंहजी
बूंदी की सर हद्द पर लडाई वास्ते ३००० फ़ौज
भेजी तो बुधसिंहजी १९९ कुसथला मैं जो बेरी
सालोत जैतसिंहजी के बेटे देवसिंहजी की
जागीर का गाँव था दाखिल हुवे दोनों तर्फ़ से

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लडाई शुरुहुई बुधसिंहजी १४४ कातोरियास
तकी तर्फ कुछ अच्छी तरह खयालही नहीं
था बहादुरशाह के फिकर सैं मनउखडा हीरह
ताथा इस लडाई मैं १०००० दश हजार फौज
बुधसिंहजी १४४ की तर्फ थी १३००० तेरह ह
जार सालिमसिंहजी की तर्फ थी सेनामैं २२००
बारा सौ मारे गये एक हजार घायल हुये सा
लिमसिंहजी की जीत हुई फौजभी बुधसिंह
जी के पास १००० एक हजार ही रही थी बाकी
सब सालिमसिंहजी सैं जामिली अभयसिंह
जी के बेटे नाथूसिंहजी पहलांही सालिमसिं
हजी सैं जामिले थे इसे बन के पास बलवण
रहगई इस तर्फ जयसिंहजीनैं मालवे सैं आ
कर संवत् १७८७ मैं दलेलसिंहजी गादी पर
बिठादिये और कुसथल १ पांचोलास २ वगै
रह २८ अठाईस गांव बूंदी सैं लेकर आपके
उमराओं को बांटदिये बुधसिंहजी १४४ संव
त् १७८८ मैं बेबूंमैं पधारे जब कछवाहीजी
नै छलाख ६०००० रुपये देणा करके मल्हारराव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वजी बूंदी पर चढाये इनदिनों मैं जयसिंहजी
और दलेलसिंहजी जयपुर मैं थे संवत १७९१
मैं दखणियों नें बूंदी घेरली लड़ाई होगयी छै
सालिमसिंहजी कैद करदिये और बूंदी मैं बुध
सिंहजी १९९ की दुहाई फिरगई कछवाहीजी
ने बूंदी मैं आकर दखणियों की वडी खातरी क
री और मल्हारराव जी आप के धर्म भाई बणा
ये दखणी तो अपणे देश कूं गये जयसिंहजी
ने बूंदी मैं बुधसिंहजी १९९ का कजा सुण कर
फेर २०००० बीस हजार फोज भेजी यहां साम
ना करणे वाला कोणथा जल्दीही दलेलसिंह
जी का कजा होगया कछवाही राणीजी बूंदी
सैं बेघूंघटधारे सालिमसिंहजी दे लाख २००००
रुपये देणे करके दखणियों की कैद सैं छूटे दले
लसिंहजी ने तो अपणे बाप के छुडाणे वास्ते
रुपये नहीं दिये परंतु सालिम सिंहजी ने अप
णी जागीर नैणवां मैं आकर रुपये भेज दिये
संवत १७९९ मैं वैशाख वदि ३ के दिन बेघूं
सैं ३ कोस पर बाघपुर गांव मैं बुधसिंहजी १९९

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने इस संसार कूं छोड़ा जबतक बहादुर शाह
का फिकर पैदा न हुवा तबतक तो ये बड़े ब-
हादुर अच्छे स्वभाव वाले और सब ही बातों
में अच्छे थे बहादुर शाह के फिकर सें इन का
चित्त उखड़ गया इन नें जैतगढ में एक बाग
१ एक महल २ दिल्ली पधारणे सें पहली ब-
णाये थे इन की राणीजी साहब कछवाहीजी
नें गणेश घाटी सें उत्तर की तर्फ जयनिवासना-
म गाँव बसाणा शुरू किया था बीच में उन के मं-
दिर बणा है इन के छोटे भाई जोधसिंहजी नें
बूंदी सें पश्चिम की तर्फ १ कोस पर जोधसाग-
र नाम तालाब और गाँव बाग महल मंदिर
ये पाँच ५ बणाये इन के धावड़ गंगाराम नें
शहर सें पूर्व की तर्फ बाग १ बावड़ी १ बणाये
गज सुखजी पुरोहित नें शहर सें पश्चिम की
तर्फ थोड़ी दूर पर दधिमती माताजी का मंदिर
बावड़ी और छत्री बणाये और चोगान दरवा-
जे के पास हवेली बणाई जो अब पुरोहितजी
के महल कहलाते हैं और एक चाकर गंगाराम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने जो लखा तालाब के नाले के पास महल बणाया बुधसिंहजी १४४ के पीछे संवत १७४६ में वैशाख सुदि १३ के दिन १० दश वर्ष की उमर में उम्मेदसिंहजी २०० गद्दीपर बिराजे इन के अजितसिंहजी २००।१ बहादुरसिंहजी २००।२ सरदारसिंहजी २००।३ त्रिलोकसिंहजी २००।४ ये च्यार महाराज कुमार थे और शिवसिंहजी संग्रामसिंहजी दोखवासजी के बेटे थे दीपसिंहजी के दीपसिंहोत कहलाये गद्दीपर बिराजते वक्त इनों ने पिछली चाल के वल्लभ संप्रदाय के गोपीनाथजी गुसांई मंत्र के उपदेश वास्ते बुलाये तो उनने जयसिंहजी और दलेलसिंहजी के डरसें मंजूर नहीं करी तब उम्मेदसिंहजी २०० के माता चूंडावत जी ने कोटे सें साठोतरे नागर बेणीरामजी जो रामानुजमत के थे उन सें यह कहलाभेजा कि आज कल्ह हमारे दिन अच्छे नहीं हैं आप वहां आकर उम्मेदसिंहजी २०० कूं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपदेश करो तो आजसें हम आप कूं गुरु मानेंगे यह सुणकर बेणीरामजीने आप के बडे बेटे श्रीगोबिंदजी भेजे उनों ने उम्मेदसिंह जी २०० कूं उपदेशकिया कितनेकदिनों में उम्मेदसिंहजी २०० नें शस्त्रबिद्या घोडासवारी का इल्म भलाई होशयारी वगैरह अच्छी बातोंसें नौकर और दोस्तलोगोंकूं बहुतरजी किया एकहरदाउतहाडा दोलतसिंह नें उम्मेदसिंहजी २००।१ और दीपसिंहजी २००।२ इन दोनों भाइयों में दंगा उठाणा चाहाया परंतु उम्मेदसिंहजी २०० की माता चूंडाउतजी नें खबर पाकर उस कूं निकालदिया इनदिनों में जयसिंहजी ने राणाजगतसिंहजी के नाम लिखभेजा कि आप के भाइयों में बेधू के चूंडाउत के यहां उम्मेदसिंहजी २०० रहतेहैं सो निकलवादियेचाहिये राणाजीनें जयसिंहजी के डरसें बेधूकूं लिखभेजा कि तुमउम्मेदसिंहजी २०० कूं तुमारे मुल्क सें निकालदो तब उम्मेदसिंहजी २०० और दीपसिंहजी २००।२

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उहाँ सैं कोटा मैं पधारे कोटे के महाराव
दुरजनशालजी नैं जयसिंहजी के डरसैं इन
कूं कोटे मैं तो नहीं रक्खा और मधुकरगढ
मैं रक्खा जब इन दिनों मैं जयसिंहजी का दे-
हांत होगया तो इन कूं कोटा मैं बुलाकर इ-
नसैं २००००० रुपया का गहणा लेकर इनके
नाम सैं फौज रक्खी कोटे के महारावजी नै बे-
णीरामजी नागर जिन का पहलां जिकर आया
था सो जयपुर को भेजे उनों नै जयपुर के महा-
राज ईश्वरीसिंहजी पास जाकर कहा कि आप
बूंदी उमेदसिंहजी २०० कूं देदीजिये यह को-
ई कर आपका अहसान रहेगा परंतु ईश्वरी
सिंहजी नै कहा कि बूंदी तो अब हाथी के पेट
मैं है सो निकलनी मुश्किल है तब तो बेणी
रामजी नै जवाब दिया कि शेर मैं इतना जोर
है कि हाथी का पेट फाड कर निकाल सक्ता है
यह कहकर चले आये तब कोटे वालों नै फौज
इकट्ठी करणा शुरू किया और आपका फौज
दार गोविंदराम नागर जोधपुर सैं मदद मांग-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गे वास्ते भेजा जब उहाँसें कुछ हाथ नहीं आ
या तो गोबिंदराम ने रस्ते में अजमेर आकर
उहाँ नवाब फखरुद्दौला सें जो बादशाह ने गु
जरात के सूबे का हाकिम बणाया था यह ठह
राया कि एक लाख १००००० रुपये हम तुम
को देवेंगे हम कूं बूंदी लेदो नवाब नें मंजूर
करी तो वहाँ सें कोटे को लिख भेजा कि आप
तो उस तर्फ सें पधारो और मैं नवाब कों लेक
र दूसरी तर्फ सें आता हूं सो मन सूबे के माफ़ि
क पूर्ब की तर्फ सें तो कोटे के महाराव दुर्जन
शालजी और महाराव राजा उम्मेदसिंहजी
२०० नें बूंदी के घेरा दिया और पश्चिम की
तर्फ सें नवाब की फौज नें घेरा दिया शाहपुरा
के राजा उम्मेदसिंहजी भी फौज लेकर पश्चिम
की तर्फ में शामिल थे यह घेरा संवत् १८०१ में
आषाढ सुदि १२ के दिन दिया लडाई होणे में
बूंदी सर होगई इसें कोटे वालों का फौजदार
गोबिंदराम नागर मारा गया दलेलसिंहजी
भागकर नैणवां में घुस गये दुर्जनशालजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने उम्मेदसिंहजी २०० सैं कहाकि इसलडाई
मैं हमारा बहुत रुपैया खर्च पडा गोबिंदराम फौजदार मारागया और आपसैं राजदबणा भी मुश्किलहै यह कह कर बूंदीकेराज की अच्छी अच्छी चीजैं कोटे वालोंनेलेली लोचेका परगना उम्मेदसिंहजी २०० के गुजारे वास्ते छोडा बाकीमुल्कमैं अपणा थाणा बिठादिया इस बात सैं कोटावालोंसैं बेराजी होकर शाहपुराके राजाजी आपकेशहर कोगये जबदर्जनशालजी कोटे कोगयेतो उम्मेदसिंहजी २०० ने यहविचारकि कोटे वालोंनेहमसैं यह किया इसवास्ते परायेभरोसे बूंदीलेणाठीक नहीं यहबिचारकर जोधपुर के महाराज अभयसिंहजी के पास पधारे उहां अभयसिंहजी ने इनकी खातरदारीकरी जब ईश्वरीसिंहजीनैं मरहटोंसैं मदद लेकर बूंदीफतह करी और उहांदलेलसिंहजीको गद्दीबिठा कर कोटा घेरलिया तो लडाई होणेपीछे १८००००० रुपैया फौजखर्च देकर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोटा वालों ने मेल कर लिया उस लडाई में रा·
णाजी सैंधिया के बेटे जियाजी के गोली लगी
थी इस वास्ते ईश्वरी सिंहजी ने दलेल सिंहजी
सें कहकर संवत १८०२ बैशाख में पाटण का
परगना मरहटों कों दिला दिया उम्मेदसिंह
जी को जोधपुर सें कुछ नहीं हाथ आया पीछे
पधारते वक्त रास में ब्याह किया और अपणे
रणवास को उहांही छोड कर आप बूंदी लेणे·
के उपाय में लगे जब ईश्वरीसिंहजी और दलेल
सिंहजी जयपुर में थे और बूंदी में उन का कामदा·
र नंदराम खतरी था उस वक्त थोडी सी फोज लेकर
उम्मेदसिंहजी २०० हीं डोली तक पहुंच गये हीं
डोली के आदमियों नें १२००० रुपैये नजर किये
जब यह खबर नंदराम कामदार नें सुणी तो
५००० आदमियों कूं लेकर आया बीचडी
में जो बूंदी सें ४ कोस गांव है दोनों फोजों का
सामना हुवा लडाई होणे में नंदराम भाग गा·
या बूंदी में उम्मेदसिंहजी २०० का कब्जा संवत
१८०३ श्रावण सुदि ३ के दिन होगया जब

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस खबर कूं सुण कर ईश्वरीसिंहजीने दले
लसिंहजीसें कहा कि मैं फौज भेज ताहूं आपजा
कर बूंदी फतह करो दलेलसिंहजीने कहा
कि मैं बूंदी में दावा नहीं करता आप आप
का कब्जा करलो तबतो ईश्वरीसिंहजीने इन
सें इस बात की लिखावट लिखा कर आपकी
५०००० पचास हजार फौज भेजी फौज का स
रदार नारायण दास बत्तरीया और जयपुर के
उमराव साथ थे उस वक्त उम्मेदसिंहजी २००ने
बूंदी सें ३ कोस अमरपुरा गांव के पास फौज सें
सामना किया बहुत बडी लडाई होणे पीछे
उम्मेदसिंहजी २०० के घोडे का पैर कटगया
घाव भी बहुत लगे घोडे से आदमी साथ रह
गये इस हाल में भी उम्मेदसिंहजी २००दुश्म
नों की फौज में सें निकल गये बूंदी में जयपु
र का कब्जा होगया उम्मेदसिंहजी २०० जब
दुश्मनों सें निकल कर इंद्रगढ की तर्फ पधार
ते थे तीन ३ कोस पर घोडा मरगया इनोंने इं
द्रगढ के पास जा कर देवसिंहजी को फर्मा भेजा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि इस वक्त हम कूं एक खासा घोडा दियाचा
हिये उनों ने जवाब भेजा कि आपने आप
का राजतो दुश्मनों के कब्जे में कर दिया अ
ब हमारा बिगाडना चाहते हो उम्मेदसिंह
जी २०० इस बात कूं पचाकर कोटे के राज
में राण पुर गाँव में थोडे दिन रह कर मधुक
रगढ में रहे इस में पीछे जब राणाजगत्सिंह
जी की फौज राणाजी के भाणजे माधोसिंहजी
कूं जयपुर की गद्दी पर बिठाणे वास्ते ईश्व
रीसिंहजी से लडने गई उस वक्त बूंदी के ले
णे वास्ते उम्मेदसिंहजी २०० भी लडने कूं
पधारे थे हुलकर और मल्हार रावजी के बेटे
खंडूजी दोनों मदद पर थे राजमहल में लडा
ई हुई उहाँ भी ईश्वरीसिंहजी की जीत हुई उ
म्मेदसिंहजी फेर कोटे के मुल्क में पधार आ
ये इन दिनों में मरहटों की फौज इस तर्फ
आई थी जब निवाई नाम गाँव में जो हाल
जयपुर के कब्जे में है आपहुंची उस वक्त
उम्मेदसिंहजी २०० ने वकील के साथ बूंदी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेणे वास्ते मल्हार रावजी सैं कहला भेजा उ
न नैं उम्मेदसिंहजी २०० बुलाये संवत १८०५
चैत्र सुदि १२ रविवार के दिन मधुकरगढ सैं
चल कर जब उम्मेदसिंहजी २०० निवाईसैं
३ तीन कोस पर पहुंचे मल्हार रावजी उनके
पेशवाई मैं आये और मुलाकात के वक्त इन
की खातिरदारी करी और जयपुर कूं लिख भे
जा कि अब बूंदी उम्मेदसिंहजी २०० वास्ते
छोडणी पडेगी ईश्वरीसिंहजी नैं जवाब भेजा
कि मुजको भगवान की सौगंद है मैं उम्मेद
सिंहजी २०० वास्ते बूंदी खाली कराद्यूंगा आप
दखण को पधारिये जब मल्हार रावजी दखण
को जाते हुवे बूंदी के मुल्क के पास पहुंचे तो
उनोंने बूंदी मैं उम्मेदसिंहजी २०० की दुहा
ई फेरणे वास्ते आप के कामदार भेजे तो उ
हां के कामदारों ने लडाई करणा शुरु किया
तब तो मल्हार रावजी उम्मेदसिंहजी २००
कूं लेकर जयपुर पर चढगये बगरु नाम
गांव मैं डेरे लगगये संवत १८०५ भादोंवदि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२ के दिन सैं लडाई शुरू हुई आखिर जब ईश्वरीसिंहजी हारणे लगे तब लाचार हो॰ कर बूंदी छोडणा कबूल किया कार्तिकशुदि १२ के दिन महारावराजा उम्मेदसिंहजी २०० का कब्जा होगया दूसरे दिन शास्त्र की रीति सैं गद्दी पर विराजे हुलकर मल्हारावजी और शाहपुरा के राजाजी नै तिलक किया उम्मेद सिंहजी २०० नै सब लोगों की जो लडाई मैं थे और रईयत के लोगों की सिहमानी करी मल्हारावजी के सरदारों को इनाम बख्शे अब इनों नै ऊपर लिखे माफिक रामानुज संप्रदाय कबूल किया और छाप मैं श्रीरंग॰ नाथजी का नाम खुदवाया और मुल्क मैं आ॰ पस मैं जयश्रीरंगनाथ कहणा जारी करवाया और आपके बडों की दी हुई जमीन हकदारों को बहाल करी और पहले दिनों मैं जिन्जिन् नैं चाकरी करी थी उन्कूं चाकरी के माफिक इनाम बख्शा जब कि जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी सैं लडने वास्ते बादशाह की

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फौज लेकर अभयसिंहजी के छोटे भाई बख्त सिंहजी आये उसवक्त अभयसिंहजी ने अपणी मदद वास्ते हुलकर और उम्मेद सिंहजी २०० बुलाये थे इस वास्ते उम्मेदसिं हजी २०० भी उहां पधारे थे तब हुल्कर ने दोनों भाइयों में मेल करा दिया उसवक्त संक रगढ़ के रहणे वाले राणा उत शिवसिंहजी जो उन दिनों में बूंदी आर हे थे सो उम्मेदसिं हजी २०० के साथ थे जिस वक्त उम्मेदसिंहजी २०० तो नित्य नियम में बिराजे थे उस वक्त हा जर होणे वास्ते शिवसिंहजी आते थे उस वक्त राजसिंह नाम कान्हावत जिस का बाप शिव सिंहजी ने मारा था आया उस ने शिवसिंहजी को देखते ही गोली सें मारडाले आप राठोडों की फौज की तर्फ भागा उस वक्त उम्मेदसिंह जी २०० ने नित्य नियम छोड कर विना पोशाक ही घोडे पर सवार हो कर फौज में घुसते कों मा रडाला राठोडों की फौज सें कुछ भी नहीं वणी जब इस बात पर राठोडों ने उम्मेदसिंहजी २००

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सें लडनाचाहा तब यहां लडने मैं क्या देर
थी आखिर हुल्कर ने दोनों समझालिये हुल्क
र दखण को गया और उम्मेदसिंहजी २०० बूंदी
आये कोटा के महा राव दुरजनशालजी बूंदी
मैं उम्मेदसिंहजी २०० का राज होणे सें नाराज
थे उनों ने नैणवा मैं दलेलसिंहजी के बेटे कुस
सिंहजी के नाम लिख भेजा कि हम यों चाहते
हैं कि आप का कब्जा बूंदी मैं होय इसवास्ते
नान्हाजी श्रीमंत कूं आगे कर के उम्मेदसिंहजी
२०० को जीत कर आप का कब्जा बूंदी मैं करा दे
वेंगे दूसरा कागज पूनें मैं श्रीमंतजी के काम
दार रामचंद्र के नाम लिखा कि मल्हारराव जी
हुल्कर ने उम्मेदसिंहजी २०० कूं बूंदी देदी यह
बात ठीक नहीं करी जो बूंदी हमारे कब्जे मैं होय
तो जयपुर वगैरह के राजा भी आप के हुक्म मैं
रहैं रामचंद्र इस कागज को देख कर राजी हुवा
क्योंकि उस की मल्हारराव जी सें दुश्मनी थी उस
ने यह जवाब भेजा कि हम भी यही चाहते हैं
कि बूंदी आप के कब्जे मैं होय परंतु उदयपुर के

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राणाजगतसिंहजी भी इस बात मैं शामिल होवें
तो ठीक है इस वास्ते आप राणाजी को ऐसी त-
रह राजी करो कि वे इस बात का कागज श्री-
मंतजी के नाम लिख देवें कि हम यों चाहते हैं
कि बूंदी मैं महारावजी का क़ब्ज़ा होजाय तो
हम राज़ी हैं जब राणाजी का कागज आवेगा
तब हम भी मदद करेंगे भरोसा है कि श्रीमंत
जी आप कूं बूंदी दिवा देवेंगे यह रामचंद्र का
कागज देख कर महारावजी ने राणाजी के इस
बात मैं शामिल करने की तजबीज शुरू करी
इस तर्फ उम्मेदसिंहजी २०० संवत् १८०६ भा-
दों मैं सितारे की तर्फ रवाने हुवे छोटे भाई दीप-
सिंहजी २००।२ भजनेरी के सेरसिंहजी हरदाउ-
त नाहरजी हरजनजी के बेटे दलेलसिंहजी सा-
थ लिये बूंदी मैं हरजनजी कामदार रकबे रखे-
मैं बाप नाम गांव जो हुल्कर के राज मैं था आ-
या उस वक्त मल्हार रावजी तो पूने मैं थे उनके
बेटे खंडूजी ने उम्मेदसिंहजी २०० की खातिर
दारी करी उम्मेदसिंहजी २०० कितने कदिन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उहाँ रहे इतने में मल्हारावजी भी आगये पी-
छे सें हरजन कामदार ने रैयत कूं दुःख दे-
णा शुरु किया जब यह खबर उम्मेदसिंहजी
२०० ने सुणी तब उसके पकडने कूं सेरसिंह
जी भेजे जब इनों ने माटूंदे गाँव में हरजन कूं
घेर लिया तब उस ने महारावजी के वास्ते अ-
र्ज लिखी कि आप मेरी मदद करो यह सुणक
र महारावजी ने फौज तो भेजी परंतु इस्सें प-
हलां ही हरजन कूं कैद करके तारागढ में रख
दिया जब हल्कर और उम्मेदसिंहजी २०० दी-
पसिंहजी २००।२ कूं बापगाँव में छोड कर
सितारे कूं रवानें हुये उस वक्त हरजन का बेटा
दलेलसिंह रुखसत के बहाने सें उहाँ रहगया
और हरजन कूं कैद में सुण कर दीपसिंहजी
२००।२ कूं बहकाणे लगा जब ये इस के बह
काणे में नहीं आये तो भाग कर कोटे में च-
लागया उम्मेदसिंहजी २०० और हल्कर
दोनों सितारे में पहुंचे उस वक्त साहूजी रा-
जा के मरणे में शंभाजी के बेटे रामराजाजी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राज करते थे उनों ने उम्मेदसिंहजी २०० की
बडी तवाजे करी दोनों एक गद्दी पर बिराजे
पीछे सें कोटा वाले महारावजी के वहका-
ये हुये कुसलसिंहजी बूंदी पर चढ आये ज-
ब बूंदी की फ़ौज ने कुसलसिंहजी भगादिये
तो उनों ने कोटे वालों सें मदद मांगी उहां से
खाली जवाब पाया उम्मेदसिंहजी २०० भी
सितारे के राजा सें रुखसत हो कर संवत
१८०७ श्रावण में बूंदी आपहुंचे तबराणा
जी ने पहली के दस्तूर माफ़िक़ उम्मेदसिंह
जी २०० के वास्ते गद्दी केटीके का दस्तूर भे-
जा संवत १८०७ के अगहन में महारा-
वजी हुल्कर हिंदुस्तान कूं फतह करणेवा
ले चढे जब बूंदी के पास पहुंचे तो उम्मेद
सिंहजी २०० भी उन के शामिल होगये और
नैणवा में दलेलसिंहजी के बेटे कुसलसिं-
हजी घेर लिये कुसलसिंहजी तो छिपकर भा-
गगये और उस वक्त नैणवों के नीचें करवर
समधी वग़ैरह थे वे सब उम्मेदसिंहजी २००

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने खालसे कर लिये आप हुल्कर के साथ
रहे जब जयपुर सें तीन कोस के ऊपर फो-
ज के डेरे हुवे तो ईश्वरीसिंहजी ने डर सें आक-
र अपणे कामदार हर गोविंद महाजन नादा-
णी सें जो सदा यह कहा करता था कि एकला-
ख फोज मेरे कीसे मैं है जिस वक्त चाहो हाज-
र करदूं फ़ोज मांगी वह पहला हीं इस बात
सें नाराज था कि ईश्वरीसिंहजी ने जोरावरी
सें उस की बेटी घर मैं डाल लीथी और इसी
कारण सें फ़ोज जहां तहां भेजर करीथी बो-
ला कि आप ने मेरे कीसे मैं मूसे लगा दिये
सो उस के फटणे सें फ़ोज बिखर गई अब जो
चित्त मैं आवे सो करो यह सुणा कर ईश्वरीसिं-
हजी जहर खाकर मरगये जब यह खबर हु-
ल्कर ने सुणी तो आप के चौकी पहरे राज
की जगह मैं बिठा दिये ईश्वरीसिंहजी कूं दाग
देणे पीछे मल्हारराव जी के बेटे खंडूजी ने यह
कहा कि जयपुर के रणवास मैं बहुत सी खू-
बसूरत औरत हैं उन कूं हम ले जावेंगे जब

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह बात सुणकर राणियों नेंडर सैं वाल्तवि
छाकर उस सैं एक साथ मरणा चाहा तो इस
बात कूं सुण कर उम्मेदसिंहजी २०० गुस्सेमैं
आकर हुल्कर सैं कहणे लगे कि आप कूं
पूनें के राजा ने हिंदुओं के धर्म की सज वृत्ती
वास्ते भेजे हो आप का बेटा यह कहता है कि
जयपुर के रणवास की ओर तों कूं मैं लेलूंसो
यह बात ठीक नहीं इस रणवास मैं हमारी ब
हण बेटी हैं हमारे रणवास मैं इन की बह
ण बेटी हैं आज इन सैं कल्ह हम सैं भी यही
बात होगी तो फेर इस सैं सिवाय हम कूं मरणे
लडने का कौण सा वक्त मिलेगा यह सुण कर
मल्हारराव जी ने आप के बेटे कूं बहुत सा ध
मकाया और जयपुर के लोग उम्मेदसिंहजी
२०० की तारीफ करणे लगे जब जयसिंहजी के
छोटे बेटे माधवसिंहजी आकर गद्दी पर बैठ
गये और जयपुर सैं १००००००० एक करोड
रुपैये फोज खर्च के लेकर हुल्कर पीछे आ
ये तो उम्मेदसिंहजी २०० भी बूंदी कूं पधारे

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक दिन इन के छोटे भाई दीपसिंहजी २००।२
कुछ बिचारकर शिकार के वहाने सैं घोडे पर
सवार होकर कोटे कूं पधारगये उहां दुरजन
शालजी नै एक महल मैं रक्खे उम्मेदसिंह
जी २०० नै उन के लेणे वास्ते आपका कामदा
र कोटे भेजा परंतु दीप सिंहजी नहीं पधारे
इनौं नै गागारणी के राठोड अभयसिंहजी की
बेटी व्याहे अभयसिंहजी के बहण इंद्रगढ
के महा राजा देवसिंहजी कूं व्याहे थे देवसिंह
जी बूंदी के हरामखोर थे इनौं नै दीपसिंहजी
कूं लिखा कि आप बूंदी का राज चाहते हो
तो जल्दी यहां पधारो आप के ऊपर उम्मेद
सिंहजी २०० की निगाह बिलकुल नहीं है
दीपसिंहजी इंद्रगढ पधारे उहां कुछ नहीं हो
सका देवसिंहजी नै इन कूं जयपुर भेजा उहां
माधवसिंहजी नै खातरदारी करी गद्दी के खूं
टपर बिठाये ५०००० पचास हजार की जागीर
दी रहणे कूं उकडोद शहर दिया उम्मेदसिंह
जी २०० नै संवत १८१० के जेठ बदि ११ दीतवा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

र के दिन महलों के भीतर श्रीरंगनाथजी की
मूर्ति पधराई इधर इंद्रगढ के महाराजा देव
सिंहजी ने दीपसिंहजी के नाम जयपुर कूं इ
स तरह का कागज भेजा कि अब उम्मेदसिंह
जी २०० डर कर आप कूं राजी करणे वास्ते आप
के कामदार कूं भेजेंगे परंतु आप राजी मत होइ
यो क्यूंकि हमने यह तजबीज करी है कि कुछ
नजराणा देकर श्रीमंत कूं अपणी तर्फ कर के आ
प कूं बूंदी की गद्दी पर बिठा देवेंगे निदान यह
कागज कोई तरह सें उम्मेदसिंहजी २०० के
हाथ आगया तब उम्मेदसिंहजी २०० ने देव
सिंहजी निहायत हरामखोर समझे जब संवत
१८९४ मैं उम्मेदसिंहजी २०० मौका पाकर कर
वर पधारे उहां देवसिंहजी २०० और उन के
बेटे दोलत सिंहजी ये दोनों आये थे उस वक्त
देवसिंहजी ने ऊपरी दिल सें अर्ज करी कि हम
आप के नौकर हैं जो फर्मावो सो करें उस वक्त
उम्मेदसिंहजी २०० ने वह कागज जो देवसिंहजी ने दी
पसिंहजी के नाम भेजा था दिखाया और यह फर्मो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

याकिजो तुमने पहले दिनों में उस बुरे वक्त
में घोडा नहीं दिया था सो तो हम भूलगये थे
परंतु इस वक्त दुश्मनी का बी जनया पे हाकि
या यह फर्माकर देवसिंहजी उसी वक्त मार
डाले जब दौलतसिंहजीने तलवार निकाली
तो वेभी कैदकरके बूंदी में भेजेगये उम्मेद
सिंहजी २०० ने इंद्रगढ खालसे कर लिया
देवसिंहजी का रणवास नैणवा में भेजदिया
और इंद्रगढ के परगनों में अपणा कब्जाकर
णे वास्ते फौज भेजी परंतु उस वक्त फौज में खातो
ली के महाराजा ने आकर रात के वक्त ऐसा
धावा किया कि फौज भागगई जब यह खबर
सुणकर उम्मेदसिंहजी २०० ने फेर फौज भे
जी तब कोई सामना करणे वाला नहीं रहा
अणघोरा ढीपरी वगैरे सब गाँव कब्जे में
आगये इंद्रगढ में और ढीपरी में उम्मेदसिं
हजी २०० ने किले बणवाये जब कितनेक
दिनों पीछे दौलतसिंहजी मरगये तब मि
हरबानी करके उम्मेदसिंहजी २०० ने देव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिंहजी के भाई भक्तरामजी कूं इंद्रगढ बख्श
दिया कितनेक दिनों पीछें उम्मेदसिंहजी
२०० ने दीपसिंहजी कूं बुलाकर जागीर में
कापरणदी और गुना माफ किया जबकि ज॰
वाहिर मल जाट का जयपुर की तर्फ हमला
हुवा तब माधवसिंहजीने उम्मेदसिंहजी २००
के नाम लिखभेजा कि यह वक्त मदद करणेका
है इस वक्त आप फौज भेजकर मेरे पर अहसा॰
न करो यह देखकर उम्मेदसिंहजी २०० ने संवत
१८२३ में ५००० पांचहजार फौज के साथ आपके
बडे महाराजकुमार अजित सिंहजी २०२।१ चौदा
१४ वर्ष की उमर में भेजे यह बात सुणकर माध॰
वसिंहजी बहुतराजी होकर दस्तूर सेंभीजियादा
दूर तक पेशवाई में आये और कहाकि उम्मेद॰
सिंहजी २०० ने बडी अचंभे की बात करी कि
लडाई के वास्ते बडे महाराजकुमार भेज दिये
माधवसिंहजी ने दोस्ती के सबब सें इन कूं मह॰
लों में आप के पासही रक्खे लडाई में नहीं जा॰
णेदिये लडाई होणे पीछे माधवसिंहजी ने अजि॰

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तसिंहजी २०१।१ बूंदी भेजे एक हाथी १ दो घो
डे २ और दो सिरोपाव सरपेच १ और कंठी १ ये
दिये और धूलाशहर के ठाकुर दलेलसिंहजी
बूंदी तक साथ पहुंचाणे भेजे संवत १८२३ माघ
सुदि ५ के दिन अजितसिंहजी २०१।१ बूंदी में दा
खिल हुवे जबकि सैंधिया केदार रावजी और
महाजी ने जोधपुर पर चढाई करी उसवक्त जो
धपुर के महाराज बिजयसिंहजी ने मदद वास्ते
उम्मेदसिंहजी २०० बी बुलाये थे जो कि सैंधि
या कूं ८००००० आठलाख रुपया फौज खर्च
का देकर जोधपुर वालों ने मेल कर लिया इस
सैं पीछे जब जयपुर के मुल्क कूं लूटते हुवे सैं
धिये मोजाद में आपहुंचे उसवक्त कोटा के महा
रावजी ने आपका कामदार अखेराम कायथ उ
न के पास इस वास्ते भेजा कि आप बूंदी के
ऊपर चढाई करो और बूंदीवाले जोधपुर वालों
की मदद वास्ते गये थे इस्सैं ये आपके दोस्त न
हीं हैं जब कायथ अखेराम सैं यह सुणी और
कुछ रुपये भी पाये तब महाजी सैंधियानें बूंदी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर चढाई करदी जब यह बात जोधपुर में उ॰
मेदसिंहजी २०० ने सुणी तो इनों ने जल्दी बूंदी में
आकर लडाई का सामान इकट्ठा किया किला कोट
वगैरे दुरुस्त किये आखिर दखणियों की फौज ने
बूंदी घेरली उसमें महाराव छित्रसिंहजी भी मौ॰
जूद थे दोनों तर्फ सें तोपें चलने लगीं जयपुर सें
माधोसिंहजी नें बूंदी की मदद वास्ते फौज भेजी पां॰
वड हेडा के जागीरदार राजावत द्वारकादासजी उ॰
स फौज में सरदार थे और शाहपुरे के राजा उमेद
सिंहजी नें आप के छोटे बेटे मालिमसिंहजी के
साथ बूंदी की मदद वास्ते फौज भेजी और जोधपुर
सें विजयसिंहजी ने कुछ भी मदद नहीं भेजी बहु
त दिनों की लडाई पीछे जब महाजी सेंधिया ने यह
समझा कि बूंदी का टूटणा मुशकिल है तब उमे॰
दसिंहजी २०० सें मेल करणे वास्ते यह कहा भेजा
कि हम ने कोटा के महारावजी के कहणे सें यह
लडाई शुरु करी थी परंतु यह छोटी बात जाण
कर हमने छोडदी और आप आकर हम सें मि॰
लो हमारी तर्फ सें कोई बेजा बात जाहरी में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं आवेगी उम्मेदसिंहजी २०० ने यहबात
सुणकर और मुनासिब समझकर माधाणी
भगवंतसिंहजी कूं बुलाकर यह फर्माया कि
हम सैंधिया सैं मुलाकात करणे वास्तेजाते
हैं जो सैंधिया हमकूं मारकर शहर लियाचा
हे तो जब तक तुम जीवते रहो तब तक तो
मत छोडणा मरे पीछे जो चाहे सो लेवे यह
फर्माकर शहर के बाहर निकले सैंधिया आ
पके डेरों के बाहर के दरवाजे तक पेशवाई
मैं आया दोनों साहब बदरीखाने मैं बिराजे जब
महाजी सैंधियाने दोस्ती की बातें करी तब जो
कुछ रुपैये चढरहे थे सो देकर रुखसत किया
यह लडाई संवत १८१९ मैं हुई जबकि मेवा
डों ने बूंदी के मुल्क मैं लूट मचाई उसवक्त उ॰
म्मेदसिंहजी २०० ने फौज चढाकर वे सब जेर
करलिये और टहला मांगटला टीटहरा इन
गांवों के कान्हावत ठाकुर क़ैद करदिये और
वह मांगटला का ठाकुर जिस ने किसी वक्त य
ह कहाथा कि उम्मेदसिंहजी २०० मेरे इलाके

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में जितनी दूर तक आवें उतनी जमीं दान कर
दूं डाढी मूंछ मूंड कर जहल खाने में पहुंचा-
या यह बात सुण कर जब राणा अडसीजीने
कान्हावतों के छुडाणे वास्ते बूंदी में काम दा-
र भेजा तब उस की अर्ज सुण कर कुछ दंडले-
कर उन कूं छोड दिया उस वक्त पीछे फीरोला
बीखरण बाकरां वगैरे उम्मेदसिंहजी २०० -
का हुक्म मानने लगे और होली दसरावा प-
र इन गांवों के ठाकुर बूंदी हाजर होणेलगगा-
ये इस सें पीछे खेंराड के मीणों ने बूंदी के मुल्क
में लूट मचाई उन कूं भी उम्मेदसिंहजी २०० ने
उन के किये का खाद चखाया यह बात संवत
१८२२ के साल में हुई जब कि मोजे पगारां के
ठाकुर उद्योतसिंहजी नाथावत जो पहलां बूं-
दी में दलेलसिंहजी के वक्त उन में मिलगयेथे
और पगारां कूं छोड कर मरहटों में जामिले और
बूंदी के मुल्क में लूट मचाई तब उम्मेदसिंहजी
२०० ने उन के काका बखतसिंहजी कूं पगारां दे-
दी जब संवत १८२२ के साल में फिर उद्योतसिंह-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी ने आकर पगारां लेणेका इरादा किया उस
वक्त उम्मेदसिंहजी २०० ने उद्योतसिंहजी मर
वाडाले उम्मेदसिंहजी २०० ने दूसरे महाराज
कुमार बहादुरसिंहजी २०१।२ कूं गोठराजागी
र मैं बख्शा और उन सैं छोटे सरदारसिंहजी
२०१।३ कूं दुधारीजागीर मैं बख्शी और संवत
१८२७ मैं उम्मेदसिंहजीने २०० जहानसैं दिल
उठालिया और आप तप और यात्रा इरिन्नया
र करणे वास्ते १८ वर्ष की उमर वाले आप के
बडे महाराज कुमार अजितसिंहजी २०१ कूं
बैशाखसुदि १२ द्वादशी के दिन राज देदिया
और आप श्रीजी नाम करके मशहूर हुवे अ
जितसिंहजी २०१ ने गद्दी बिराजतेही पहलां
तो उन मीणों कूं जिन्होंने बूंदी के मुल्क मैं
लूटमार मचार करवीथी मार कर ज़ेर किये चो
री वग़ैरे जो उन के बुरे काम थे वे सभ तरह
बंद कर दिये पहले दिनों मैं मुहानाम गावं
के मगनाउत्तों ने एक हाडा मार डालाथा इस
बात कूं याद करके मानपुरा और मुहा इन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दोनों गाँवों कूँ मार कर खराब कर दिये और उन गावों के सीसोदियों कूँ जो उस हाडा के मा रणे में शामिल थे पकड कर मोजे थाणा में जो कि बूँदी के इलाके में है लेआये अजितसिंह जी २०१ ने यह विचारा कि हमने मीणे लोग नेस्तो किये परंतु जब तक कोई खास इस का म के लायक जगह में किला नहीं बणेगा त बतक इन मीणों का पक्का बंदोबस्त नहीं हो गा यह विचार कर बीलहटा नाम गाँव में जो उस वक्त उदयपुर वालों के कब्जे में था वहाँ कि ला बणवाणे वास्ते राणाजी सें यह कहला भे जा कि आप के गाँव बीलहटा में जब तक कि ला नहीं बणेगा तब तक मीणों का बंदोबस्त नहीं होगा इस वास्ते या तो उसमें आप किला बणवावो नहीं तो हम बणवावेंगे और जब इस बात का जवाब राणाजी की तर्फ सें कुछ भी नहीं आया तब इनों ने इस बीलहटा में किला बणवालिया और अपणी तर्फ सें कि लादार रखदिया जब कि अजितसिंहजी २०१

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बांसवाडे मैं व्याह करणे पधारे उस वक्त जाज
पुर के राणा उन्हों ने बीलहटे पर हमला किया
था उस वक्त उम्मेदसिंहजी २०१ ने दुश्मन मार
भगाये और उन के डेरे लूट लिये जब कि अजित
सिंहजी २०१ बांसवाडा सें पीछे पधारे तब राणाजी
ने बूंदी कूं लिख भेजा कि आपने बीलहटा जोर सें
ले लिया है जो आप उस्सें कबजा रखा चाहते होतो
आप के छोटे भाई बहादुरसिंहजी कूं यहां रहणे
वास्ते भेजदो उन कूं हम एक लाख १००००० की जा-
गीर देवेंगे और उस्सें बीलहटा बी गिणलेवेंगे इ-
स कागज कूं देख कर अजितसिंहजी २०१ ने आप
के छोटे भाई बहादुरसिंहजी उदयपुर भेजे राणाजी
ने इन की पेशवाई मैं अपणे काका अर्जुनसिंहजी
भेजे राणाजी ने इन कूं जागीर तोदी परंतु बीलहटा
नहीं दिया इस्सें पीछे राणाजी ने मुल्कगीरी मैं बूंदी
की हद के पास शकरगढ मैं मुकाम किया तब
उम्मेदसिंहजी २०१ के नाम इस बात का कागज भे-
जा कि आप बेपरवा ऋषि सरीखे हो सो हम आप
की मुलाकात कूं चाहते हैं यह सुणकर उम्मेद-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिंहजी २०० राणाजी के पास पधारे राणाजी ने श-
वाई वास्ते आये आपके डेरे में लेगये उम्मेदसिं-
हजी २०० ने राज छोडणे के सबब सैं तख्त पर बिरा-
जणा मंजूर नहीं किया इस वास्ते जुदा आसन पर
बिराजकर बात चीत करी इसैं पीछे राणाजी ने य-
ह कहा कि बीलहटा गाँव हमकूं पीछा देणा चा-
हिये तब उम्मेदसिंहजी २०० ने कहा कि मैं ने तो
राज छोडदिया है आप अजितसिंहजी २०१ सैं बदले
बदले गाँव लेलीजिये या उसके रुपये ठहरालीजि-
ये यह कहकर बूँदी कूं पधारे और अजितसिंहजी
२०१ सैं फरमाया कि तूं जाकर राणाजी सैं मिल और
राणाजी ने भी अजितसिंहजी २०१ के बुलाणे वास्ते
अमरचंद कामदार भेजा परंतु उसका मिजाज अ-
च्छा नहीं था उसने बूँदी में आकर बे अदबी भी करी
परंतु यहां के अकलमंदों ने अजितसिंहजी २०१
सैं यही अरज करी कि यह कामदार ही बुरे मिजा-
जवाला है और राणाजी ऐसे नहीं हैं इस वास्ते उन
सैं मेल करणा बहुत अच्छा है और इसमें भी श-
क नहीं कि जब राणाजी इस कामदार की बुराई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुणैंगे तो इस कूँ धमकावैंगे आखिर अजि-
तसिंहजी २०१ राणाजी की मुलाकात वास्ते प-
धारे राणाजी पेशवाई मैं आये आपस मैं मुला-
कात हुई उसवक्त इंद्रगढ के महाराजा भक्तराम
जी के बेटे सनमानसिंहजी वगैरे अजितसिंह
जी २०१ के साथ थे फेर दूसरे दिन अजितसिंह
जी २०१ राणाजी के डेरे पधारे तीसरे दिन राणा
जी इन के डेरे आये और मुलाकात करके पीछे
गये एक दिन राणाजी अजितसिंहजी २०१ सैं
बिना मिले ही शकरगढ सैं अमरगढ की तर्फ
चले गये जब अजितसिंहजी २०१ सैं बूँदी के
अहलकारों ने यह अर्ज करी कि राणाजी तो
अमरगढ की तर्फ चले गये आप भी उहाँ ही
पधारिये जब लोगों ने इस बात के वास्ते बहु-
तसी अर्ज करी तब येभी बेमुनासिब अर्ज कूँ
कबूल कर के अमरगढ पधारे यहाँभी अमर
चंद कामदार अजितसिंहजी २०१ के पास हा-
जिर हुवा अजितसिंहजी २०१ ने फर्माया कि
मैं बूँदी कूँ जाता हूँ अमरचंद ने अर्ज करी कि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राणाजी आपके पास वकील कूं भेजते हैं जो
कुछ वह अर्ज करे उसपर ठीक दीखे सो फर्मा
कर आप बेशक बूंदी कूं पधारिये अमरचंद
के जाणे पीछे वकीलने आकर अर्ज करी कि
आपने बील हटा लेलिया है सो पीछा दिया चा
हिये अजितसिंहजी २०१ ने फर्माया कि मैंने
उसमें एक किला बणवाया है सो उसमें दूणी पैदा
वाला गांव राणाजी लेलेवें या कुछ रुपैये ठहरा
लेवें सो हम साल दर साल देदिया करें जब रा
णाजीने इन बातों मैं सें एक भी नहीं मानी
और यह कहला भेजा कि जो हमारे कहणे सें नहीं
देते हो तो सिंधियों के जोर सें दोगे यह सुणकर
अजितसिंहजी २०१ कूं गुस्सा आगया दो तीन
दिन पीछे अर्थात संवत १८२९ में चैत वदि पड
वा के ३ घडी दिन रहे सें राणाजी घोडे पर सवार हो
कर सैर करणे गये और अजितसिंहजी २०१ भी उसी
तर्फ सें पधारे सैर करके आते हुवे रस्ते में मिल गये
उस वक्त अजितसिंहजी २०१ ने राणाजी सें कहा कि
मैं काल्ह बूंदी कूं जाऊंगा आपने भी ठीक दीखे सो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुजसें कहदेणा चाहिये इस बात पर राणाजी नै न
तो इन की तर्फ देखा न इन्सें बोले फेर राणाजी के
तर्फ के एक राजपूत नै कहा कि आपने राणाजी कु
छ निबल समझे या सिंधिये नहीं देखे इस वगै
रै कई बुरे बचन कहे राणाजी नै उस राजपूत कूं
भी नहीं धमकाया और आप डेरे कूं चलदिये
अजित सिंहजी २०१ नै फेर कहा कि फेर भी आ
प इस बात का जबाबदीजिये मैं आज यहांही
रहूंगा यह कहकर जौहार के वास्ते माथे के हा
थ भी लगाया परंतु राणाजी नै नजर भी नहीं दी
तब तो अजित सिंहजी २०१ नै बरछी चला कर
राणाजी मारडाले जब अजित सिंहजी २०१ नै
राणाजी के सिर काटणे वास्ते तलवार चलाई
उस वक्त राणाजी के एक चोबदार नै दोनों हा
थों के जोर सें अजित सिंहजी २०१ के बांह पर
छडी चलाई इस्सें तलवार तिरछी होगई जि
स्सें राणाजी का सिर नहीं कटा उसवक्त इंद्रगढ
के महाराजा भक्तरामजी के बेटे सनमानसिंह
जी वगैरे नै भी राणाजी पर तलवार चलाई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राणाजी के दो तीन सरदार और भी मारे गये
अजितसिंहजी २०१ राणाजी का घोडा लेकर अ
पणे डेरों में पधारे जबकि इस बात कूं सुणक
र अमरचंदकामदार फौज लेकर राणाजी व
गैरों की लाशों के उठाणे वास्ते आया तब फेर
अजितसिंहजी २०१ भी लडने कूं तयार हुवे
परंतु इन की फौज के सरदारों ने भावसिंहजी
१९६ की सोगंद दिला करके और बहुत सी
अर्ज करके बूंदी कूं भेज दिये और आप भी जो
कुछ असबाब था उसकूं लेकर आगये और कु
छ डेरे तंबू वगैरे रहगये उन कूं राणाजी की
फौज वाले लूट लेगये अजितसिंहजी २०१
आधी रात के वक्त बूंदी में पहुंचे उस वक्त उमे
दसिंहजी २०० ने यह सोचा कि एक तो छोटी
सी बात पर राणाजी का मारणा ठीक नहीं था
दूसरी यह कि जो इस जवानी के जोर में इस
ने ऐसी बहादुरी करी है जो इस वक्त इस कूं
जियादा सरा हैंगे तो चित्त पर अभिमान आ
जायगा इस वास्ते पहलां तो यही फर्माया

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि तैंने यह कामठीक नहीं किया। फेर य॰
ह बिचारा कि जो जियादा बुरी कहेंगे तो इस
का दिल कुंद होजायगा इस्वास्ते प्यार करलि॰
या अजितसिंहजी २०१ बडे शूरबीर थे जो॰
किते नेक दिन फेर जमीन पर रहते तो अप॰
णा राज बहुत दूर तक फैलालेते परंतु संबत
१८३० के बैशाखसुदि १५ के दिन इक्कीसवें व॰
र्ष के शुरू में शीतला की बीमारी में इस संसार कूं
छोडा उस वक्त जो रणवास की हालत हुई हो॰
गी सो लिखी नहीं जाती इनकी ११ राणियों में से
एक सती हुवे उम्मेदसिंहजी २०० ने सब कूं
दिलासा दिया और जो कि उम्मेदसिंहजी २००
ने राज छोड दिया था इस वास्ते साढे च्यार ४॥
महीने की उमर वाले आप के पोते विष्णुसिंह
जी २०२ संबत १८३० के जेठ वदि ११ एकादः
शी के दिन गद्दी बिठादिये और सब तरह आ॰
प उन की खबरदारी पर रहे इन के इंद्रसिंह॰
जी २०३।१ बलदेवसिंहजी २०३।२ रामसिं॰
हजी २०३।३ गोपालसिंहजी २०३।४ ये श्री

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाराजकुमार हुवे इंद्रसिंहजी २०३।१छोटे
और भी हुवे थे परंतु नाम निकलने तक भी
सलामत नहीं रहे और विष्णुसिंहजी २०२के
आगे धाभाई सुखराम कामदारी करता था ज
ब इन कूं बालक समझकर राणा अडसीजी के
बेटे हम्मीरसिंहजी नैमहाजी सैंधियासैं बूंदी
पर चढाई करणे वास्ते कहा महाजी नै नैण
वामैं मुकाम कर के बूंदी कूं कागज भेजा कि आ
प नै जोरावरी सैं राणाजी का गाँव बीलहटा
लेलिया और राणाजी भी मारडाले सो ठीक
नहीं करी अब यही मुनासिब है कि बीलह
टा गाँव और राणाजी का घोडा पीछा देदो यह
सुणकर सुखरामजी धाभाई नै वक्त कूं विचा
रकर बीलहटा और राणाजी का घोडा पीछा
दिदिया जब महाजी नै कित नेक दिनों तक
बेघूं के घेरा दिया उस वक्त उम्मेदसिंहजी २००
नै बेघूं की मदद वास्ते फौज भेजी जबलडाई
होणे पीछे फौज खर्च देकर बेघूं वालों नै महा
जीसैं मेल करलिया तब फौज पीछी आई

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उम्मेदसिंहजी २०० नेबूंदी केजागीरदार औ
रभले आदमियोंकूं बुलाकर यह फर्माया
कि हालतुमारा मालिक बालक है सो थाभा
ई सुखराम कामकरतारहै और तुमलोग इस
के कहणे मैं रहो भवानीसिंहजी और माधो
णी भगवंतसिंहजीसें फर्माया कि तुम रस्ते
मैं बिसुसिंह २०२ के पास रहा करो आप के
पुत्र बहादुरसिंहजीसें फर्मायाकि रस्ते मैं तु
म इन के आगे रहा करो यह फर्माकर संवत
१८३० मैं आप द्वारकाजीकी यात्रावास्ते पधारे
इनों नेजगन्नाथजीकी यात्रा संवत १८२८ मैं
अजितसिंहजी २०१ के वक्त मैं करलीथी जब
द्वारकाजी के दर्शन करके नावों मैं बिराजकर गो
पी तलाई मैं स्नान करके पीछे पधारते वक्त का
वा नाम धाडी लोगों नै पहाड के दोनों तर्फ च
ढकर इन सैं दंगा किया और तीर बरसाना शुरु
किया तबतो लाचार इनों नेभी उनकूं सजा दे
णेका हुक्म दिया आखिर नगामणि नाम धाडि
यों के सरदार और उसके काका के मार लेणे सैं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब धाडी भागगये वे धाडी ऐसे जोरावर थे
कि रस्ते मैं चलणा इन के आगे मुश्किल था इ
न के भागणे सैं उहाँ के लोगों कूँ अचंभा हुवा
क्यों कि उम्मेदसिंहजी २०० के साथ सिपाही ब
हुत कम थे उम्मेदसिंहजी २०० इस यात्राकूँ करके
संवत १९३२ के चैत्र सुदि १ के दिन बूँदी मैं दाखि
ल हुवे संवत १९३३ के शुरू मैं इनों ने बदरी ना
थजी की यात्रा करी इसी संवत के भाद्रपद बदि
६ के दिन बूँदी दाखिल हुवे संवत १९३४ के शु
रू सैं १९३५ के शुरू तक रामेश्वरजी की यात्रा क
री संवत १९५२ मैं जगन्नाथजी की यात्रा दूसरी
बार हुई उस मैं जो पहली यात्रा के वक्त तीर्थ र
हगये थे उन की भी यात्रा हुई संवत १९६१ के
अगहन वदि ४ के दिन उम्मेदसिंहजी २०० ने
इस संसार सैं कूँच फर्माया इनों ने अपणे राज के
दिनों मैं महलों के भीतर श्रीरंगनाथजी पधराय चि
त्रसाला और रंगबिलास नाम बाग और कचम
हल बणाये और एक अखाडा रसोई और ता
रागढ मैं किलाधारीजी का मंदिर एक भंडार

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और एक बडा टाँका ये बणाये और गणेशया-
दी नीमकारावला और आशापूराजी का मंदि-
र कुवे का रावला और गुलाह बावडी के पास
उस घोडे की मूर्त्ति कि जो तीथों मैं उन की खिद-
मत मैं था बणाई और केदारजी के पास
देव विलास नाम बाग एक कुंड शिकार बुर्ज
गुलाबबाडी हनूमानजी की कुंजी नहर और
पायगाँ वगैरे बणाये और वेधूं मैं बुधसिंहजी
१४४ का चौंतरा बणाया और इन की कृपापात्र
रूपरामरायजी ने केदारनाथजी के पास रूपवि-
लास नाम बाग बणाया ये बडे शूरवीर और
नीति के जाणने वाले थे इन की तारीफ इन के
कामों सैं जाहिर होजाती है कैसी कैसी तजबी-
जों सैं इनों ने बूंदी दुश्मनों के पेट सैं निकाली
मेरी समझ मैं इस वंश मैं ये सब सैं बढकर हु-
वे मल्हारावजी हुल्कर वगैरे बहुत से उन का
बडा लिहाज रखते थे एक बार का जिकर है
कि इस तर्फ जसवंतरावजी हुल्कर की फौज
आयपडी थी विसुसिंहजी २०२ ने किसी तर-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हदिल मैं शक लाकर शहर के दरवाजे बंद क
रदिये थे और किसी नालायक नै शहर पना
ह के ऊपर मैं हुल्कर की फौज की तर्फ गोली
चलाई जसवंतरावजी श्रीजी की मुलाकात
वास्ते केदारनाथजी कूं आते थे उनौंने यह डो
ल देखकर बूंदी के लूटणे का हुक्म दिया इहां
क्या देर थी दखणियौं नै बाहर ली बूंदी मैं लूट
मचादी और हल्ला शुरू किया उस वक्त बूंदी की
यह दशा देख कर उम्मेदसिंहजी २०० तुरत हु
ल्कर के पास पधारे जब दोनौं विराजे तब हुल्क
र नै विसुसिंहजी २०२ की शिकायत करी तो
श्रीजीनै जबाब दिया कि मल्हारावजी के वंश
मैं आप कपूत हुवे और मेरे वंश मैं यह कपूत
हुवा क्यूंकि आपनै इस पर हल्ला करणा चाहा
और इसनै आप का दतना शक किया और य
ह भी कहा कि आप बूंदी कूं फतह तो कर लोगे
परंतु इस वक्त बहुत पैसा और आदमी का ख
रच पडेगा क्यूंकि यहां बहुत से राजपूत इकट्ठे
होरहे हैं और जो इस राज पर आप का अहसा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहे सोजाता रहेगा जो कुछ रुपैये चढ रहे हैं
उन का बंदोबस्त मैं कर देता हूं जसवंतराव जी
ने सब फोजरे की ओर डेरे उठालिये दखणि
यों की हमेशह बेइंतिजामी और सख्ती और
सरकार अंगरेज बहादुर के इंतिजाम की खूबी
और नेकचाल और इकबाल सदा बढता सम
ककर बिसुसिंहजी २०२ ने आप के बाबा उमे
दसिंहजी २०० की सलाह सैं संबत १८४२ में
तामस करहाम १ नवाब मकफरसन २ कर
नेल मीन ३ गवर्नर जनरल मिसटर जान म
कफर्सन ४ वगैरे साहिबलोगों के साथ काग
ज पत्र लिखणा जारी किया जब संबत १८६१
मैं मुकंदरे के बाहर अमजार नदी के पास
हुल्कर की फोज के साथ सरकारी फोज का
सामना हुवा उस वक्त बिसुसिंहजी २०२ ने
वकील साहलाखों और टोकरा वास के मग
नसिंहजी छगनसिंहजी महासिंहोत तलोदा
के तिलोकसिंहजी महासिंहोत और सांव
त के हरिसिंहजी और गोड धीरसिंहजी से

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वरे के पाँच भाइयों के साथ इन वगैरे सरदार
फौज के साथ सरकार अंगरेजी फौज की म॰
दद वास्ते भेजे उहां फौज के मालिक मोनस॰
न साहिब के हुक्म के माफिक काम दिया और
फेर कर नेल्ली क साहिब और डंकीन साहि
ब वगैरे के लिखने माफिक सरबराही और
सब तरह की मदद सरकारी फौज की करते र
हे और सैंधिये और हुल्कर की फौज का रस्ता
रोकते रहे संवत १८६२ में जब जयपुर के म॰
हाराज जगतसिंहजी और जोधपुर के महाराज
मानसिंहजी के लडाई की तयारी हुई तो बिसु
सिंहजी २०२ ने जगतसिंहजी और मानसिंह
जी इन सैं यह कहला भेजा कि यह लडाई ह॰
मारे ऊपर माफ करके मोकूफ रखणी चाहिये
और इस के मोकूफ करणे वास्ते खुद मैं आऊं
तब जगतसिंहजीने यह कहला भेजा कि ह॰
मने आप के कहणे सैं लडाई मोकूफ रक्खी
परंतु मानसिंहजी के उमराओं कूं मानसिंह॰
जी के तर्फ सैं यह शक हो रहा था कि मानसिंह॰

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी हम कूँ बिगाडा चाहते हैं इस सबब सैं मान-
सिंहजी कूँ कमजोर करणे वास्ते मानसिंहजी के
उमराव जगतसिंहजी मैं मिलगये उस वक्त जग-
तसिंहजी फिर लडने कूँ तयार हुवे तो इहाँ सैं मा-
नसिंहजी की मदद वास्ते २००० फौज भेजी गई क्यूं
कि बिसुसिंहजी २०२ के कहणे बमूजिब मानसिं-
हजी ने लडाई मौकूफ हीर कवा और जगत सिंह-
जी ने लडाई फिर उठाई इस सैं मानसिंहजी कूँ ही मदद
भेजी गई जब जगतसिंहजी सैं हार कर मानसिं-
हजी भाग निकले उस वक्त बूँदी की फौज ने
उन के आगे अर्ज करी कि हम कूँ हुक्म हो वे-
तो हम लडने कूँ तयार हैं और आप का हट
जाणा ठीक नहीं जो हम इसी तरह पीछे जा-
वैंगे तो बूँदी की सरकार मैं हमारी नेकनामी
नहीं होगी परंतु जब मानसिंहजी का दिल
नहीं चला तो फेर फौज पीछी आई संवत
१८६७ मैं बिसुसिंहजी २०२ के काका बहा-
दुरसिंहजी के बेटे बलवंतसिंहजी ने नैणवा
का किला अपणे कब्जे मैं करलिया भजने-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

री के संकरसिंह सांवत के हाडे ने मिलकर ये
किले के भीतर ले लिये और भी कई किले के
निगहवान इन में मिल गये और जो इहां का
किलेदार गुमानधा भाई था वह दगे सें मरवा
डाला इस के मरणे सें और जो किले के निग
हवान थे उन का दिल टूट गया और वे वहां
सें भाग आये जब यह खबर बूंदी पहुंची तब
बिसुसिंहजी २०२ ने फौज भेजी चारमही ने
तक लडाई होती रही ॥ आखिर बलवंतसिंह
जी किले सें निकाल दिये फेर कितनों कदिनों
तक ये बूंदी के मुल्क में लूट करते रहे आखिर
कुसूर माफ कराणे वास्ते बिसुसिंहजी २०२
की हजूर में हाजिर हुवे इनों ने तो कुसूर माफ
कर दिया परंतु ये तो फेर भी ऐसा ही काम कर
ते रहे बलवंतसिंहजी ने महाराव राजा राम
सिंहजी २०३ के वक्त में कोटे की तर्फ दंगा उ
ठाणा चाहा इस बात की खबर पाकर माधो
सिंहजी कालाने साहिब अजंट कालफिल्ड
कूं इस बात की खबर दी उन्ही दिनों में बलवं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तसिंहजी की पाटण मैं जाणे की खबर सुण
कर अजंट साहिब ने बूंदी मैं इस मजमून की
इत्तिलाअ करी कि महाराजा बलवंतसिंहजी
का चालचलन कई दिनों सैं बेवाजिब सुना
जाता है और इन दिनों मैं इन की पाटण मैं
आने की और कोई तरह का फिसाद उठाने की
खबर है सो यातो इन के चालचलन की जिम्मे
वारी करणी चाहिये नहीं तो यह इजाजत हो
कि इन का मुनासिब बंदोबस्त हम कर लेवैं
उस वक्त श्रीदरबार तो कम उमर थे परंतु अ
हलकारों के दिल मैं यही ठहरी कि बलवंत
सिंहजी का यह भरोसा नहीं है कि आगे कूं
भी इन का चलन दुरुस्त रहे इस सैं जिम्मेवा
रीकरणी मुनासिब नहीं जब इहो काजवाब
पाकर साहिबनैं बलवंतसिंहजी बुलाये और
इनों ने लडाई पर कमर बांधी तो लडाई मैं
मारे गये इसी लडाई मैं इन के भाई मेरसिंह
जी के बेटे धौंकलसिंहजी और फतहसिंह
जी भी मारे गये जब संवत १८७३ मैं सरकार

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंगरेज नेइस तर्फ के रजवाडों के साथ अ॰
हद नामा करणे कूं उन के भले आदमी बु॰
लाये तब कोटा के महारावजी का और अं॰
गरेज बहादुर का अहद नामा ठहराणे कूं
जालिमसिंहजी ने दिल्ली मैं भले आदमी भे॰
जे उस वक्त सैं पहलाहीं जालिमसिंहजी ने
इंद्रगढ १ खातोली २ बलवण ३ आंतरदा
४ करवाड ५ पूसोद ६ पीपलदा ७ वगैरे के
महाराजा जो बूंदी के नीचे थे॰ जालिमसिंह॰
जी ने साहिब सैं उन कूं कोटे के शामिल लिख॰
वालिया जोकि और रजवाडों के भले आद॰
मीगये उसवक्त बूंदी सैं भीगये थे परंतु रस्ते मैं
लुटेरों सैं ऐसा दंगा होगया कि बूंदीवाले आ॰
दमियों कूं पीछा आणा पडा इतने दिनों मैं को
टे वालों का अहद नामा होगया था जब दूस॰
री बार बूंदी सैं भले आदमी फेर तयार किये
इतने मैं टाडसाहिब इस तर्फ आपहुंचे सा॰
हिब कूं वहां अच्छी तरह मालूम होगया कि
इंद्रगढ वगैरे कोटडी पहलों बूंदी के नीचे थी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परंतु साहिब ने कहा कि अब तो हम लिख
चुके हैं इसीवास्ते साहिब ने अपने बणाये
हुवे टाडना मे मैं यह लिखा है कि इंद्रगढ
वगैरे कोटडियें बूंदी के नीचें होयतो ऐन इ
न साफ की बात है संवत १८७४ मैं माघ सु
दि ५ के दिन दोनों सरकारों का अहद नामा हो
गया जब संवत १८७७ मैं महाराव किसोरसिं
हजी और जालिमसिंहजी के आपस मैं दंगा
होगया था और महारावजी भागकर बूंदी मैं
आगये थे उस वक्त विसुसिंहजी २०२ ने बडी
खातिदारी करी और सभ तरह समझाये कि को
टा आपका ही है जालिमसिंहजी की क्या ता
कत है कि कोटे कूं रखलेवैं परंतु कितने कम
ही ने रह कर महारावजी कुछ विचार कर दि
ल्ली कूं चलेगये संवत १८७८ आषाढ सुदि
१५ के दिन विसुसिंहजी २०२ ने इस जहान
मैं कूंच फर्माया इनोंने छत्र महल सैं लगता
ही उत्तर की तर्फ अखाडा बणवाकर हनुमा
नजी पधराये और बजरंगविलास नाम बाग

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो बूंदी सैं पश्चिम की तर्फ नया बाग नामक
हलाता है बणाया और किले तारागढ मैं ब
डा और छोटा ये दो जीव रखे और चौउंड दर
वाजे सैं लेकर महलों तक और भैरु दरवाजे
सैं लेकर निर्भय बुर्ज तक कोट बडकी रिवास
गोपाल बुर्ज सुख महल नैणवा मैं गुमान सा
गर तालाब ये बणाये इन के राणीजी साहिबा
जोधपुरीजी कृष्णगढ के राजा प्रतापसिंहजी के
बेटी ने बूंदी सैं दक्षिण की तर्फ धर्मशाला बणा
ई और उस मैं हनुमानजी की मूर्ति पधराई व
हां आये हुवे मुसाफिर कूं डेरा भी मिलता है
और खाणे कूं भी मिलता है और उन की ख
वासजी सुंदर सोभाजी ने नोलखा तालाब के
किनारे पर सुंदर घाट बणवाया इन मैं धर्म
शाला महाराव राजा साहिब राम सिंहजी २२३
के राज मैं बणी है जो कि बिसु सिंहजी २०२ के
तीन बडे महाराजकुमार का उन के आगे ही
स्वर्गबास होचुका था इस वास्ते संवत १८७८
के श्रावण वदि १२ के दिन साढे नौ वर्ष की उमर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं महारावराजासाहिबरामसिंहजी २०३ गद्दीपर बिराजे श्रावणसुदि ३ के दिन अजंटदाड साहिब बूंदी आये दूसरे दिन दरीखाना हुवा साहब की तर्फ सैं हाथी घोडा गहणा शस्त्र शिरोपाव दस्तूर माफिक आया इन के भीमसिंहजी २०४।१ रङ्गनाथसिंहजी २०४।२ रघुबीरसिंहजी २०४।३ रङ्गराजसिंहजी २०४।४ रघुराजसिंहजी २०४।५ ये पांचतो असल और अर्जुनसिंहजी १ गोवर्द्धनसिंहजी २ जगन्नाथसिंहजी ३ ये तीन खवासजी के हुवे इन मैं भीमसिंहजी २०४।१ फारसी और संस्कृत इल्म दातारी बहादुरी तीरंदाजी जबाब दिही वगैरे कई बातों मैं एकही थे और रङ्गनाथसिंहजी २०४।२ बडे बुद्धिमान थे परंतु संबत १९१३ मैं रङ्गनाथसिंहजी और संबत १९२५ मैं भीमसिंहजी २०४।१ इस दुनियां सैं कूंच फर्मा गये महारावराजारामसिंहजी २०३ नैं गद्दीपर बिराज कर इस राज कूं ऐसी रौनक बख्शी कि जिस का लिखणा इस छोटी सी कलम सैं कहां होसक्ता है परंतु कवि

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोगों ने सबहा कि मों की इसी ढब सैं तारीफ क
रीहै इस वास्ते फिकर की बात है कि जिन लोगों
ने इन कूं नहीं देखा है वे इस हमारे लिखणे
कूं कवि लोगों के तौर पर समझैंगे परंतु जो दा
ना और अकल मंद हैं वे जुरूर हर एक आद
मी सैं इन की तारीफ सुण कर हमारे लिखे पर
हम नहीं मारैंगे ये सत्य बोलणे वाले दयावा
न विद्या के आदर करणे वाले न्याय मैं तर्फदा
री नहीं करणे वाले दस्तूर पर कायम कौल के
सच्चे विद्यावान मनसूबे के बृहस्पति अपणे ध
र्म मैं पक्के आप तो अहैतमत मैं हैं परंतु आप
की रैयत और चाकरों के वास्ते यह ता कीद
नहीं कि वे भी इसी रस्ते चलें जिस जिस आदमी
का जिस जिस मत मैं मन हो वह उसमैं चले तो
ये बहुत राजी रहते हैं और आदमी की पिछा
ण मैं इस तरह के कि जो आदमी थोडे बक्त भी
इन की हजूर हाजिर रहे उस की बुराई भला
ई सैं पूरे वाकिफ हो जाते हैं इन महाराव रा
जा साहिब का ब्याह जोधपुर के महाराज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानसिंहजी की बाईजी सैं हुवाथा महाराज
मानसिंहजी की तर्फ सैं उन के बाईजी साहि
बा की चाकरी मैं बहुत से मारवाड़े बूंदी मैं रहा
करते थे उन मैं बहुत से बुरे चलन वाले थे भले
आदमियों कूं दुःख देते थे जब बूंदी सैं इन की
शिकायत राज की तर्फ सैं मानसिंहजी पास भे
जी गई तो उनों नै भी उस पर चित्त नहीं दिया
और उन मारवाडों नै जो बूंदी के कामदार किस
नरामजी धाभाई की चुगली लिखी उस पर
चित्त देकर मानसिंहजी नै दंगा करणे के इ
रादे सैं आपके बाईजी कूं बुलाणे के बहाने
सैं २०० सवार ३०० पैदल सिपाही बूंदी भेजे
जब वे बूंदी मैं आपहुंचे और उन दिनों मैं
श्रीदरबार के छोटे भाई गोपालसिंहजी
की बरात गागरणी कूं और विनयसिंहजी
की बरात उणियारे कूं गई थी दोनों बरातों
के साथ सरकारी फौज जियादा थी बूंदी मैं थो
डी थी इस मौके कूं पाकर इहां महाराणीजी
साहिबा राठोडजी के कामदार व्यासरूपराम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाजन सरदारमल राठोड मेडत्या बभूतसिं
हजी ने सालजी नाम राजपूत कूं बुलाकर
यह कहा कि तुम धाभाईजी कूं मारडालो इ-
सने कुछ समाचार पहुंचाणे के बहाने सें
कचहरी में धाभाई किसनरामजी के पास जा-
कर तलवार सें धाभाईजी मारडाले जिस व-
क्त सालजी नंगी तलवार सें हीं कचहरी सें
भाग कर चला उस बक्त बख़शी शिवलाल ने
पकडलिया उसी वक्त पहरे वाले सिपाही ने
उस कूं मारडाला और जो २५।३० आदमी सा-
लजी की मदद वास्ते हजारी दरवाजे सें बाहर
सामणे खडे थे वे उसकूं मारा देख कर आप आप
की हवेली में जा घुसे जब यह खबर दरबार
में मालूम हुई तो हुक्म हुवा कि यहां सें सि-
पाहियों कूं लेकर कितनेक उमरावजावें औ-
र वे सीधे रस्ते गिरफतार होणा मंजूर करें तो यों
पकडलावें नहीं तो हवेलियों कूं घेर कर प-
कडलावें उमरावों ने हवेलियों के पास जाक
र हुक्म माफिक सीधे रस्ते गिरफतार होणे वा-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सेकहा जब इनों ने नहीं मानी तो मारवाडों
की हवेलियें घेरी गई और शहर के दरवाजे
बंद करदिये क्यूंकि जोधपुर की तर्फ़ सें भेजे
हुवे सवार और सिपाही चौगान दरवाजे के
बाहर पडे थे फेर वेभी हवेलियों का घिरना
सुणकर बूंदी सें पांच कोस पर जा उतरे जब
हवेलियों में सें मारवाडों ने बंदूक़ चलाणा शुरु
किया तो इस तर्फ सें भी लड़ाई होणे लगी इस
बात के निश्चय करणे वास्ते कोटे सें मिस्टर चार्लि
सत्रिवलन अजंट साहिब आये जब साहिब ने
आप के ख़बर नवीस वग़ैरे सें अच्छी तरह
निश्चय कर के दरबार सें कहा कि आप की
क्या मरज़ी है जब दरबार ने यह फर्माया कि
जो इस बड़े क़ुसूर का पूरा दंड इन कूं नहीं मि-
लेगा तो हमारी सरकार का कोई डर नहीं मा-
नेगा हुक्म का ढीला पणा मालूम होगा साहि-
ब अजंट ने कहा कि थोडी देर माफ फर्मावें
कि जो मैं भी मेरी तर्फ़ सें उन सें पूछ लूं जब
साहब ने उन के वास्ते यह लिख भेजा कि जो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम आप हीगिरफतार होजावोतो दरबार
में तुमारा इन्साफ होसकेगा इस परभी उ॰
न्होंने आणा मंजूर नहीं किया तब साहिब॰
चुप के होरहे जब घेरा देणे में घबराकर मार
वाडे बाहर निकले तो वे तीनों जो इस काम
कीजड थे सो तो मारडाले और बाकी मारवा
डे बूंदी में निकाल दिये इस बात के सुणने में
जोधपुर के सवार पैदल भी जोधपुर चलेगये
साहिब अजंट कोटे कूं गये और साहब अज
टने इस बात की खबर साहब लोगों में भेजी
संवत १८९० के काल में जब लोगों को रुपे-
यों सें भी नाज नहीं मिलने लगा तब इन महा
राव राजा साहिब ने आप के भंडारों में बाजार
के भाव सें डेढे भाव नाज दिलवाकर लोगों का
जीव बचाया संवत १८९३ में इनों ने बहुत
अच्छा यह काम किया कि जो राजपूत लोग
जन्मते हीं अपणी लडकियों कूं मारडाल ते
थे यह चाल बूंदी के राज में सब जगह मोकूफ कर
दी अंगरेजों की तर्फ सें तो संवत १९०१ में लिखा

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आयाथा संवत् १८९६ मैं इनोंने पुष्करजीकी
यात्राकरी और तीनबार और वक्तभीपुष्करजी
मैं पधारणाहुवा परंतु उसमें केवल यात्रा का
हीसबबनहींथा संवत् १८९७ मैं इन्न के भाई
गोपालसिंहजीनेबेसुनासिबचालमैं बहुत
मनदिया तबपहलांतो इनोंने बहुत समझा
ये जबनहींसमझे तबउन्न की हवेलीमैं नज
रबंदरक्खे और उसीहालतमैं संसार सैं कूंच
फर्माया इन्न श्रीमहाराव राजा रामसिंहजी
२०३।३ ने संवत् १८९८ के पोषसुदि २ के दि
नसैं पूर्व के तीर्थोंकी यात्रा शुरूकरी और संवत्
१९०० के आषाढबदि १३ के दिन बूंदी मैं दा
खिलहुवे इन अठारे १८ महीनोंमैं मथुरा १
वृंदावन २ प्रयाग ३ काशी ४ गया ५ चित्रकू
ट ६ वगैरे बहुत से तीर्थों की यात्राकरी बहुत
सारुपैया और जमीदान करी इसयात्रामैं ला
टसाहिब और कईसाहिबोंसैं मुलाकातहुई
संवत् १९०४ मैं वह पाटण का परगना जो
दलेलसिंहजीनेमरहटोंकूं दियाथा इनोंने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंगरेजोंसें पीछालिया जब कि संबत १९१४
मैं सरकार अंगरेज़ी फौजने बागी हो कर
दंगा किया उस की इत्तिलाअ का खरीता ले
फिनेंट गवर्नर जनरल ज्यानरसल कालून
साहिब आगरे के का लिखा हुवा तारीख
१८ मई सन १८५७ का एक इश्तिहार के सा-
थ और एक खरीता साहिब अजंट हाडोती
का बूंदी के मुल्क में नाकों और घाटों के बं-
दोबस्त के वास्ते ये दोनों खरीते पहुंचे
इहां उन के लिखे बमूजिब बूंदी के मुल्क
के नाकों घाटों का बंदोबस्त किया आगरे के ख-
त के जवाब में लिखा गया कि सरकारी काम
में आप लिखें जिस जगह फौज लेकर मैं खुद
जा कर काम हूं उस के जवाब में खरीता इस
मजमून का पहुंचा कि आप के खरीते पढने
सें बहुत खुसी हुई आप अहद नामे पर काय-
म हैं आप एजंट गवर्नर और एजंट साहिब
के कहे माफिक अपने मुल्क का बंदोबस्त र-
खें जब नीमच की छावनी में बागी लोगों नें

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दंगा किया था उसके बंदोबस्त करनेंकूं बरटन
साहब एजंट हाडोतीने बूंदी कोटा और काला
वाड की फौज चाही तो उनके चाहने के माफि
क फौज और खास सरदार नज्दीकी साहब एजं
ट के साथ भेजे बूंदीकी फौजने साहिब एजंट
और करनैल अलियट साहब नीमच की छाव
णी के अफसर इन की मरजी माफिक फरमां
बरदारी और तन्दिही करी इस मुकदमेंमें ए
जंट गावरनर जनरल एजंट हाडोती कमान अ
फसर छावनी नीमच इन के कई खरीत्ते और
वकील के नाम पर्चे आये इन सब का मज
मून मिला के लिखा जाता है साहब एजंट के
साथ बूंदी कोटा और कालावाड की फौज थी
जिसमें सरकार बूंदी की फौजने सरकार अंग
रेजी के काम में बहुत जांफिसानी और तंदि
ही की सो यह लायक तारीफ और नेकनामी
के है उससे छावनी का बंदोबस्त अच्छी तरह
रहा और कोटे की फौज ने वक्त पर इन कार
किया और सूरत दिखलाई बल्कि बलवाकर

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाचाहा उस वक्त मैं फौज बूंदी ने हुक्म माफि
क काम दिया और किसी बात का उजर न कि
या सो यह बात आपको हो ली खैर ख्वाही और खैर
सगाली की आईने की तरह जाहिर है सो पत्थ
र की लकीर के माफिक साहिब लोगों के दि
ल पर नक्श कीगई है सो यह सलूक कभी
भूलना नहीं होगा परमेश्वर इसका फल देवे
गा अगर आप के दिल में यह शुबहा गुजरा
होकि साहिब एजंट ने कोटे वालों को तोपही
और हम कों नहीं सो इस का खयाल हरगिज
दिल में न लावैं कि तोप देने का सबब सिर्फ
खातरदारी का है कि ऐसा न होय कि ये कुछ
दंगा करैं और हम कूं अपनी आंख दिखलावैं फेर
साहिब एजंट और नीमच के साहिब के हुक्म
सें फौज वापिस बूंदी आगई और नाके घाटों
के बंदोबस्त पर तई नात की गई जोकि माजी
साहिब श्रीजोधपुरीजी के पहलों सें बी मारी
चली आती थी सो कार्तिक के दिनों में जियादा
बध कर कार्तिक कृस्न ११ के दिन परलोक होग

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या सो श्रीहुजूर तो लोकशास्त्ररीति सैं क्रिया
कर्म मैं लगे रहे उन दिनों मैं यह खबर मालू
म हुई कि कोटे की फौज ने बरटन साहिब दो
नों बेटों के साथ बंगले मैं कतल कर दिये य
ह सुन कर फिकर किया और फर्माया कि इ
स बात का पहलां हाल मालूम होता तो मैं
सुन तेही आप जाकर साहिब कूं यहां ले आ
ता यह वक्त सरकार के साथ दोस्ती है उस मैं
जिलह लगाणे का था मगर अब कुछ इलाज
नहीं रहा इस तरह की फिकर की बातें होती
रहीं फेर उन दिनों मैं करणे लायक काम क
था सुनना वगैरे करते रहे फेर कोई दिनों मैं
बागियों की खबर कहीं कहीं की आती रही
संवत् १९१५ के आषाढ के दिनों मैं गेणेली
की तर्फ सैं जो बूंदी के इलाके मैं है बागियों
की फौज आई इहां नाकों घाटों की और श
हर कोट और किले की समाल होती रही थी
उस मैं आषाढ शुक्ल ८ के दिन शहर कोट की
समाल पर श्रीहजूर का पधारणा हुवा था सो

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शहर कोट की चौकियोंकूं और जहां जहां तो
पें थीं सब जगाहकों सभाल कर किले पधार
नाहुवा इतने में खबर मालूम हुई कि बागि
यों की फोज कितनी कतो शहर के पास सरा
के नजीक आपहुंची और पीछे सें लाम ल
गरही हैं इस खबर पर यह हुकम हुवा कि
शहर कोट दरवाजों की सम्हाल परहैं सबहो
शियार रहे और अगर फोज बागियों की को
टकी तर्फ बढे तो बेशक उस सें लडाई करें अ
गर उहां ठहरी तो किले सें तोपें चलाई जावें
गी इस में जो हटगये तो ठीक है नहीं तो बाहर
निकल के लडने का हुक्म होवे तैसें करें मैंने
तो सरकार अंगरेजी सें दोस्ती भजबूत रखी
है जैसें ये हटेंगे तैसें हटाये जायेंगे इस तरह
हुक्म फरमाकर कमर बांधकर किले के हनुमा
न बुर्ज नाम बुर्ज पर पधार कर तोपों कों सम्हा
ल कर तोपों के चलाने का हुक्म फरमाया जब
तोपों का चलना शुरू हुवा तो बागियों की फौ
ज हट कर चली गई रस्ते में बूंदी के इलाके में

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहीं कहीं नुकसान करतीगई आखिर सर
कार अंगरेजने बागियों कूं खूब सजादी और
जैसा उनने कियाथा वैसापाया जोकि य॰
ह मुल्क हिंदुस्तान सरकार अंगरेज की तर्फ
सें अंगरेजी कंपनी बहादुर के वास्ते अमान
तसौं परखाथा और सरकार कंपनी की मार्फ
तही सब रियासतों के साथ अहद पैमान हुवे
थे सो अबसें सरकार कंपनी सें यह हिंदुस्तान
लेकर खास बादशाही कब्जे में कर लियाथा॰
या इसकाइश्तहार मलिका मुअज्जमा की त
र्फसें जारी हुवा लिखाहुवा तारीख १ नवम्ब
र सन १८५८ का पौष शुक्ल ६ संवत १९१५
के दिन आयाजिसमें यह लिखाहै कि क्योंकि
कई तरह के भारी सबबों सें हमनें धर्म्म सम्ब
न्धी और राज्यसंबंधी प्रधानों और प्रजा के
मुखतारों की जो पाली मैंट में जमा हुए स॰
लाह और मंजूरी के साथ इरादा कियाहै कि
हिंदुस्तान का मुल्क का बंदोबस्त जो हमनें आ
जतक अनरेबल ईस्ट इन्डिया कंपनी को

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमानत सौंपरक्खा था अपने अधिकार
में लेवें इसलिये अबहम इख्तियार देते
हैं और प्रगट करते हैं कि ऊपर लिखी हुई
सलाह और मंजूरी के बमूजिब उक्त अधि-
कार अपने हाथ में लेलिया और इस इ-
ख्तियार की रूसे अपनी सब प्रजा को जो उस
मुल्क में है ताकीद फर्माते हैं कि हमारे और
हमारे वारिस और जानशीनों के साथ वफा
दारी और सच्ची ताबेदारी करे और जिस कि-
सी को हम अपने नाम और अपनी तरफ से
अपने उस मुल्क के बंदोबस्त के लिये वक्त ब
वक्त आगे मुक़र्रर करना मुनासिब समझें
उस का हुक्म मानलीरहे और जो कि फर्जंद
अर्जमन्द और मोतबर सलाहकार चार्लस
जान वैकौंट केनिंग साहिब बहादुर की वफा
दारी लियाक़त और समझ पर हम को खास
कर के पूरा भरोसा और दिलजमई हासिल है
इसलिये उक्त वैकौंट केनिंग साहिब बहादु-
र को हमारे उस मुल्क का बंदोबस्त हमारे नाम

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से और उमूमन् सब काम हमारी और और
हमारे नाम से करने के लिये हमारे उन सब
हुक्म और क़ानूनों के बमूजिब जो हमारे कि
सी बड़े वज़ीर की मारिफत उस के पास वक्त ब
वक्त पहुँचे हमने उस मुल्क का अपना पह
ला वैसराय अर्थात् काइम मुकाम और गव
र्नर जनरल मुक़र्रर फर्माया और जो सब लो
गकि अब किसी उहदे पर क्या मुल्की और
क्या फौजी सरकार आनरेबल ईस्ट इन्डिया
कम्पनी की नौकरी में दाखिल हैं इस इख्ति
हार की रूसे हम उन सब को अपने उहदों प
र बहाल और क़ायम रखते हैं लेकिन वह
सब लोग हमारी आयन्दः मर्ज़ी और उन स
ब आईन और क़ानूनों के ताबेर हैंगे जो इ
स के बाद जारी किये जावैं और हिंदुस्तान के
रईस और सर्दारों को हम इत्तिला देते हैं कि
जो क़ौल करार और अहदनामे आनरेबल
ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने उन के साथ किये हैं
या उस की इजाज़त सें किये गये हैं हम उन

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब को क़बूल और सब मंज़ूर फ़र्माते हैं
और बहुत इहतियात से बहाल और बर्क़रा
र रक्खेंगे और उमेद है कि उन सब रईस और
सर्दारों की ओर सें भी ऐसाही लिहाज रहेगा
जो सब मुल्क कि अब हमारे क़ब्ज़े में है हम
उन्हें बढाना नहीं चाहते और जबकि हम
ऐसा नहोने देवेंगे कि दूसरे लोग हमारे मु॰
ल्क या अधिकारों पर निःशंक हाथ बढावें तो
हमभी दूसरों के मुल्क या अधिकारों पर हाथ
बढाये जाने की इजाज़त नदेवेंगे हमहिंदुस्ता
न के रईस और सर्दारों के अधिकार और इज्जे
ओर उन की प्रतिष्ठा ऐसीही समझेंगे जैसी अ॰
पनी समझते हैं और हमारी इच्छा है कि वेस॰
ब और हमारी अपनी प्रजाभी उस बढती और
चालचलन की दुरुस्ती को हांसिल करें कि जो
केवल मुल्क में सुलह और अच्छा बंदोबस्त
रहने सें होसक्ती है जो काम कि हम को अप॰
नी और सब प्रजा के वास्ते करने उचित और
कर्त्तव्य हैं वही हिंदुस्तान वालों के लिये भी

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम अपने ऊपर बाजिब समझेंगे और सब
शक्तिमान परमेश्वर की कृपा सें उन सब का-
मों को वफादारी के साथ सच्चे दिल सें करते र
हेंगे यद्यपि हम को ईसाई मत के सच्चे होने
का दृढ़ निश्चय है और उस मत से जो तसल्ली
कि हासिल होती है उस को हम शुकर गुज़ा-
री के साथ स्वीकार करते हैं तथापि न अप-
ना हम इस बात में अधिकार समझते हैं
और न हम को इस बात की इच्छा है कि जब
दस्ती अपनी प्रजा को भी उस का निश्चय दि-
लावैं यह हमारा बादशाही हुक्म और म-
ज़ी है कि न किसी की उस के मत के कारन
पच्छ की जावे और न किसी को उस के कार
न तकलीफ दी जावे वरन सब लोग बराबर
एक ही तौर पर विना पक्षपात कानून के
बमूजिब रक्षा पावैं और जो लोग कि हमा
रे तहत में इख्तियार रखते हैं हम उन को ब-
डी ताकीद सें हुक्म देते हैं कि वे हमारी कि
सी प्रजा के मत के निश्चय और पूजा में क-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भी कुछ दस्तन्दाजी न करें नहीं तो उन पर हमा-
रा अत्यंत कोप होगा और यह भी हमारा हुक्म
है कि जहाँ तक बन पड़े हमारी प्रजा को चाहे
जिस जात और चाहे जिस मत की क्यों न हो उन
की विद्या योग्यता और दियानतदारी के बमू-
जिब जिन उहदों का काम कि वे हमारी नोकरी
में अन्जाम देसकें उन को बे रोक टोक और
बिना पक्षपात के दिये जावें हिंदुस्तान के लो-
ग धरती के साथ जो उन के अधिकार में च-
ली आई है बड़ी मुहब्बत रखते हैं यह बात ह-
म को बखूबी मालूम है और हम को इस बा-
त का बड़ा लिहाज है और हम को मंजूर है
कि वाजिबी मुताल बे सर्कारी अदा करने पर
उन के उस धरती के सारे अधिकारों की रक्षा
करें और हम हुक्म देते हैं कि क़ानून बनाने
और जारी करने में हिंदुस्तान के पुराने अधि-
कार और दस्तूर और रीत रसमों का उमूमन
ठीक लिहाज रक्खा जावे जो आफतें और
खराबियाँ कि हिन्दुस्तान पर उन फसादी लोगों

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के कर्त्तव्यसें पडी हैं जिन्हों नें झूठी २ अफवाहों
सें अपने देशवालों को बहकाकर उनसें खु-
ले बन्दों बलवा करवादिया हम को उन का
बडा अफसोस है हमारी शक्ति तोरणभूमि में
उस बल के दबाने सें प्रगट होगई अब हम
उन लोगों के अपराध क्षमा करके जो इस दब
सें बहकावट में आगये लेकिन फिर ताबे-
दारी की राह पर चलना चाहते हैं अपनी द-
या प्रगट करते हैं इस विचार सें कि अधिक
खूनरेज़ी न होवें और हमारे हिंदुस्तान के
देशों में कटपट अमन चैन होजावे। हमारे
वैसराय और गवर्नर जेनरल बहादुर ने ए-
क इलाक़े में जिन सब लोगों ने कि इस दुख
रूप बलवे में हमारी सरकार के विरुद्ध अपरा-
ध किये हैं बहुतों को उन में सें कई एक शर्तों
पर अपराध क्षमा होने की आसा दी है और
जिन के अपराध कि क्षमा होने की पहुंच
सें बाहर हैं उन्हें जो सजा दी जायगी वह भी
ज़ाहिर करदी है हम अपने वैसराय और गव-

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नरजेनरल का यह काम मंज़ूर और क़बूल
करते हैं और उसके सिवाय नीचे और भी हु
क्म जाहिर फर्माते हैं सिवाय उन लोगों के
जिन के वास्ते साबित हुआ है या अब साबि
त हो कि उन्हों ने आपस कार अंगरेज़ की प्र
जा के क़तल में शराक़त की बाक़ी सारे अप
राधियों पर हमारी दया होगी क्योंकि जिन्होंने
आपस कार अंगरेज़ की प्रजा के क़तल में
शराक़त की उन पर दया करना इन्साफ़ की रू
से मना है जिन लोगों ने क़त्ल करने वालों
को जान बूझ कर पनाह दी या बलवाइयों के
सर्दार और उन के बहकाने वाले बने उन
के केवल जीवदान का वादा हो सक्ता है ले
किन ऐसे आदमियों को वाजिब सज़ा देने में
उन सब बातों का जिन के सबब से बहक क
र अपनी ताबेदारी से फिर गये पूरा लिहाज
किया जायगा और उन लोगों के वास्ते जो
बिना सोचे बिचारे फिसादियों की झूठी बातों
को मान कर गुनहगार बने बड़ी रिआयत

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कीजावेगी बाक़ी और सभोंसें जो सर्कार
के मुक़ाबले में हथियार लिये हुये हैं इस
इख़्तिहार में हम वादा करते हैं कि जब वे
अपने घरों को लौटजावें और सुलह के का-
मों में हाथ लगावें उन के बिलकुल क़ुसूर
हमारी निसबत और हमारी सल्तनत और
हमारी मर्तबे की निसबत बेशर्त माफ़ और
दर गुज़र और फ़रामोश कर दियेजावेंगे और
हमारी यह बादशाही मर्ज़ी है कि ये रहम और
माफ़ करने की शर्तें उन लोगों के वास्ते हैं
जो पहली तारीख़ जनवरी सन १८५९ ई॰ से
पहले इनकी तामील करें हमारी यह जी से
अभिलाषा है कि जब परमेश्वर की कृपा से हिं-
दुस्तान में फिर अमन चैन होजावे तो वहां सु-
लह के उद्यमों को उन्नति देवें और प्रजा के
सुख की चीजें बनावें और ऐसा बंदोबस्त करें
कि वहां की सारी हमारी प्रजा को लाभ हो उन
की वृद्धि में हमारी शक्ति है उन की संतुष्टता से
हमारी रक्षा है और उन की शुकर गुज़ारी यही

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम को बडी प्राप्ति है सर्वशक्तिमान परमेश्वर
हम को और जो लोग कि हमारे तहत में इ-
ख्तियार रखते हैं सब को ऐसी शक्ति देवे जि-
स से हमारी यह अभिलाषा हमारी प्रजा की
भलाई के लिये भली भाँति परिपूर्ण हो यह इ-
ख्तिहार सारे हिंदुस्तान में जारी हुवा और अम-
नचैन जम गया उन्हीं दिनों में बूंदी के मुल्क
में रहणे वाले मीणों ने बडी लूट मार मचादी
थी उस वक्त इनों ने मीणों कूं जेर कर के मु-
ल्क में चैन किया बलवंतसिंहजी के बेटे
भोमसिंहजी अपणे पिता के चलणपर च-
लने लगे कितनी क बातें उन्होंने ऐसी क-
री कि जिस सें सरकार बूंदी के बंदोबस्त में ख-
लल पड़े और तुहमत आवे जो कोई सरकार
का हरामखोर होता उस कूं पनाह देणा शुरु
किया जब बूंदी की तर्फ सें भले आदमी भेज
कर समझाये तो कुछ भी ध्यान में नहीं लाये
सरकार ने बहुत गम खाया परंतु जब सरका-
र के कुसूरवार रेवाड के मीणे लोगों कूं गोठड़े

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं पनाहदी तो सरकार ने उन मीणों कूं पक-
डाहेणे वास्ते हुक्म भेजा तो सामना करणे कूं
कमर बांधी जब भोमसिंहजी ने लडाई शुरू
करी तब फौजने भी ठीक दीखा सो किया आ-
खिर भोमसिंहजी भाग गये तो उन की जागी-
र ज़ब्त करी गई इनों ने संबत १९१९ मैं गंगाजी
की यात्रा करी और संबत १८८८ मैं अजमेर
मैं गवर्नर जनरल साहिब बहादुर उलहोसी-
के साथ संबत १८९९ मैं प्रयाग मैं और संबत
१९०० मैं आगरे मैं गवर्नर जनरल साहिब ब-
हादुर अलनरा के साथ और संबत १९१९ मैं
आगरे मैं फाल्गुन मैं गवर्नर जनरल साहिब
बहादुर यलजन के साथ और संबत १९२७
मैं अजमेर मैं गवर्नर जनरल साहिब बहादु-
र मेवो के साथ मुलाक़ात की और संबत १९२२
के साल मैं फिर काशीजी की यात्रा करी इनों ने
आप के राज के वक्त मैं बहुत से अच्छे अच्छे
काम किये उन मैं सें कोई कोई नीचे लिखेजा-
ते हैं पहले वक्त मैं आसोज और चैत्र के नव

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रात्रों मैं देवी के पूजन के वक्त बहुत से भैंसे
और बकरे बलिदान के नाम सैं मारे जाते थे
सो इनों ने सिवाय एक दो जगह के सब मौकू
फ कर दिये इन के बालक पणे मैं जो उदक ज
मीं किसी कारण सैं जब्ती मैं आगई थी सो
पट्टे परवानों की सनदों माफिक बहाल कर
बख्शी और बहुत से बेवारिस गरीब लोगों
की पालना का बंदोबस्त किया और बडे बडे
इल्मदार पंडितों कूं रख कर कितने कंथ ब
णवाये और गोल विद्या के अच्छे अच्छे गो
लयंत्र बणवाये इन महाराव राजा रामसिंह
जी ने चौगान दर्वाजे के बाहर दूसरा दरवाजा
बणवाया १ और हजारी दरवाजे के बाहर ति
वारी २ और हजारी दरवाजे के भीतर इक हरा
३ और उसके नज़ीक तिबारी ४ और मोती कु
वे के पास की तिवारी जिसमैं विस्नु स्वामी रह
ते हैं ५ और न्याय की कचहरी ६ और मुल्क
की कचहरी ७ और बडा तबेला ८ और छो
टा तबेला जिसकूं खास पायगा कहते हैं ९

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और छत्रमहल मैं फुहारे १० हौज ११ और तिवारी १२ दूदाजी के महल सैं किले के दरवाजे तक फर्स की सडक १३ मंगलगाज दर्वाजे के बाहर दरवाजा १४ और तिवारी १५ किले के भीतर बंगला १६ और चाउंड दरवाजे के बाहर तिवारी १७ और चामुंडाजी का मंदिर १८ और शिकार बुर्ज १९ पुष्यसागर के पास बाग मैं महल २० और कुंड २१ ये बणवाये और कई पुराणे मकानों की मरम्मत करवाई ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराज हाडु कुलतिलक महाराव राजा श्रीरामसिंह बुन्दीश्वराश्रित श्रीसूर्य्यमल्लकविनिर्मित वंशभास्करसारांशभूतो गङ्गासहायनिर्मितो वंशप्रकाशनामाग्रन्थः समाप्तः ।लिपिकृतं नागरब्राह्मण मुरलीधर रहनेवाला सेखावाटी मैं क़सबा कोटपूतली का ज़िल अ जयपुर परगनह खेतडी मिती माघ शुक्ला २ संवत १९३४ ॥ शुभं भूयात ॥

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वंश प्रकाश का शुद्धाऽशुद्धपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	वयान	बयान	१५	१२	हरियूर्णाजी	हरिपूर्णाजी
२	१७	तयार	तय्यार	१६	८	तयारी	तय्यारी
३	९	आबू	आबू	१७	३	देबीजी	देवीजी
३	१०	हुये	हुवे	१७	६	वेगी	गी
३	१६	बाँहं	बाँह	१७	१६	हुये	हुवे
४	१	चाहुबाणाजी	चाहुवाणाजी	१७	१८	मुकर्रर	मुकर्रिर
४	४	यामदग्न्य	जामदग्न्य	१८	१५	पक्का	पक्का
४	९	जिह्व	जिह्व	१९	१३	चुदुलजी	चदुलजी
४	१४	जव	जब	२०	१८	उनव	उनके
४	१८	आ	औ	२०	१९	शत्रुजितजी	शत्रुजित्जी
५	१२	ऋषि	ऋषि	२१	३	दूनके	उनके
७	२	जयंतजीभी	जयन्तजीश्रभी	२३	१	मुहुकर्म्माजी	मुहुःकर्म्माजी
८	१०	मारडाला	मारडाले	२४	१८	हुये	हुवे
९	१८	भटवल	भटदल	२५	३	गलेशजी	बालेशजी
१२	५	मैं	में	२५	४	बंगदेवजी	वंगदेवजी
१३	२	वलदेव	बलदेवजी	२५	५	पुष्ट	पुष्ट
१४	७	महाधरनुजी	महाधनुजी	२५	१८	मुक्कलार	मुक्कलार
१५	१	हुई	हुवा	२६	१०	अभूवाज	अभ्रवाज

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	१६	तुलकी	तुलसी	४०	४	निगहवानी	निगहबानी
२९	१०	सुवाहुजी	सुबाहुजी	४०	१७	अरिब्रयार	दरिब्रयार
३०	५	१७३।१७३	१७४।१७४	४१	८	जव	जब
३०	६	१७३	१७४	४१	११	वाकी	बाकी
३१	८	योशूरजी	योगशूरजी	४३	१	शाहाबुद्दीन	शाहाबुद्दीन
३२	१०	बंधगया	बधगया	४५	१८	जीको	जी
३४	२	बहुतसेरोका	बहुतसेरोके	४८	१	सोयोंगा	सोपूँगा
३४	९	काटलिया	काटे	४८	१६	सरणा	पूरणा
३४	११	तालाव	तालाब	५०	१	अवरदेवजी	अबरदेवजी
३४	१७	वनवाया	बनवाया	५०	२।४	गोरु	गोष्ठ
३४	१७	अन्नल	अनल	५०	८	मामाके	मामाजीके
३५	९	बर्वो	वर्ष	५२	३	१४८१	४८१
३६	१३	महाराजकुमा	महाराजकुमा	५३	१४	वाकी	बाकी
		रोंको	र	५४	४	वना	बना
३६	१६	मूंछ	मूछ	५५	१	दामोर	दामोदर
३७	३	तयार	तय्यार	५६	८	१७३	१७२
३७	८	वा	या	५७	१	१७२	१७३
३७	१५	तयार	तय्यार	५७	३	एही	येही
३७	१९	तयारी	तय्यारी	५७	१८	१७७	१७६
३८	१७	सीने	मीने	५८	४	बेयूं	बेचूं

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	६	कूल्हणजी	कोल्हणजी	६५	१३	१८३	१८२
५८	६	बीऊ	बीऊँ	६६	४	कोठ्या	कोठ्या
५८	१५	छ६	छः६	६६	१४	कोटए	कोटिये
५८	१५	बार	वार	६७	१५	चीहिये	चाहिये
५८	१६	चींवार	बींवार	६७	६	बक्त	वक्त
५९	१	में	मैं	६८	११	वाकी	बाकी
५९	१६	के सर	केसर	७०	५	सीगोली	सींगोली
५९	१८	जी	जी	७०	७	दून्ने	दूनूने
६१	३	बंबाबदेमैं	बंबावदेमैं	७०	१९	खीची	खींची
६१	७	घेर	घर	७१	१४	बिऊ	बीऊँ
६१	१६	कोभी	भी	७२	५	पधारया	पधारे
६१	१२	मन सूबे	मनसूबे	७२	१२	काके	काका
६१	१४	बंबाबदे	बंबावदे	७२	१५	बेटा	बेटे
६३	३	बंबा बदे	बंबावदे	७२	१८	देवेंगे	देंगे
६३	११	१८३	१८२	७३	३।७	वरसिंहजी	बरसिंहजी
६३	१२	१९१	१८१	७३	५	कसबा	कस्बा
६३	१७	हो	हैं	७३	८	जावडु	जावदु
६४	२	बग्घजी	बग्घजी	७३	१५	वांध	बांध
६४	१३	१८२।६	१८२।७	७४	३	पावा	पाग
६५	१०	नायालजी	नायाजी	७४	१९	कवि	कवि

CC-0. In Public Domain Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७४	८	पहरे	पहने	८३	१६	ल्याकर	लाकर
७४	१३	मडोवर	मंडोवर	८३	१९	सचार्द	मचार्द
७५	१	बर्ष	वर्ष	८४	६	मुलमानो	मुसलमानो
७५	१०	जव	जब	८४	८	षीय	पीप
७५	१०	वडी	बडी	८५	४	जीको	जी
७५	१२	हाज़र	हाज़िर	८५	१६	लबान	लवान ५
७६	१०	तयार	तय्यार	८५	१६	बरूंधर	बरूंधण
७६	११	जमार्दके	जमार्दजी	८६	४	यह चार आ·	ये चार आद·
७७	३	तब	जब			दमी	मी
७७	४	आपके	अपने	८६	८	तो गजी	तोगजी
७७	१२	कवर	कंवर	८६	१६	आपके	अपने
७९	१	तयार	तय्यार	८६	१७	यार	य्यार
७९	८	दूनोने	दूनोंने	८७	३	तो गजी	तोगजी
७९	११	वडी	बडी	८८	१६	डांक	डाक
७९	१२	वहादुरी	बहादुरी	८९	३	तो गजी	तोगजी
८०	११	संवत	संवत्	८९	११	दहों	दहों हीं
८०	१३	पीछें	पीछे	८९	१३	आपकी	अपनी
८१	१	षेटे	वेटे	८९	१४	कूंच	कूच
८२	८	उन्ने	उसने	९१	६	वल्कि	बल्कि
८२	१५	वाहर	बाहर	९१	६	यह घोड़े	ये घोड़े

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९१	५	महरबानी	मिहरबानी	१००	१०	खटकड़के	खटकड़का
९१	१८	करै	करे	१०१	११	मरवन	मकवन
९२	१६	तलाब	तालाब	१०१	१५	मरवन	मकवन
९३	११	ठहरीकि	ठहरी	१०२	४	बारूद	बारूत
९३	१४	नोबंत	नोबत	१०३	१२	वार	बार
९४	१४	जब यह भोजन करने लगे	जबये भोजन करने लगे	१०३	१३	आपके	अपने
				१०३	१८	मारंतो	मारंतो
९४	१	मोका	मोका	१०४	५	सालीजीने	सालीजीके
९४	३	आपके	अपने	१०४	७	नछरावल	नौछावर
९४	११	बूंदी	बूंदी	१०६	१	पूर्णमल्लजीको	पूर्णमल्लको
९५	१५	हाजर	हाज़िर	१०६	४	होस	होश
९६	१३	रस्ते	रस्ते	१०६	१७	ऐसे	ऐसें
९६	१४	बणावार्द	बणावार्द	१०७	६	आपके	अपने
९६	१५	कबरें	कबरें	१०७	९	के सरखो	केसरखो
९६	१६	भीबनवा	बीबनवा	१०७	१६	मांड	मांडू
९८	१०	भागगये	भागगये	१०९	१८	सुरताणोतके	खुरताणोत
९८	१८	भावा	भाग	१०९	१९	हाड़ेकहलाये	कहलाये
९९	२	दीखेगी	दीखेगी	११०	११	आय	आप
९९	१५	रस्ते	रस्ते	१११	१६	वेतरफ	बेतरफ
९९	१६	तयार	तय्यार	११२	२३	वधरहा	बधरहा

CC-0. In Public Domain Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११५	११	तालाव	तालाब	१२४	१७	दरवरा	दरकवरा
११५	१३	बरवशे	बरख़्शे	१२४	१८	रखो	रकखो
११५	१७	हाजर	हाज़िर	१२४	१९	कोभेजे	भेजे
११६	७	टलगया	टलगये	१२५	४	शालोजी	शालजी
११६	१०	दी	दिया	१२६	५	मे	ने
११८	१८	नव्वाब	नव्वाब	१२६	६	दरवरा	दरकवरा
११९	५	भाँज	भोज	१२७	१०	द्वारकास	द्वारकादास
१२१	७	बनाया	बनायाजोअ	१२८	१२	है	हैं
			बहाडोंकाबा	१२८	१२	रस्ते	रस्ते
			ग़कहलाताहै	१२९	७	जर	जिर
१२१	८	देहांत	देहांत	१३०	७	पीछैं	पीछे
१२२	५	जिसने	जिनने	१३१	१२,१३,१६	महावत	महावत
१२२	१०	मुड	मुंड	१३२	१४	भी	भी
१२२	१९	रकवाथी	रकवीथी	१३३	५	अशाद	अशाँद
१२३	६	का	को	१३४	१८	पीछैं	पीछे
१२३	११	परगने	परगनों	१३५	१	वानी	बानी
१२३	१५	बाँ	वाँ	१३५	१०	जहानखां	जहाँखां
१२४	१	नवल खा	नवलखा	१३५	१६	जोवो	जोये
१२४	७	तालाव	तालाब	१३६	१	गूंगेर	गूगेर
१२४	३	बा	बाँ	१३६	५	बुंदुल	बुंदेल

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	७	वानी	बानी	१५२	१८	वान	बानी
१३६	११	पीछेगये	पीछागया	१५४	११	तयार	तैय्यार
१३७	५	वहादुरी	बहादुरी	१५४	१८	आपके	अपने
१३७	१६	वक्त	वक्त	१५४	१९	हुये	हुवे
१३८	१०	४	५	१५६	१	आपकी	अपनी
१४१	११	आपके	अपने	१५६	१३	तयार	तय्यार
१४१	१५	आपके	अपने	१५८	३	दिलावुर	दिलावर
१४१	१४	आपकी	अपनी	१५८	५	कर	कर
१४२	१७	आपकी	अपनी	१६०	१२	नुमारे	तुमारे
१४३	१५	आपकी	अपनी	१६१	२	चोधरी	चौधरी
१४५	८	ढूंढाया	ढुंढाया	१६१	२	जगदीस	जगदीश
१४५	१२	निकलै	निकले	१६१	३	सुभ	शुभ
१४६	२	नं	ने	१६१	१५	सालिमसिंह	सालिमसिंह
१४६	१८	नैं	ने			जी	जीने
१४७	६	ऐसे	ऐसैं	१६२	१	वुध	बुध
१४७	१२	बा	व	१६२	७	हुये	हुवे
१४८	३	दुरजनसिंहजी	दुरजनसिंह	१६२	१६	आपके	अपने
१५०	१	आपकी	अपनी	१६३	६	खातरी	खातिरदारी
१५०	१	नयार	तय्यार	१६३	७	आपके	अपने
१५१	९	भावत	भावत	१६३	८	कूं	कूं

CC-0. In Public Domain. Digitized by

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	९	वीच	वीच	१७३	९	ने	नै
१६२	२	आपके	अपने	१७३	९	जबाब	जवाब
१६६	१९	नव	तव	१७३	१०	सौंगंद	सोगंद
१६६	१९	स्रं	स्मे	१७३	१५	आपके	अपने
१६७	१८	आपका	अपना	१७४	६	हुलकर	हुल्कर
१६८	३	नव्वाव	नव्वाब	१७५	६	संक	सक
१६८	६	नव्वाब	नव्वाब	१७५	११	जिर	जिर
१६८	८	नव्वाव	नव्वाब	१७६	१	नै	ने
१६८	१२	कै	के	१७७	२	स्मै	स्लै
१६८	१७	दूसें	दूसें	१७७	९	राणाजीकै	राणाजीको
१६९	६	लोचे	लोदूवे	१७८	४	वुणी	सुणी
१६९	८।९	नेराजी	नाराज	१७८	१२	हुये	हुवे
१६९	९	आपके	अपने	१७९	४	हुये	हुवे
१६९	१५	खातर	खातिर	१७९	१९	समधी	समीधी
१७०	१।२	राणाजी	राणाजी	१८०	१५	आपके	अपने
१७०	९	सिंहजी	सिंहजी	१८१	१३	आपके	अपने
१७१	४।५	आप आपका	आपअपना	१८२	५	आपका	अपना
१७१	६	आपकी	अपनी	१८२	१२	जल्दी	जल्द
१७२	११	वहुत	बहुत	१८२	१६	खातर	खातिर
१७३	९	पडेगी	पडैगी	१८३	५।६	आपके	अपने

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८३	८	रा	ना	१९९	१४	वक्त	वक्त
१८४	१७	बरावाये	बरावाये	१९७	६	तयार	तय्यार
१८५	४	गुना	गुनाह	१९७	८	सोगंद	सोगंद
१८५	१०	आपके	अपने	१९८	५	किते	कित
१८५	१८	आपके	अपने	१९८	१४	आपके	अपने
१८६	१४	आपका	अपना	१९८	१५	जं	जे
१८७	१०	आपके	अपने	१९९	१	महाराजकुमा	महाराजकुमार
१८८	१२	रुखरात	रुखसत			रहुवे	हुवे औरखवा
१८९	२	जहल	जिहल				सजीके विनय
१९०	४	गोठरा	गोठड़ा				सिंहजी हुवे
१९०	९	आपके	अपने	१९९	१	इन्द्रसिंहजी	इन्द्रसिंहजी से
१९०	१६	सभ	सब	२०१	१६	पधराय	पधराये
१९१	१	दा	दो	२०२	५	वणार्द	बणार्द
१९२	१	बक्त	वक्त	२०३	५	डो	डो
१९२	११।१२	आपके	अपने	२०३	१७	बक्त	वक्त
१९२	१५	इसमें	इससे	२०४	७	आपके	अपने
१९३	२	आपके	अपने	२०४	९	नव्वाब	नव्वाब
१९३	८	अजितसिंहजी	अजितसिंह	२०५	११	तयारी	तैयारी
१९४	४	बक्त	वक्त	२०५	१४	मोकूफ	मोकूफ
१९५	६	तर्फमे	तर्फ	२०६	४	तयार	तय्यार

CC-0. In Public Domain

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०६	७	रकखा	रकखी	२१७	१८	मोकूफ	मौकूफ
२०६	१२	तयार	तैयार	२१८	७	हबेली	हवेली
२०७	३।६	वान	बान	२१८	१६	जमी	जमीन
२०७	३।६	नोंक	नेक	२२०	७	मैं मैं	में मैं
२०८	१६	तयार	तय्यार	२२०	१२	सहिब	साहब
२१०	१३	सहने	महीने	२२०	१५	तंदि	तन्दि
२११	७	तालाव	तालाब	२२०	१८	बक्त	बक्त
२११	१३	तालाव	तालाब	२२६	४	बक्तब	वक्तव
२१३	५	जुरूर	जरूर	२२६	१४	नावे	नाबे
२१३	१६	सुण	मुण	२२८	१३	वाजिबी	वाजिबी
२१३	७	बाले	वाले	२२८	१९	फसादी	फिसादी
२१३	१६	बक्त	वक्त	२३०	३	बलबा	बलवा
२१५	८	बक्त	वक्त	२३०	५	बलके	बलवेके
२१५	१२।१३	आप आपकी	अपनी अपनी	२३३	१४	पडे	पडे
२१५	१२	सामेग	सामने	२३४	१४	आवे	आवे
२१६	१	सार	मार	२३४	११	अलवरा	अलनवरा
२१६	७	हबेलियों	हवेलियों	२३४	१७	आपके	अपने
२१६	११	आपके	अपने	२३५	१३	वणावाया	वणावाया
२१७	१०	सैं	मैं				
२१७	१३	आपके	अपने				

इति

CC-0. In Public Domain.Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha